हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 96, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 26 सितम्बर, 2022 दिन सोमवार | गाजीपुर/वाराणसी

शहीद भगत सिंह के नाम से जाना जाएगा चंडीगढ़ एयरपोर्ट

'मन की बात' में प्रधानमंत्री मोदी ने दिया कई बातों पर भी जोर

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आज 'मन की बात' के 93वें एपिसोड को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने चंडीगढ़ हवाई अड्डे का नाम बदलने का ऐलान किया। पीएम मोदी ने कार्यक्रम के दौरान कहा कि 28 सितंबर को अमृत महोत्सव का विशेष दिन आ रहा है। इस दिन हम भारत मां के वीर सपूत भगत सिंह की जयंती मनाएंगे। हमने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए यह तय किया है कि चंडीगढ़ एयरपोर्ट का नाम अब शहीद भगत सिंह के नाम पर रखा जाएगा। इसकी लंबे समय से प्रतीक्षा थी।

पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के दौरान हाल ही में नामीबिया से देश में लाए गए चीतों का जिक्र किया। पीएम मोदी ने कहा कि 70 साल के बाद देश में चीतों की वापसी हुई है। पिछले दिनों इन चीतों ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है। चीतों के देश में लौटने से देश में खुशी का माहौल है। पीएम मोदी ने कहा कि देश के कोने-कोने से लोगों ने चीतों के लौटने पर खुशियां जताई हैं। सभी का सवाल है कि चीतों को देखने का अवसर कब मिलेगा। उन्होंने कहा कि चीतों के लिए एक टास्क फोर्स बनी है, जो इनकी निगरानी कर रही है। जैसे ही ये माहौल में घुल-मिल जाएंगे तो इन्हें देखने का मौका मिलेगा। प्रधानमंत्री ने मन की बात में My Gov ऐप पर चीतों का नाम सुझाने के लिए भी कहा है। इसके साथ ही पीएम मोदी ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को आज याद किया। पीएम मोदी ने कहा कि आज 25 सितंबर को देश के प्रखर मानवतावादी, चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्मदिन मनाया जाता है। उनके विचारों की खूबी यही रही है उन्होंने अपने जीवन में विश्व की बड़ी उथल-पुथल को देखा था। वे विचारधाराओं के संघर्षों के साक्षी बने। पीएम मोदी ने मन की बात कार्यक्रम के दौरान कहा कि हमारे त्योहारों के साथ देश का एक नया संकल्प भी जुड़ा है। यह संकल्प 'वोकल फॉर लोकल' का है। आने वाले 2 अक्टूबर को बापू की जयंती के मौके पर इस अभियान को और तेज करने का संकल्प लेना है। खादी, हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट इन सारे प्रोडक्ट के साथ लोकल सामान जरूर खरीदें। यह अभियान इसलिए भी खास है, क्योंकि आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान हम आत्मनिर्भर भारत का भी लक्ष्य लेकर चल रहे हैं, जो सही मायने में आजादी के दीवानों को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। आप से निवेदन है कि खादी, हैंडलूम, हैंडीक्राफ्ट के सारे प्रोडक्ट खरदीने में सारे रिकॉर्ड तोड़ दें।

पीएम मोदी ने आगे कहा कि पिछले महीने मैंने मोटे अनाज की बात कही थी और अगले साल अंतरराष्ट्रीय मिलेट साल मनाने की बात कही थी। इसको लेकर लोगों में उत्सुकता है। मुझे कई पत्र मिले जिसमें लोगों ने मिलेट को अपने भोजन का हिस्सा बनाया है। कुछ लोगों ने मिलेट से बनने वाली पारंपरिक व्यंजनों के बारे में बताया है। मुझे लगता है कि हम सबको मिलकर ई-बुक तैयार करनी चाहिए, जिसमें लोग मिलेट से बनने वाले व्यंजनों और अपने अनुभवों को सझा कर सकें। इससे 'अंतरराष्ट्रीय मिलेट साल' से पहले हमारे पास सार्वजनिक इनसाइक्लोपीडिया भी तैयार होगा। जिसे MYGOV पर भी प्रकाशित कर सकते हैं।

विदाई से पहले मानसून ने दिखाया रौद्र रूप, दिल्ली-हरियाणा-पंजाब में जोरदार बारिश

नई दिल्ली। विदाई से पहले मानसून ने अपना रौद्र रूप दिखाना शुरू कर दिया है। देश के कई हिस्सों में जोरदार बारिश का सिलसिला जारी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अगले 24 घंटों में राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली के कुछ हिस्सों में बरसात का अनुमान लगाया है। रविवार को पश्चिम बंगाल और सिक्किम के भी कुछ हिस्सों में छिटपुट से लेकर भारी बारिश हो सकती है। असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम और अरुणाचल सहित कई पूर्वोत्तर राज्यों में मंगलवार तक गरज के साथ बरसात और बिजली गिरने की आशंका है। मौसम विभाग ने बताया कि पूर्वोत्तर राजस्थान और उसके आसपास के इलाकों पर चक्रवाती सकुर्लेशन का प्रभाव पड़ रहा है। साथ ही दक्षिण हरियाणा में लो प्रेशर सिस्टम पाया गया है। विभाग ने पश्चिमी विक्षोभ की डिटेल्स को जोड़ते हुए कहा, दक्षिण हरियाणा में निम्न दबाव के क्षेत्र से एक ट्रफ रेखा और दक्षिण उत्तर प्रदेश में उत्तरी छत्तीसगढ़ तक एक ट्रफ रेखा चल रही है। ऐसे में इन इलाकों से आज मध्यम से भारी बारिश होने के आसार हैं।

अंतिम संस्कार नहीं करने पर अड़े स्वजन, श्रीनगर में भारी जनाक्रोश

श्रीनगर गढ़वाल। यमकेश्वर प्रखंड के अंतर्गत गंगा भोगपुर में स्थित रिसॉर्ट में कार्यरत रिसेप्शनिस्ट अंकिता भंडारी को आज रविवार को नम आंखों से विदाई दी जानी है। लेकिन उसके स्वजनों ने अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया है। अंकिता हत्याकांड को लेकर लोगों में गम व गुस्सा बरकरार है। श्रीनगर में अंकिता की पोस्टमार्टम रिपोर्ट सार्वजनिक करने की मांग को लेकर लोगों ने बदरीनाथ हाईवे जाम किया। अंकिता के स्वजन ने भी पोस्टमार्टम रिपोर्ट मिलने के बाद ही अंतिम संस्कार करने की बात कही है। मोर्चरी के बाहर लोगों ने हंगामा किया। पुलिस प्रशासन ने अंकिता के पिता वीरेन्द्र सिंह भंडारी से बात की, लेकिन उनकी वार्ता विफल रही। वहीं अंकिता के पिता ने लोगों से अपील की वह प्रदर्शन के दौरान सड़कें जाम न करें।

इस दौरान उन्होंने भीड़ से पूछा कि क्या किया जाए तो लोगों ने कहा कि मांगे पूरी होने तक प्रदर्शन जारी रहेगा। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने चार मांगे रखीं। उन्होंने कहा कि अंकिता की फाइनल पोस्टमार्टम रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए। आरोपितों को फांसी दी जाए। अंकिता के परिवार को एक करोड़ रुपये का मुआवजा दिया जाए और परिवार के एक सदस्य को नौकरी दी जाए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि अंकिता के पिता ने सभी से अपील की है। वह संस्कार करना चाहते हैं। सभी कार्रवाई तय समय से हो रही हैं। कतई कोताही नहीं बरती जाएगी। सभी पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। एसआइटी ने अपना काम शुरू कर दिया है। आरोपित कोई भी हो ऐसी घटना को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जल्दी से जल्दी कार्रवाई हो इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। फास्ट ट्रेक हो या आरोपित को सजा दिलाने की बात हो हम पूरी तरह संकल्पित हैं। जो भी सरकारी सहायता हमसे हो सकेगी सरकार करेगी। अंकिता के शव को अभी श्रीनगर मोर्चरी में रखा गया है। अंतिम संस्कार करवाने को लेकर उपजिलाधिकारी अजयबीर सिंह की स्वजन व प्रदर्शनकारियों से बातचीत जारी है।

दूसरी ओर अवैध व पंजीकरण के बिना चल रहे रिजार्ट को लेकर पूरे प्रदेश में जांच जारी है। वहीं श्रीनगर में भारी संख्या में लोग प्रदर्शन के लिए पहुंचे। इस दौरान अंकिता के शव की पोस्टमार्टम रिपोर्ट सार्वजनिक करने और हत्यारों को फांसी की सजा देने की मांग को लेकर आक्रोशित जनता ने नेशनल हाईवे पर जाम लगा दिया। श्रीनगर में मेडिकल कॉलेज की मोर्चरी के पास आक्रोशित जनता ने नेशनल हाईवे पर जाम लगा दिया।

प्रदर्शन में विश्वविद्यालय के छात्रों के साथ ही व्यापारी और बुजुर्ग तथा बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हैं। श्रीनगर और श्रीकोटगंगानाली के बाजार भी बंद हैं। एसआइटी इंचार्ज पीआर देवी ने बताया है कि उन्होंने रिसॉर्ट के कर्मियों को पुलिस स्टेशन बुलाया है। हम हर एक के बयान दर्ज करेंगे। हम रिसॉर्ट के बैकग्राउंड का विश्लेषण कर रहे हैं। अंकिता के वाट्सएप चैट्स की भी जांच की जा रही है। रविवार को श्रीनगर में पैतृक घाट में अंकिता का अंतिम संस्कार किया जाना है।

बाढ़ प्रभावित 12 जिलों के किसानों को मिलेगा मुआवजा, शासन ने भेजी 876 करोड़ की धनराशि

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने सूखा प्रभावित 62 जिलों के साथ ही साथ बाढ़ प्रभावित जिलों के किसानों की भी सुध ली है। सीएम योगी आदित्यनाथ ने अंत्योदय के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर बाढ़ के प्रभावित 12 जिलों के किसानों के नुकसान की भरपाई के लिए सहायता उपलब्ध करा दी है। उत्तर प्रदेश शासन ने बाढ़ से प्रभावित 12 जिलों में किसानों को मुआवजा देने के लिए 876 करोड़ की धनराशि को जिलों में भेजा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि किसान हमारा अन्नदाता है। हमको उसकी काफी चिंता भी है। हमने बाढ़ प्रभावित 12 जनपदों में किसानों को मुआवजा देने के लिए 876 करोड़ रुपये भेजे हैं। इससे पहले भी 62 जनपदों में समय पर बारिश नहीं हुई। उन जनपदों में सरकार किसानों को दलहन, तिलहन और सब्जी के बीज मुफ्त में उपलब्ध करा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सिर्फ इतना ही नहीं आज तो हम कुछ किसानों को ट्रैक्टर भी उपलब्ध करा रहे हैं। जिससे कि यह कम समय में अधिक और उन्नत उपज का उत्पादन करने में सफल हों। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इस साल 62 जिलों में समय पर बारिश नहीं हुई। इन जिलों में किसानों को दलहन, तिलहन और सब्जियों के बीज उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं। पिछले दस दिनों में अत्यधिक बारिश के कारण भी किसानों को नुकसान हुआ है। 12 जिलों में बाढ़ से खेती का नुकसान हुआ। इन जिलों में मुआवजे के लिए 876 करोड़ रुपये की धनराशि जारी की गई है। सूखे का भी सर्वे हो रहा है। इसका भी हम मुआवजा देंगे उन्होंने किसानों से अपील की कि वह लोग जागरूक हों और सरकार की योजनाओं का लाभ लें। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि डबल इंजन की सरकार संकट में सदैव अन्नदाताओं के साथ खड़ी रही है। उन्होंने कहा कि इस वर्ष प्रदेश के कई जिलों में सूखे और भारी बारिश व बाढ़ की स्थिति से खेती को हुए नुकसान के प्रति सरकार संवेदनशील है और किसानों को राहत देने के लिए आवश्यक कदम उठा रही है।

कुपवाड़ा में घुसपैठ नाकामः सुरक्षाबलों ने दो आतंकियों को मार गिराया, एके-47 समेत भारी मात्रा में हथियार बरामद

कुपवाड़ा। कश्मीर संभाग के जिला कुपवाड़ा के माछिल सेक्टर में एलओसी के पास सुरक्षाबलों ने घुसपैठ की कोशिश को नाकाम किया है। बताया जा रहा है कि सुरक्षाबलों ने नियंत्रण रेखा के पास दो आतंकियों को ढेर किया है। मौके से दो एके 47 राइफल और अन्य हथियार भी बरामद किए गए हैं। घटना के बाद इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। फिलहाल मारे गए आतंकियों की शिनाख्त नहीं हो पाई है। इससे पहले शनिवार की रात दक्षिण कश्मीर के पुलवामा में आतंकियों ने दो बाहरी मजदूरों पर हमला कर उन्हें घायल कर दिया। फायरिंग में घायल दोनों की हालत स्थिर बताई जा रही है। पुलिस ने बताया कि आतंकियों के हमले में घायल मजदूरों की शिनाख्त बिहार के बेतिया जिले के शमशाद व फैजान कासरी के रूप में हुई है। दोनों काम कर रतनीपोरा लौट रहे थे तभी रास्ते में आतंकियों ने उन्हें रोककर गोली मार दी। खून से लथपथ होकर गिरने के बाद आतंकी भाग निकले। सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने दोनों घायलों को अस्पताल पहुंचाया जहां उनकी स्थिति स्थिर बताई जा रही है। वहीं, 11 अगस्त को कश्मीर संभाग के बांदीपोरा में आतंकियों ने

गैर-स्थानीय नागरिक पर फायरिंग की थी। इस हमले में नागरिक गोली लगने से घायल हो गया था, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया था लेकिन जहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया था। मृत मजदूर की पहचान बिहार निवासी मजदूर मोहम्मद अमरेज के तौर पर हुई थी।

पूर्व मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह ने कहा- अखिलेश ने साबित कर दिया कि आज भी अराजकता उनकी पहचान है

प्रयागराज। यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री व समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर पूर्व कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह ने तंज कसा है। अखिलेश ने पिछले दिनों 12 विधायकों के साथ राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से मुलाकात कर रामपुर के विधायक आजम खां के उत्पीड़न का मामला उठाया था। आरोप लगाया था कि भाजपा सरकार आजम खान और उनके परिवार को झूठे मुकदमें में फंसा रही है। प्रयागराज पहुंचने पर पूर्व मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह ने इस संदर्भ में कहा कि सपा मुखिया की पहचान आज भी अराजकता है। उन्हें आजम खान का उत्पीड़न दिख रहा है लेकिन जनता के ऊपर किए गए उत्पीड़न कभी नहीं दिखे।

पूर्व कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह ने कहा कि 1982 से लेकर अब तक जो भी तहरीर है, जैसे मौलाना जौहर अली यूनिवर्सिटी के लिए आलियागंज के किसानों की जमीनों पर अवैध कब्जे के आरोपों में उनके खिलाफ 28 मुकदमे दर्ज हैं। महिलाओं पर अभद्र टिप्पणी, भैंस चोरी करने का मुकदमा, पड़ोसी से रंगदारी मांगने का मुकदमा और शत्रु संपत्ति के मामले में दो मुकदमे आजम पर हैं। किताबों की चोरी, शेर की मूर्ति चुराने, 2700 खैर के पेड़ों की चोरी का भी मुकदमा है। बेटे अब्दुल्ला आजम के दो-दो जन्म प्रमाणपत्र के आरोपों में दो मुकदमे दर्ज हैं। अखिलेश यादव ने सदन में और सदन के बाहर राज्यपाल को ज्ञापन देकर साबित किया कि आज भी अराजकता उनकी पहचान है। वह उसी के साथ खड़े हैं।

दिव्यांग सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम : भाजपा पिछड़ा मोर्चा की ओर से दिव्यांग सहायक उपकरण वितरण कार्यक्रम का आयोजन प्रयागराज के सारस्वत पैलेस में किया गया। इसकी अध्यक्षता पिछड़ा वर्ग मोर्चा के महानगर अध्यक्ष मनोज कुमार कुशवाहा ने की। मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री तरुण चुग ने कहा, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोरोना काल में देश के नायक बनकर लोगों की सेवा के लिए कार्य किया।

राष्ट्र को सही दिशा के लिए सुशासन ही हमारा मिशन है : नितिन गड़करी

कानपुर देहात। कंचौसी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती और अकबरपुर लोकसभा क्षेत्र से सांसद देवेन्द्र सिंह भोले की मां स्वर्गीय कनकरानी की छठवीं पुण्य तिथि को लेकर आयोजित समारोह में केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी पहुंचे। जहां उनका भाजपाइयों ने स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने जनता का अभिवादन कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी के साथ तमाम पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद रहे है। संबोधन खत्म होने के बाद वह हेलीकाप्टर से कानपुर के लिए रवाना हो गए है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने संबोधन के दौरान कहा कि हमारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित है। हम दिन चार रहे न रहे तेरा वैभव अमर रहे मां। राष्ट्र को सही दिशा के लिए सुशासन ही हमारा मिशन है। दीनदयाल जी ने कहा था जो हमारे समाज के पिछड़े शोषित दलित हैं जिनके पास मकान, कपड़ा रोटी नही है उनको भगवान मान उनकी सेवा करे व उनको सुविधा दे।

एक इंटरव्यू में मुझसे पूछा कि जीवन मे सबसे बड़ा काम क्या था। तो मैंने कहा कि हम दीनदयाल जी के सामाजिक आर्थिक चिंतन को मानते हैं। इसके लिए काम करना चाहते हैं उपलब्धि है जो एक करोड़ लोग जो गरीब, रिक्शा वाले उनको मुक्ति देना ई रिक्शा लाया यही बड़ी उपलब्धि है। आज 90 लाख लोग इसे चलाते हैं यही खुशी है। 47 के बाद पूंजीवाद, समाजवाद व लाल झंडा लेकर सभी मजदूर एक हो विचार लेकर लोग चल रहे थे। चीन गया तो देखा कि केवल लाल झंडा है लेकिन चीन व रूस ने कम्युनिस्ट विचार धारा को छोड़ दिया एक समय कानपुर में कम्युनिस्ट पार्टी जीतती थी पर अब यह समाप्त हो गई। पूरे विश्व मे इस पर शोध हो रहा कि कौन सी विचारधारा है जो सभी का कल्याण कर सकती है तो मैं कहता हूं कि दीनदयाल जी की विचारधारा ही सबसे सही है।

इनेलो की सम्मान दिवस रैली में बिहार सीएम नीतीश कुमार बोले- तीसरा मोर्चा नहीं, महागठबंधन बनेगा

फतेहाबाद। फतेहाबाद के सिरसा रोड स्थित नई अतिरिक्त अनाजमंडी में पूर्व उपप्रधानमंत्री चौधरी देवीलाल की 109वीं जयंती पर रैली जारी है। मंच पर ओमप्रकाश चौटाला, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पहुंच चुके हैं। इनके साथ शरद पवार, सीताराम येचुरी, सुखबिर बादल, केसी त्यागी सहित कई दलों के नेता पहुंचे हैं। बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि महंगाई 2014 से पहले डायन थी, अब बीजेपी की भौजाई हो गई है। बिहार सीएम नीतीश कुमार ने कहा कि अब हम सबको एक साथ मिलकर चलना होगा। हमें व्यक्तिगत लाभ की बात को पीछे छोड़कर साथ चलना होगा। मैं तो पंजाब के बादल परिवार से भी यही कहूंगा कि आप भी साथ ही आ जाइए। नीतीश कुमार ने कहा मुझे चौधरी देवीलाल का परिवार बहुत मानता है। नीतीश कुमार ने समर्थकों से कहा कि आप एक बार हाथ उठाकर मेरी बात का समर्थन कर दीजिए कि सब एक साथ मिलकर चलेंगे। केसी त्यागी ने कहा कि जब-जब कोई क्रांति शुरू होती है तो उसमें सबसे पहला नाम हरियाणा या बिहार का होता है। यहां से भी एक नई शुरूआत होने जा रही है। चौधरी देवीलाल पर बोलते हुए उन्होंने कहा वे ऐसा नेता थे जो कभी किसी से नहीं डरे। दिल्ली सरकार को सीधी चुनौती दी थी। नीतीश कुमार व परिवार का चौधरी देवीलाल की सात पीढ़ियों से नाता है। यह रैली एक ऐतिहासिक राजनीतिक घटना का गवाह बन सकती है। तीसरा मोर्चा बनाए जाने की घोषणा

की जा सकती है। पूर्व उपप्रधानमंत्री देवीलाल जयंती पर देश के दिग्गज नेता उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ साथ देश में एक नए राजनीतिक विकल्प के रूप में एक नए फ्रंट का ऐलान कर सकते हैं। इसमें अधिकतर नेता पूर्व उपप्रधानमंत्री देवीलाल के साथी रहे हैं और अब ओमप्रकाश चौटाला के साथ घनिष्ठ संबंध रखे हुए हैं। सबसे पहले मंच पर अभय सिंह चौटाला पहुंचे। इसके बाद ओपी चौटाला के साथ दिग्गज नेता पहुंचे हैं। वहीं प्रदेश के पूर्व खेलमंत्री रामस्वरूप रामा ने भाजपा को छोड़ और रतिया से जजपा की प्रत्याशी रही मंजू बाजीगर ने इनेलो का दामन थाम लिया है। वहीं पूर्व मंत्री रामपाल माजरा ने भी भाजपा छोड़ इनेलो का दामन थाम लिया है। सम्मान दिवस रैली के लिए हिसार के जितेंद्र मलिक और उनकी टीम ने पंडाल तैयार किया है। उनके अनुसार इनेलो रैली के लिए बनाए गया पंडाल 630 फीट लंबा और 140 फीट चौड़ा होगा। इसके अलावा जितेंद्र मलिक की टीम के लगभग तीस लोग पिछले एक सप्ताह से रैली को लेकर टेंट और स्टेज की व्यवस्था बनाने में जुटे हुए हैं। नई अतिरिक्त अनाजमंडी के इस पंडाल की क्षमता लगभग तीस हजार के करीब है। इनेलो में इस पंडाल को पूरी तरह भरने की क्षमता है और अगर इस पंडाल के बाहर भी लोग जुटते दिखाई दिए तो माना जा रहा है कि 50 हजार के करीब लोग पहुंच सकते हैं। दस फीट ऊंचे लोहे के पिलर्स पर मंच तैयार किया है। मंच के पिलर्स को आपस में इस तरह फिट किया गया है कि ये मंच अब हिलेगा भी नहीं, चाहे इस पर क्षमता से दोगुणा लोग ही क्यों नहीं चढ़ जाएं।

भारतीय महिला को घोषित कर दिया बांग्लादेशी सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र व असम से मांगा जवाब

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने उस महिला की याचिका पर केंद्र और असम सरकार से जवाब मांगा है, जिसे विदेशी घोषित कर उसका नाम अंतिम राष्ट्रीय नागरिक पंजी ह्यएनआरसीह्य से बाहर कर दिया गया है, जबकि उस महिला का पूरा परिवार भारतीय है। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया है कि महिला के निर्वासन के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाए। न्यायमूर्ति डीवाई चंद्रचूड़ और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने गुवाहाटी हाईकोर्ट के जून 2019 के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका की सुनवाई पर सहमति जताई है। बोंगाई गांव स्थित विदेशी न्यायाधिकरण ने जून 2017 में एक आदेश जारी कर महिला को विदेशी घोषित कर दिया था, जिसके खिलाफ महिला ने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया था। उसे वहां से राहत नहीं मिली और उसकी याचिका खारिज कर दी गई थी। महिला पर आरोप है कि वह 25 मार्च 1971 के बाद अवैध रूप से बांग्लादेश से भारत आई थी। महिला की ओर से पेश अधिवक्ता पीयूष कांति रॉय ने शीर्ष अदालत को अवगत कराया कि याचिकाकर्ता के परिवार के अन्य सभी सदस्यों को एनआरसी में शामिल किया गया है। पीठ ने कहा ह्यनोटिस जारी किया जाएं जिसका जवाब तीन सप्ताह में देना होगा। इसके साथ ही न्यायालय ने मामले की सुनवाई 17 अक्टूबर तक के लिए स्थगित कर दी। शीर्ष अदालत ने शुक्रवार को पारित अपने आदेश में कहा मामले के सूचीबद्ध होने की अगली तारीख तक याचिकाकर्ता के निर्वासन के लिए कोई कदम नहीं उठाया जाएगा। याचिकाकर्ता ने दावा किया है कि वह जन्म से भारत की नागरिक है। याचिका में कहा गया है कि याचिकाकर्ता के माता, पिता, भाई बहन और पति सभी भारत के नागरिक हैं। याचिका में कहा गया है, हालांकि न्यायाधिकरण के साथ-साथ गौहाटी उच्च न्यायालय ने भी विभिन्न प्रदर्शित दस्तावेजों पर विचार किए बिना याचिकाकर्ता को विदेशी घोषित कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर अन्याय हुआ है।

संपादकीय

समन्वय और विश्वास बनाने की जरूरत

पिछले 8 वर्षों में मुस्लिमों को केंद्र बिंदु में रखकर हिन्दू संगठनों एवं गोदी मीडिया ने उनके खिलाफ कई ऐसे कार्यक्रम चलाए, जिससे मुस्लिम भयभीत हुए, लेकिन उन्होंने प्रतिरोध नहीं किया। मुस्लिमों को अब लगने लगा है कि डरे रहने से वह सुरक्षित नहीं रहेंगे। पिछले कई वर्षों से भाजपा और संघ के अनुवांशिक संगठनों ने मुस्लिमों के खिलाफ जिस तरह से नफरत का वातावरण फैलाया। हर स्तर पर उन्हें डराने और धमकाने का काम किया गया। राम मंदिर मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला मुस्लिमों ने स्वीकार कर लिया। इसे भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार ने इसे अपनी सबसे बड़ी जीत माना। उसके बाद से ही संघ के अनुवांशिक संगठन जिनमें विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल और उनसे जुड़े हुए संगठन हैं। उन्होंने मथुरा और काशी का विवाद उग्र कर दिया। ताजमहल में भी हिंदू मंदिर की बात कहकर मुसलमानों में भय उत्पन्न किया गया। सुप्रीम कोर्ट के आदेश को हिन्दू संगठनों ने नजर अंदाज करना शुरू कर दिया। उसने आग में घी डालने का काम किया है। ज्ञानवापी मस्जिद को लेकर विवाद चल ही रहा था। इसी बीच 15 राज्यों में जिसमें दक्षिण भारत के 5 राज्यों में छापामार कार्यवाही कर सैकड़ों पदाधिकारियों को टेरर फंडिंग के आरोप में गिरफ्तार कर लिया। इसकी बड़ी तीव्र प्रतिक्रिया मुस्लिम समाज में हुई है। एक तरह से ईडी ने जिस तरह की कार्रवाई की। उससे लोगों को 1975 के आपातकाल की याद आ गई। पीपुल्स फ्रंट ऑफ इंडिया पिछले कई वर्षो से काम कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों से इसे एक कट्टरपंथी मुस्लिम संगठन बताकर आतंकवाद फैलाने वाला संगठन एनआईए बता रहा है। ईडी इस संगठन को राडार पर लिए हुई थी। एक साथ डाले गए छापे और गिरफ्तारी ने मुस्लिमों को उग्र बना दिया है। पिछले वर्षों के भय से एक तरह से मुस्लिम बाहर निकल रहे हैं। वह अपने वर्चस्व एवं सुरक्षा की लड़ाई के लिए खुलकर मैदान में आ गए हैं। वर्तमान स्थिति को देखकर लगता है, कि एक बार हम फिर 1947-48 वाली स्थिति में पहुंच गए हैं। जब भारत का पार्टीशन हुआ था। उसके बाद हिंदू और मुस्लिमों के बीच जो भय बना था। वही भय एक बार फिर मुसलमानों में देखने को मिल रहा है। आर्थिक मंदी, बेरोजगारी और महंगाई के चलते इस तरह के विवाद देश को कमजोर करेंगे। भूख और सुरक्षा दो ऐसे विषय हैं, जिसको लेकर आदमी जीने और मरने की स्थिति में आकर खड़ा हो जाता है। पिछले 8 वर्षों में मुसलमानों के बीच जो भय अंदर ही अंदर बना था। लेकिन वह शांत था। राम मंदिर बन जाने के बाद और कश्मीर में धारा 370 खत्म हो जाने के बाद, भाजपा और संघ परिवार उन्हें शांति से रहने देगा। यह मुस्लिमों को लग रहा था। मुसलमानों का भय उनके अस्तित्व से जुड़ गया था। केरल की हिंसक घटनाएं मुस्लिमों के विरोध की शुरूआत है। सरकार और हिंदू संगठनों ने मुसलमानों को दबाने और उन्हें दोयम दर्जे के नागरिकों की तरह रखने की कोशिश को बंद नहीं किया, तो कानून व्यवस्था की स्थिति खराब ही होगी। इसके साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसका असर देखने को मिलेगा। जब केंद्र में भाजपा की सरकार है। सारा नियंत्रण उनके हाथों में है। यदि उसके बाद भी पीएफआई आतंकी घटनाएं भारत में कर पा रही थी। इसके लिए केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय और एनआईए की विफलता भी माना जाना चाहिए। वहीं ईडी की कार्यवाही को लेकर जिस तरह का अविश्वास पूरे देश में देखने को मिल रहा है। ऐसी स्थिति में मुस्लिमों का सड़क पर आना कोई आश्चर्य का विषय नहीं है। सरकार को बड़ी गंभीरता से वर्तमान स्थिति पर ध्यान देकर समन्वय और विश्वास बनाने की जरूरत है।

हुआ नहीं सुधार !

मिले सख्त सजा ।
कितना भी रसूख ।।
दरिंदगी जो हो रही ।
है पहुंचाता दुःख ।।
कष्टकारी घटनाएं ।
होतीं बारंबार ।।
फंस जाते परिवार ।
अक्सर अब मझधार ।।
चला बहुत अभियान ।
हुआ नहीं सुधार ।।
ये मामले हमको ।
कर रहे लाचार ।।
बढ़ रही है हिम्मत ।
है नदारद डर ।।
वो ही जाने जिस पर ।
बरपे ये कहर ।।

–कृष्णेन्द्र राय

आखिर कब भोजपुरी को राजभाषा का मिलेगा दर्जा

संवाददाता: अरविंद कुमार यादव

भारत विभिन्न वेषभूषा, संस्कृति, रहन-सहन और बोली -भाषा वाला देश है। देश के अलग अलग क्षेत्रों में बोली जानी वाली भाषाओं का अपना ही आत्मीय महत्त्व है। क्षेत्रीय भाषा के आधार पर बात-विचार-व्यवहार भी निर्धारित किया जाता है। भारत में बोली जाने वाली भाषाओं में जो मिठास है वह दुनिया में अन्यत्र कहीं भी नहीं है। भाषाएं भारतीय संस्कृति और सभ्यता का केंद्र बिंदु रहीं हैं। इन्हीं भाषाओं के बीच पूर्वोत्तर भारत में बोली जाने वाली एक समृद्ध भाषा भोजपुरी भी है जो भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपना एक अहम स्थान रखती है।मगर हर बार भोजपुरी भाषा का दरकिनार किया गया ।हैरानी की बात यह है कि देश के सबसे बड़े हिंदी भाषी राज्य उत्तर प्रदेश जहां भोजपुरी भाषा का भी बोलबाला है।? यहां के तीन मूल निवासी रविकिशन (गोरखपुर), दिनेश लाल (आजमगढ़) और मनोज तिवारी (दिल्ली) संसद में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं लेकिन भोजपुरी भाषा के मुद्दे पर एक शब्द भी बोलने को राजी नहीं हैं जबकि ये तीनों सांसद भोजपुरी भाषा की ही बदौलत आज देश की सर्वोच्च संस्था में शामिल हैं। भोजपुरी भाषा को समृद्धशाली बनाने की जिम्मेवारी सड़क से लेकर संसद उनकी जिम्मेदार बनती है। इसी भाषा की बदौलत भोजपुरी सितारे दुनिया भर में अपनी उपस्थिति दर्ज करते हुए ख्याति अर्जित की कर मान - सम्मान, यश - कीर्ति प्राप्त की है।भोजपुरी के अन्य सितारों को भी भोजपुरी भाषा को समृद्धशाली बनाने के लिए आगे आएं और इसे संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए आगे आकर अपनी आवाज बुलंद करें। संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने पर भोजपुरी भाषा लोकसेवा आयोग (यूपीएससी) सहित अन्य अन्य केंद्रीय परीक्षाओं परीक्षा देने का माध्यम बन जाएगी। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे भोजपुरी भाषा बाहुल्य राज्यों में यह भाषा शैक्षणिक माध्यम और सरकारी कामकाज की भाषा तथा लोकसभा और विधानसभा में प्रश्न पूछने या भाषण देने का माध्यम भी बन जाएगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि भोजपुरी भाषा के सहारे सफलता का परचम लहराने वाले हमारे सांसद, विधायक और देश के विभिन्न भाषा संघर्ष समिति के पदाधिकारी भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने के लिए आगे बढ़कर अपनी आवाज बुलंद करेंगे और सरकार के सामने अपना पक्ष रखते हुए भोजपुरी को उसका सम्मान दिलाने में अपना योगदान देंगे । वही डोभी निवासी आर सी यादव प्रसिद्ध कवि के साथ दिल्ली में शिक्षक पद पर कार्यरत है उनका कहना है कि विदेश मंत्रालय के 2018 की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में भोजपुरी बोलने वालों की संख्या 28.50 लाख है जबकि ऑफिस ऑफ रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया के एक "ऐब्स्ट्रैक्ट ऑफ स्पीकर्स स्ट्रैंथ ऑफ

लेंग्वेज एण्ड मदर टंग" के आंकड़े के अनुसार देश - विदेश में 33,099,497 लोगों ने अपनी मातृभाषा भोजपुरी बताया है। 26 नवंबर 1949 को संविधान की आठवीं अनुसूचि में हिंदी, तेलुगु, बंगाली, मराठी, तमिल, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, कश्मीरी, असमिया और संस्कृत समेत 14 भाषाओं को राजभाषा के रुप में शामिल किया गया था, बाद में नेपाली, सिंधी और अवधि को जोड़ा गया। भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करने के लिए सर्वप्रथम वर्ष 2009 में तत्कालीन सांसद योगी आदित्यनाथ ने लोकसभा में उठाया था और यह दावा किया था की नेपाली, सिंधी और अवधि भाषाओं की तरह भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने के लिए सभी आवश्यक योग्यताएं हैं । 28 अप्रैल 2016 को एक बार सांसद योगी आदित्यनाथ ने भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करने का मुद्दा लोकसभा में उठाया और आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि भोजपुरी दुनिया की सबसे बड़ी उप-भाषा (बोली) जिसे 16 करोड़ लोग भारत में सिर्फ उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, झारखंड और विश्व के 27 अन्य देशों में भी बोलते हैं। बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने वर्ष 2013 में कहा कि भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने पर भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाएगा लेकिन 9 वर्ष बाद भी ऐसा नहीं हुआ। पूर्व सीआरपीएफ जवान सुधीर सिंह जो अपनी संस्था शहीद संजय फाउंडेशन के तहत गरीब व असहाय लोगो की मदद कर रहे हैं उनका कहना है कि गृहमंत्रालय की दो समितियों पाहवा (1996) और सीताकांत मोहपात्रा (2003) के द्वारा भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिए मापदंड निर्धारित करने को कहा गया था जो कि अनिर्णायक रहा । इतने संघर्षों के बाद भी भोजपुरी को राजभाषा का दर्जा आज तक नहीं मिल पाया है। भोजपुरी भाषा को संविधान की आठवीं सूची में शामिल करने के लिए समय समय पर मांग होती रही है। संवैधानिक रूप में किसी भी भाषा को राजभाषा का दर्जा तभी मिल सकता है जब उसे संविधान की आठवीं सूची में शामिल किया गया हो। समाजसेवी अजीत सिंह ने कहा कि भोजपुरी 38 भाषाओं में से एक है, जिसे आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग संसद में और दूसरे मंचों पर लगातार उठती रही है।विडंबना देखिए की जो प्रदेश देश को स्व.जवाहर लाल नेहरु से लेकर मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को संसद में भेजकर देश का प्रधानमंत्री बनाया बाबजूद इसके भी भोजपुरी भाषा को आठवी सूची में शामिल न होना प्रदेश के लिए दुर्भाग्य की बात है हम सभी को एक होकर सड़क से लेकर संसद पर भोजपुरी के सम्मान के उतरना पड़ेगा।

नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे ईश्वर चंद्र विद्यासागर

एक गरीब परिवार में जन्मे ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने स्ट्रीट लाइट की रोशनी में कैसे अपनी पढ़ाई की और कैसे बंगाल पुनर्जारण के प्रमुख स्तंभ बन गए, यह लगभग हर किसी ने पाठ्य पुस्तकों में पढ़ा होगा लेकिन फिर भी अधिकांश व्यक्ति उनके बारे में ज्यादा नहीं जानते। 26 सितम्बर 1820 को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले में धार्मिक प्रवृत्ति के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में जन्मे ईश्वर चंद्र विद्यासागर का बचपन का नाम ईश्वर चंद्र बंदोपाध्याय था। महान समाज सुधारक, दार्शनिक, शिक्षाविद्, तथा स्वतंत्रता सेनानी ईश्वर चंद्र गांव के स्कूल से प्रारंभिक शिक्षा के पश्चात अपने पिता के साथ कोलकाता आ गए थे। वे बहुत मेधावी छात्र थे, जिसके चलते उन्हें कोलकाता में कई संस्थानों से छात्रवृत्तियां मिली। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान ही वे संस्कृत भाषा और दर्शन के विद्वान माने जाने लगे, इसीलिए उन्हें विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज ने विद्यासागर (विद्या का सागर) की उपाधि प्रदान की। इस तरह वे ईश्वर चंद्र बंदोपाध्याय से ईश्वर चंद्र विद्यासागर बन गए।

1839 में कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने दो वर्ष बाद फोर्ट विलियम कॉलेज में संस्कृत विभाग के प्रमुख के तौर पर कार्यभार संभाला। पांच वर्षों तक यहां अपनी सेवाएं देने के पश्चात् उन्होंने संस्कृत कॉलेज में सहायक सचिव के तौर पर जिम्मेदारी संभाली और शिक्षा पद्धति में सुधार लाने के लिए प्रयास शुरू कर दिए। कुछ मतभेदों के कारण उन्हें यह कॉलेज छोड़ने पर विवश होना पड़ा। 1849 में उन्होंने साहित्य के प्रोफेसर के रूप में इसी कॉलेज में पुनः वापसी की और कुछ ही समय बाद इसी कॉलेज के प्रिंसिपल बनने पर उन्होंने कॉलेज के दरवाजे सभी जातियों के बच्चों के लिए खोल दिए तथा संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। उनका मानना था कि अंग्रेजी और संस्कृत भाषा के ज्ञान का समन्वय करके ही भारतीय तथा पाश्चात्य परम्पराओं का श्रेष्ठ ज्ञान हासिल किया जा सकता है।

ईश्वर चंद्र नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनके अथक प्रयासों से ही कोलकाता सहित पश्चिम बंगाल में कई स्थानों पर बालिका विद्यालयों की स्थापना हुई। स्थानीय बांग्ला भाषा तथा लड़कियों की शिक्षा के लिए उन्होंने स्कूलों की एक श्रृंखला के साथ कलकत्ता में मेट्रोपोलिटन कॉलेज की स्थापना भी की। स्कूलों के खर्च के लिए वे विशेष रूप से स्कूली बच्चों के लिए बंगाली में लिखी गई किताबों की बिक्री से फंड जुटाते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वे एक बार अयोध्या के नवाब के पास गए, जो अपनी निर्दयता और कंजूसियत के लिए विख्यात था। जब उन्होंने विश्वविद्यालय के लिए नवाब से दान देने का आग्रह किया तो नवाब ने उनके थैले में अपना जूता डाल दिया। शांतचित्त विद्यासागर चुपचाप वहां से चले आए और अगले ही दिन नवाब के महल के सामने उसी जूते की नीलामी का कार्यक्रम आयोजित कर डाला। जूते की एक हजार रुपये में नीलामी हो गई। यह जानकर नवाब खुश हुआ और उसने विश्वविद्यालय के लिए एक हजार रुपये की राशि दान में दे दी।

बंगाली की कई वर्णमालाओं में संशोधन कर उसे सरल तथा आधुनिक बनाने में अमिट योगदान के कारण उन्हें आधुनिक बंगाली भाषा का जनक भी माना जाता है। 1848 में उन्होंने बांग्ला भाषा की अपनी प्रथम गद्य रचना वैताल पंचविंशति का प्रकाशन किया।

फार्मेसिस्टों ने बदलते ग्लोबल परिवेश में खुद को बदला- कैलाश सिंह

प्रखर केराकत जौनपुर। शिवमूरत फामेर्सी कॉलेज रघुपुर बेहड़ा में विश्व फामेर्सी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न स्पधाओं वाद विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर प्रस्तुतिकरण,निबंध प्रतियोगिता एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। इस दौरान उकृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को संस्था द्वारा नकदी और सील्ड देकर सम्मानित किया गया' कार्यक्रम में बच्चों को संबोधित करते हुए संस्था के चैयरमैन कैलाश सिंह ने कहा कि कोविड संक्रमण काल मे फार्मेसिस्टों ने 'मास्टर की' के रूप में अपने आप को प्रस्तुत किया। फार्मेसिस्टों ने बदलते ग्लोबल परिवेश में खुद को बदला है। कोविड काल में फार्मेसिस्ट मरीजों की ट्रेसिंग, और टेस्टिंग कर धनात्मक मरीजों की पहचान की। सभी सर्वे टीम और टेस्टिंग टीम में फार्मेसिस्ट ने प्रमुख रूप से कार्य किया। सभी कोविड-चिकित्सालयों और नानकोविड-चिकित्सालयों में औषधियों की आपूर्ति, मरीजों को औषधि देना व उनकी काउंसलिंग करने में फार्मेसिस्ट की प्रमुख भूमिका रही है। इस अवसर पर विभिन्न स्पधाओं जैसे कि वाद विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर प्रस्तुतिकरण, निबंध प्रतियोगिता एवं रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें डी. फामेर्सी के विद्यार्थियों ने बड़चढ़ कर हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में सभी विजेता छात्र छात्राओं को व अपनी कक्षा में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले बच्चों को संस्था के चैयरमैन कैलाश सिंह द्वारा नकदी और शील्ड देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन राहुल सिंह ने किया। इस अवसर पर डायरेक्टर जिलेदार सिंह, प्रिंसिपल शैलेन्द्र सिंह, पंकज सिंह, दीपक सिंह, रवि सिंह, अवनीश सिंह आदि रहे।

युवक ने कुत्ते को मारी गोली, मौत

प्रखर शाहगंज(जौनपुर)। शनिवार की रात नगर में एक युवक ने भौंक रहे कुत्ते को गोली मार दी।जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी। बताया जाता है की शनिवार की रात नगर के आजमगढ़ मार्ग स्थित बैंक आफ बड़ौदा के पास एक कुत्ता भौंक रहा था।आरोप है तभी वहां पहुँचे नगर के पुरानी बाजार मुहल्ला निवासी अविनाश जायसवाल ने अपने लाइसेंसी रिवाल्वर से कुत्ते पर ताबड़तोड़ गोली बरसा दी।जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गयी।सूचना मिलने पर पहुँची कोतवाली पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। और आरोपी युवक को हिरासत में लेकर कोतवाली ले आई। राजेश मौर्या निवासी पुरानी बाजार के द्वारा दी गयी तहरीर के आधार पर पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है। इस सम्बंध में प्रभारी निरीक्षक सदानंद राय ने बताया की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आगे की कार्यवाई की जा रही है।

स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म जयंती मनाई गई

प्रखर रामनगर वाराणसी। मन की बात का कार्यक्रम रोमा बिल्डिंग भाजपा पूर्व जिला मंत्री एवं वर्तमान में भाजपा काशी क्षेत्र संयोजक मीडिया संपर्क विभाग श्री सत्येंद्र सिंह पिंटू जी के आवास पर सुना गया। आज स्वर्गीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म जयंती मनाई गई और साथ ही बड़े भाई सत्येंद्र सिंह पिंटू जी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर केक काटकर उनको बधाई दी गई, जिसमें प्रमुख रुप से मन की बात कार्यक्रम में भाजपा पूर्व जिला मंत्री एवं वर्तमान में भाजपा काशी क्षेत्र संयोजक मीडिया संपर्क विभाग बड़े भाई सत्येंद्र सिंह पिंटू जी अखिलेश जी मनोज उपाध्याय जी अजय पांडे जी सोनू राय जी और राम नगर मंडल मन की बात के प्रभारी एवं भाजपा कोषाध्यक्ष संजय बाल्मीकि उपस्थित रहें।

नवरात्रि में घटस्थापना का शास्त्र एवं महत्व

माँ जगदम्बा, जिन्हें आदिशक्ति, पराशक्ति, महामाया, काली, त्रिपुरसुंदरी इत्यादि विविध नामों से सभी जानते हैं। जहांपर गति नहीं वहां सृष्टि की प्रक्रिया ही थम जाती है। ऐसा होते हुए भी अष्ट दिशाओं के अंतर्गत जगत की उत्पत्ति, लालन-पालन एवं संवर्धन के लिए एक प्रकार की शक्ति कार्यरत रहती है । इसी को आद्याशक्ति कहते हैं । उत्पत्ति-स्थिति-लय यह शक्ति का गुणधर्म ही है । शक्ति का उद्गम स्पंदनों के रूप में होता है । उत्पत्ति-स्थिति-लय का चक्र निरंतर चलता ही रहता है ।

नवरात्रि का इतिहास - राम के हाथों रावण का वध हो, इस उद्देश्य से महर्षि नारद ने प्रभु श्रीराम से इस व्रत का अनुष्ठान करने का अनुरोध किया था । इस व्रत को पूर्ण करने के पश्चात श्रीरामजी ने लंका पर आक्रमण कर अंत में रावण का वध किया । देवी ने महिषासुर नामक असुर के साथ नौ दिन अर्थात प्रतिपदा से नवमी तक युद्ध कर, नवमी की रात्रि उसका वध किया । उस समय से देवी को महिषासुरमर्दिनी के नाम से जाना जाता है ।

नवरात्री में नौ दिनों में शक्ति उपासना करनी चाहिए - असुषु रमन्ते इति असुरः । अर्थात जो सदैव भौतिक आनंद, भोग-विलासिता में लीन रहता है, वह असुर कहलाता है । आज प्रत्येक मनुष्य के हृदय में इस असुर का वास्तव्य है, जिसने मनुष्य की मूल आंतरिक दैवीवृत्तियों पर वर्चस्व जमा लिया है । इस असुर की माया को पहचानकर, उसके आसुरी बंधनों से मुक्त होने के लिए शक्ति की उपासना आवश्यक है । इसलिए नवरात्रि के नौ दिनों में शक्ति की उपासना करनी चाहिए । हमारे ऋषि-मुनियों ने विविध श्लोक, मंत्र इत्यादि माध्यमों से देवीमां की स्तुति कर उनकी कृपा प्राप्त की है । श्री दुर्गासप्तशती के अध्याय 11.12 के एक श्लोक में कहा गया है,

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।

सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोःस्तुते ।।

अर्थात शरण आए दीन एवं आर्त लोगों का रक्षण करने में सदैव तत्पर और सभी की पीडा दूर करने वाली हे देवी नारायणी, आपको मेरा नमस्कार है । देवी की शरण में जाने से हम उनकी कृपा के पात्र बनते हैं । इससे हमारी और भविष्य में समाज की आसुरी वृत्ति में परिवर्तन होकर सभी सात्त्विक बन सकते हैं । यही कारण है कि, देवीतत्त्व के अधिकतम कार्यरत रहने की कालावधि अर्थात नवरात्रि विशेष रूप से मनायी जाती है ।

नवरात्रि का अध्यात्मशास्त्रीय महत्व - जग में जब-जब तामसी, आसुरी एवं क्रूर लोग प्रबल होकर, सात्त्विक, उदारात्मक एवं धर्मनिष्ठ सज्जनों को छलते हैं, तब देवी धर्मसंस्थापना हेतु पुनः-पुनः अवतार धारण करती हैं । उनके निमित्त यह व्रत है । नवरात्रि में देवीतत्त्व अन्य दिनों की तुलना में 1000 गुना अधिक कार्यरत होता है । देवीतत्त्व का अत्यधिक लाभ लेने के लिए नवरात्रि की कालावधि में श्री दुर्गादेव्यै नमः। नामजप अधिकाधिक करना चाहिए ।

घटस्थापना का शास्त्र एवं महत्व - मिट्टी अथवा तांबे के कलश में पृथ्वीतत्त्वरूपी मिट्टी में सप्तधान के रूप में आप एवं तेज का अंश बोकर, उस बीज से प्रक्षेपित एवं बंद घट में उत्पन्न उष्ण ऊर्जा की सहायता से नाद निर्मिति करनेवाली तरंगों की ओर, अल्पावधि में ब्रह्मांड की तेजतत्त्वात्मक आदिशक्तिरूपी तरंगें आकृष्ट हो पाती हैं । मिट्टी के कलश में

पृथ्वी की जडत्वदर्शकता के कारण आकृष्ट तरंगों को जडत्व प्राप्त होता है और उनके दीर्घकालतक उसी स्थानपर स्थित होनेमें सहायता मिलती है । तांबे के कलश के कारण इन तरंगों का वायुमंडल में वेग से ग्रहण एवं प्रक्षेपण होता है और संपूर्ण वास्तु मर्यादित काल के लिए लाभान्वित होती है । घटस्थापना के कारण शक्तितत्त्व की तेजरूपी रजोतरंगें ब्रह्मांड में कार्यमान होती हैं, जिससे पूजक की सूक्ष्म-देह की शुद्धि होती है ।

घटस्थापना (मिट्टी अथवा तांबे के कलश में मिट्टी डालकर सप्तधान बोना) - नवरात्रि के प्रथम दिन घटस्थापना करते हैं । घटस्थापना करना अर्थात नवरात्रि की कालावधि में ब्रह्मांड में कार्यरत शक्तितत्त्व का घट में आवाहन कर उसे कार्यरत करना । कार्यरत शक्तितत्त्व के कारण वास्तु में विद्यमान कष्टदायक तरंगें समूल नष्ट हो जाती हैं । कलश में जल, पुष्प, दूर्वा, अक्षत, सुपारी एवं सिक्के डालते हैं ।

घटस्थापना की विधि में देवी का षोडशोपचार पूजन किया जाता है । घटस्थापना की विधि के साथ कुछ विशेष उपचार भी किए जाते हैं । पूजाविधि के आरंभ में आचमन, प्राणायाम, देशकालकथन करते हैं । तदुपरांत व्रत का संकल्प करते हैं । संकल्प के उपरांत श्री महागणपतिपूजन करते हैं । इस पूजन में महागणपति के प्रतीकस्वरूप नारियल रखते हैं । व्रतविधान में कोई बाधा न आए एवं पूजास्थलपर देवीतत्त्व अधिकाधिक मात्रा में आकृष्ट हो सकें इसलिए यह पूजन किया जाता है । श्री महागणपतिपूजन के उपरांत आसनशुद्धि करते समय भूमिपर जल से त्रिकोण बनाते हैं । तदुपरांत उसपर पीढा रखते हैं । आसनशुद्धि के उपरांत शरीरशुद्धि के लिए षडन्यास किया जाता है । तत्पश्चात पूजासामग्री की शुद्धि करते हैं ।

नवरात्रि महोत्सव में कुलाचारानुसार घटस्थापना एवं मालाबंधन करें - खेत की मिट्टी लाकर दो पोर चौडा चौकोर स्थान बनाकर, उसमें पांच अथवा सात प्रकार के धान बोए जाते हैं । इसमें (पांच अथवा) सप्तधान्य रखें । जौ, गेहूं, तिल, मूंग, चेना, सांवां, चने सप्तधान्य हैं । कुछ स्थानोंपर जौ की अपेक्षा अलसी का, चावल की अपेक्षा सांवां का एवं कंगनी की अपेक्षा चने का उपयोग भी करते हैं । मिट्टी पृथ्वी तत्त्व का प्रतीक है । मिट्टी में सप्तधान के रूप में आप एवं तेज का अंश बोया जाता है ।

सप्तधान एवं कलश (वरुण) स्थापना - जल, गंध (चंदनका लेप), पुष्प, दूर्वा, अक्षत, सुपारी, पंचपल्लव, पंचरत्न व स्वर्णमुद्रा अथवा सिक्के आदि वस्तुएं मिट्टी अथवा तांबे के कलश में रखी जाती हैं । सप्तधान एवं कलश (वरुण) स्थापना के वैदिक मंत्र यदि न आते हों, तो पुराणोक्त मंत्र का उच्चारण किया जा सकता है । यदि यह भी संभव न हो, तो उन वस्तुओं का नाम लेते हुए समर्पयामि बोलते हुए नाममंत्र का विनियोग करें । माला इस प्रकार बांधें कि वह कलश में पहुंच सके ।

श्री दुर्गादेवी आवाहन विधि - कलशपर रखे पूर्णपात्र पर पीला वस्त्र बिछाते हैं । उसपर कुमकुम से नवार्णव यंत्र की आकृति बनाते हैं । सर्वप्रथम पूर्णपात्र में बनाए नवार्णव यंत्र की आकृति के मध्य में देवी की मूर्ति रखते हैं । मूर्ति की दाईं ओर श्री महाकाली के तथा बाईं ओर श्री महासरस्वती के प्रतीकस्वरूप एक-एक सुपारी रखते हैं । मूर्ति के सर्व ओर देवी के नौ रूपों के प्रतीकस्वरूप नौ सुपारियां रखते हैं । अब देवी की मूर्ति में श्री महालक्ष्मी का आवाहन करने के लिए मंत्रोच्चारण के साथ अक्षत अर्पित करते हैं । मूर्ति की दाईं ओर रखी सुपारीपर अक्षत अर्पण कर श्री महाकाली एवं बाईं ओर रखी सुपारीपर श्री महासरस्वती का आवाहन करते हैं । तत्पश्चात नौ सुपारियोंपर अक्षत अर्पण कर नवदुर्गा के नौ रूपों का आवाहन करते हैं तथा इनका वंदन करते हैं ।

संदर्भ- सनातनका ग्रंथ, त्यौहार मनानेकी उचित पद्धतियां एवं अध्यात्मशास्त्र, धार्मिक उत्सव एवं व्रतों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार एवं देवीपूजनसे संबंधित कृत्योंका शास्त्र एवं अन्य ग्रंथ।

थाने में किन्नरों का हाई वोल्टेज हंगामा दिन भर चला ड्रामा फरियादी भी बने रहे मूकदर्शक

प्रखर गोरखपुर। क्षेत्र बटवारे को लेकर पुलिस द्वारा सहयोग न किये जाने से नाराज किन्नरों ने थाने में खूब हंगामा किया। किन्नरों का ड्रामा दिन भर थाने में चलता रहा। पुलिस दूसरे पक्ष को बुलाने के लिए आश्वासन देती रही। लेकिन मामले का हल नही निकल सका। वही थाना दिवस पर आये अधिकारी और फरियादी किन्नरों का हंगामा देखकर मूकदर्शक बनी रहे।

मिली जानकारी से क्षेत्र बटवारे को लेकर दो किन्नर गुट में बधाई लेने को लेकर विवाद चल रहा था। वृहस्पतिवार को पुलिस ने पहले पक्ष से प्रिया किन्नर तथा दूसरे पक्ष से तानिया किन्नर को समझौता के लिए बुलाया था। लेकिन पहला पक्ष थाने पर नही पहुचा था। पुलिस ने व्यवस्थता को लेकर एक दिन का समय मांगा था। शनिवार को दूसरा पक्ष तानिया के नेतृत्व में थाने पर पहुचा। पुलिस का सहयोग न मिलने पर किन्नर नाराज हो गये और फोरलेन को जाम कर दिया। मौके पर पहुची पुलिस किन्नरों को समझा बुझाकर थाने लायी। और थाने में खूब हंगामा किया। वही उस दौरान थाना परिसर में किन्नरों ने आपस में हाथापाई भी शुरू कर दी। इस्पेक्टर द्वारा समझाने पर किन्नर नही माने और नग्न होकर उनका पैर पकड़ लिया। वह किसी तरह भाग खड़े हुए। इस दौरान समाचार कवरेज कर रहे एक पत्रकार का इस्पेक्टर ने मोबाइल छीन लिया और अमर्यादित भाषा का प्रयोग करने लगे। नाराज पत्रकारों से इस्पेक्टर से बहस भी हो गयी तो उनके द्वारा पत्रकार का मोबाइल वापस किया। देर शाम तक किन्नरों का थाने में जमावड़ा लगा रहा और थाने की स्थिति भयानक होती जा रही थी। उस दौरान दोनों पक्ष के गुरुओं ने आखिर कार समझौता कर ही लिया। उस बाबत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक गौरव ग्रोवर ने कहा कि पत्रकार के साथ किया गया दुर्व्यहार निदनीय है। प्रकरण की जांच कराकर कार्रवाई की जायेगी।

छुट्टा पशुओं का अड्डा बना प्राथमिक विद्यालय का जर्जर भवन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। समग्र विकास इंडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष ब्रजभूषण दूबे ने गत दिनों सदर विकास खंड के चक अब्दुल बहाव प्राथमिक विद्यालय पर पहुंचकर जर्जर विद्यालय का अवलोकन किया। भवन निर्माण इतना घटिया था कि कुछ दिनों बाद ही विद्यालय की दीवारें टूट गई थी, दरवाजे गिर गए थे, छत टपकने लगा था बच्चों को तीन जर्जर कमरों से बाहर कर दिया गया किंतु अब उस जानलेवा भवन में एक गुस्सैल नंदी कई बछड़ों और सांड़ो के साथ अपना अड्डा बना लिया है। विद्यालय की अध्यापिकाओं ने कहा कि हम लोग बच्चों को लेकर हमेशा भयभीत रहते हैं कभी भी खतरनाक नंदी किसी की भी जान ले सकता है। पिरामिड पद्धति से बना हुआ विद्यालय भी अत्यंत जर्जर है कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकती है। विद्यालय परिसर को सुरक्षित रखने के लिए कोई चहारदिवारी नहीं है। हैंड पंप पीला और लाल पानी देता है। शौचालय की स्थिति भी खराब है। उन्होंने वहीं से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को फोन किया और विद्यालय की संवेदनशीलता से अवगत कराते हुए जर्जर भवन को गिराने पेयजल की व्यवस्था ठीक करने अन्य समस्याओं का त्वरित निदान करने की चेतावनी दिया। ऐसा न करने पर उन्होंने लोगों के माध्यम से जर्जर भवन को गिराने की चेतावनी भी दिया। उक्त अवसर पर समग्र विकास इंडिया के व्याख्याता गुल्लू सिंह यादव,पंकज कुशवाहा, कमला यादव,हनुमान बिंद, विवेक कुशवाहा, मोहम्मद साद शेख, कैलाश बिंद आदि लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

पंडित राम प्रवेश चौबे इंटर कॉलेज में ग्रैंड फादर मदर्स डे बड़ी धूमधाम से मनाया गया

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पंडित राम प्रवेश चौबे इंटर कॉलेज बाबतपुर नियार में ग्रैंड फादर मदर्स डे बड़ी धूमधाम से मनाया गया बच्चों द्वारा गीत संगीत कविता स्पीच द्वारा सुंदर प्रस्तुति किया गया` आए हुए गार्जियन ने भी टीचरों द्वारा तैयार कराए गए गेम में भाग लिया विजेता गार्जियन को प्रिंसिपल अभिलाषा चौबे ने मोमेंटो देकर सम्मानित किया` उक्त अवसर पर प्रबंधक पंडित सतीश चौबे जी ने कहा कि सुदूर ग्रामीण अंचल में इस तरह के स्कूल में और भी कई कार्यक्रम आयोजित कर बच्चों को प्रोत्साहन किया जाएगा जिससे उनके गार्जियन वह बच्चों को शहर की तरफ न जाना पड़े घर के बगल में ही अच्छी शिक्षा की सुविधा मिले` मुख्य अतिथि प्रधाना अध्यापिका सुशीला देवी व विशिष्ट अतिथि अभिषेक तिवारी कन्या प्राथमिक विद्यालय नियार को को-ऑर्डिनेटर मनीष चौबे ने मोमेंटो अंगवस्त्रम देकर सम्मानित किया` उक्त अवसर पर विद्यालय परिवार से धनंजय चौबे, एसपी सिंह, नेहा सिंह, वंदना सिंह, गणेश चौबे, पूजा सिंह, अलका चौबे, रागिनी सिंह, अनिल चौबे लाली चौबे इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

बृहस्पति फाउंडेशन द्वारा पठन-पाठन सामग्री का वितरण किया गया

प्रखर वाराणसी। बृहस्पति फाउंडेशन के द्वारा मिशन प्राइमरी एजुकेशन के तहत अमरा खैरा नट बस्ती में पठन-पाठन सामग्री का वितरण किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रुप में जय भारत मंच के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेंद्र शर्मा व विशिष्ट अतिथि श्री अभिषेक सिंह व शशि प्रजापति रहे। पठन-पाठन सामग्री पाकर बच्चों के खिले चेहरे तथा निरंतर पढ़ाई करने का वादा किया बृहस्पति फाउंडेशन से अमित प्रजापति, अभिषेक सिंह, अमित यादव, निखिल यादव ,रजत विश्वकर्मा, संस्कृति ,आशा पांडे, सोनाली प्रजापति, रोहित सोनी ,दुर्गेश ठक्कर ,यादवेंद्र, श्वेता पांडे ,आराधना, सोनाली पांडे, आदि लोग उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 106वीं जयंती मनाई गई

प्रखर गोरखपुर। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा आयोजित पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 106 वी जयंती के अवसर पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी राष्ट्र चेतना उत्सव दृष्टि 2047 के मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल महामहिम कलराज मिश्र द्वारा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन दीनदयाल जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर दीक्षा भवन सभागार में दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किए। इस दौरान पूर्व केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री शिव प्रताप शुक्ला सदर सांसद रवि किशन विश्वविद्यालय कुलपति राजेश सिंह सहित अन्य गणमान्य अतिथि गण मौजूद रहे।

शिक्षित बेटी सशक्त भारत का आधार : जीशान खान

प्रखर शाहगंज जौनपुर। समाज को मजबूत आधार देने के लिए बेटियों को बराबर का दर्जा और शिक्षित होना अति आवश्यक है बेटियां ही सशक्त भारत का आधार हैं। उक्त बातें भारत रक्षा दल के जीशान अहमद खान ने दूरभाष पर अंतर्राष्ट्रीय बेटी दिवस के अवसर पर कहीं। उन्होंने कहा की नारी सशक्तिकरण और बेटियों को बराबरी का दर्जा के साथ साथ शिक्षित करने से भारत को मजबूती प्रदान होगी और यही बेटियां देश और दुनियां में नाम करेंगी। अंतर्राष्ट्रीय बेटी दिवस पर भारत रक्षा दल के कार्यकताओं ने गरीब बेटियों को नगर के कई क्षेत्रों में जाकर उपहार भी वितरण किया। बताते चलें इसके पूर्व शिक्षक दिवस पर समाजसेवी जीशान अहमद खान ने दस गरीब बेटियों के पढाई का पूरा खर्च दिया था। उक्त अवसर पर शोएब इदरीसी, मिन्हाज इराकी, शुभम गुप्ता, गोल्डी,अदनान अहमद, उजैर अंसारी,रविन्द्र कन्नौजिया सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गले से चेन छीनते चोर धराया

प्रखर केराकत जौनपुर। क्षेत्र के ग्राम पचवर में शनिवार को देर रात अपने दरवाजे पर सो रही महिला शकुंतला देवी के गले की चेन को छीनकर भागते समय महिला के परिजनों ने धर लिया। गौरतलब है कि लालबहादुर सरोज पुत्र अम्मल सरोज निवासी पचवर एक सप्ताह से शकुन्तला देवी के घर के सामने से आते जाते समय रुककर सलाम- वन्दगी करके पहले विश्वास ले लिया और उनके गले मे पड़ी सोने की पहचान कर लिया और योजनाबद्ध तरीके अपने एक स साथी विनोद यादव के साथ महिला के घर पहुँचकर उसके गले मे पड़ी चेन छिनने लगा। जिसके चलते महिला की नीद खुल गयी। और उन्होंने चोर को पहचान कर शोर मचाया। जिसपर उनके परिजनों ने चोर को दौड़ाकर पकड़ लिया। और पुलिस को सौप दिया।

वाराणसी में प्रधानमंत्री कार्यालय पर एनएसयूआई के कार्यकर्ताओं ने दिया ज्ञापन

प्रखर दानगंज वाराणसी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय व साथ ही संपूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में केंद्र सरकार व कुलपति की मिली भगत द्वारा छात्रों के फीस वृद्धि के विरोध में वाराणसी में प्रधानमंत्री कार्यालय पर एनएसयूआई कार्यकता ज्ञापन देने पहुँचे तो पुलिस प्रशासन ने अंदर जाने से रोका और ज्ञापन खुद ले लिया। ज्ञापन देने में संपूणानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के छात्रसंघ महामंत्री व प्रदेश सचिव शिवम चौबे,जिलाध्यक्ष ऋषभ पांडेय,नीरज पांडेय,संदीप पाल, मानस, रोहित राणा, आदि लोग मौजूद रहे।

पहली अक्टूबर से गोरखपुर जंक्शन पर 5 मिनट कम रुकेंगी ये 40 ट्रेनें, बड़े बदलाव की तैयारी में रेल प्रशासन

प्रखर गोरखपुर। पहली अक्तूबर से गोरखपुर जंक्शन पर 40 ट्रेनों का ठहराव 5 मिनट कम हो जाएगा। इन ट्रेनों का स्टॉपेज 15 मिनट की बजाये 10 मिनट का होगा। जंक्शन पर प्लेटफार्मों के हमेशा पैक रहने की समस्या को देखते हुए रेल प्रशासन एक अक्तूबर से बड़े बदलाव की तैयारी में जुटा है। कृषक, अवध, नौतनवा-दुर्ग, बापूधाम, सप्तक्रांति, जनसाधारण और चंपारण हमसफर को छोड़कर गोरखपुर से गुजरने वाली शेष लगभग 40 ट्रेनें गोरखपुर जंक्शन पर 15 मिनट की जगह 10 मिनट ही रुकेंगी। इन सभी ट्रेनों के स्टापेज में पांच मिनट की कटौती की जा रही है। इस बदलाव से सबसे बड़ा फायदा ये होगा कि प्लेटफार्म पांच मिनट पहले ही खाली हो जाएगा। इससे आउटर पर खड़ी ट्रेनों को आसानी से लाइन क्लीयर मिल सकेगा।

दो साल बाद छप रहा है टीएजी ट्रेन एट ए ग्लांस- कोविड के चलते बीते दो साल से बंद ट्रेन एट ए ग्लांस (टीएजी) की छपाई दोबारा हो रही है। इस बार एक अक्तूबर को रेलवे टाइम टेबल नए कलेवर में आएगा। इसकी कीमत 30 रुपये की बजाय 100 रुपये होगी। यह टाइम टेबल ई-टीएजी के रूप में भी उपलब्ध होगा। प्रति डाउनलोड 30 रुपये शुल्क लिया जाएगा। टाइम टेबल प्रकाशित करने और बुक स्टॉलों पर वितरित कराने की जिम्मेदारी आईआरसीटीसी को दी गई है। एनई रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी पंकज कुमार सिंह ने बताया कि नए टाइम-टेबल में गोरखपुर रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों के स्टॉपेज की टाइमिंग को भी ऑप्टिमाइज किया जा रहा है।

भाजपा राज में किसान और नौजवान सबसे ज्यादा उत्पीड़न का शिकार : सपा जिलाध्यक्ष लालबहादुर यादव

प्रखर जौनपुर। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव निर्देश पर चलायें जा रहे देश बचाओं देश बनाओं समाजवादी पद यात्रा का 48 वां दिन महराजगंज से खेमपुर मुंगरा बादशाहपुर पहुंचा पदयात्रियों को संबोधित करते हुए सपा जिलाध्यक्ष लालबहादुर यादव ने कहा कि भाजपा राज में किसान और नौजवान सबसे ज्यादा उत्पीड़न के शिकार हैं। सरकार इनके प्रति संवेदनहीन व्यवहार कर रही है। किसान कर्ज में डूबा है। नौजवान का भविष्य अंधेरे में है। मुख्यमंत्री के दावों में कोई दम नहीं है। भाजपा सरकार का सारा कामकाज कोरे बयानों से लोगों को बहकाने से ही चल रहा है। किसान अपने को ठगा महसूस कर रहा है। पदयात्रा का नेतृत्व कर रहे अभिषेक यादव ने कहा

चुनाव के दौरान तो भाजपा नेतृत्व ने कहा था उत्तर प्रदेश के किसानों को मुफ्त बिजली दी जाएगी। उनकी आय दोगुनी करने का वादा का तो अब भूले से भी कोई नाम नहीं लेता है। मुफ्त बिजली देने की बात से विधानसभा में भाजपा सरकार ने ही इंकार कर दिया। मतलब ये भी चुनावी जुमला था।

देश के भविष्य नौजवानों के साथ तो भाजपा सरकार और भी बुरा व्यवहार कर रही है। छात्र नेता अखिलेश गुप्ता ने कहा बेरोजगारी बढ़ी है। फिर छात्रों की पढ़ाई, हॉस्टल एवं अन्य खर्चें बढ़ाकर दंभी सरकार छात्रों और उनके अभिभावकों से किस बात का बदला लेना चाहती है। वैसे भी भाजपा सरकार ने गरीबी और बेरोजगारी दोनों को खूब बढ़ावा दिया है। लोहिया वाहनी राष्ट्रीय महासचिव राघवेंद्र यादव ने कहा भाजपा सरकार एक यूनिट बिजली का उत्पादन नहीं हुआ, लोगों की नौकरियां छिन गई। किसी को रोजगार नहीं मिला वैसे भी उत्तर प्रदेश में किसान, नौजवान दोनों का भविष्य अनिश्चित और असुरक्षित है। आखिर भाजपा कोई भी काम क्यों नहीं करना चाहती है यात्रा में मुख्य रूप से विधायक पंकज पटेल, ननकू यादव, प्रवक्ता राहुल त्रिपाठी,अशोक यादव, राहुल यादव राममूर्ति सरोज, दीनानाथ सिंह रमापति यादव महावीर यादव रामजतन, इंजीनियर ललित संघर्ष यादव, राजवीर यादव,अनुपमा पटेल अविनाश विद्यार्थी आशुतोष तिवारी अवनीश यादव इंजीनियर अभिषेक अमित ठाकुर राज साहनी,बच्चा यादव, हर्षित पंकज यादव आदि।

करोड़ों के भुगतान को लेकर टाटा व बालाजी निर्माण एजेंसी में ठनी

प्रखर जौनपुर। सिद्धीकपुर के निमार्णाधीन उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय का निर्माण कार्य बंद हो गया। जिसमें निर्माण में लगी टाटा लिमिटेड कंपनी व बालाजी लिमिटेड कंपनी के बीच करोड़ के भुगतान को लेकर ठन गई है आपसी खींचतान के चलते श्रमिकों व सप्लायरो का भुगतान भी नहीं हो पाया है। मेडिकल कॉलेज का विगत 9 सितंबर को

दोनों कंपनियों के आपसी खींचातानी में लटका निर्माण कार्य, डीएम ने जारी किया स्पष्टीकरण नोटिस

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निरीक्षण किया खामियां मिलने पर उन्होंने प्रमुख सचिव आलोक कुमार को बारीकी से निरीक्षण करने के लिए भेजा, उन्होंने कार्य प्रगति की जानकारी लेकर जिम्मेदार लोगों को निर्माण शीघ्र पूरा कराने पर निर्देश दिया ।लेकिन करोड़ों के भुगतान को लेकर दो निर्माण एजेंसियों में ठन गई है और एक दूसरे के ऊपर शब्दो की तलवारे खींचती आ रही हैं । उधर अधिकारियों की नाराजगी बढ़ती जा रही है। मेडिकल कॉलेज का निर्माण कार्य शासन ने राजकीय निर्माण निगम लिमिटेड को सौंपी गई । राजकीय निर्माण निगम में टाटा लिमिटेड प्रोजेक्ट को काम टेन्डर पर कराने के लिए दिया जिसके बाद टाटा ने बालाजी लिमिटेड प्रोजेक्ट लिमिटेड को काम कराने की जिम्मेदारी दे दी। बालाजी काम करवा रही थी, भुगतान न होने के चलते श्रमिकों ने काम बंद कर दिया । जिसके बाद टाटा व बालाजी में ठन गई है ,तनाव बढ़ता जा रहा है । दोनों कंपनियों के बीच करोड़ों के भुगतान को लेकर नोकझोंक होनी शुरू हो गई। प्रमुख सचिव के निरीक्षण के बाद उनके निर्देश पर राजकीय निर्माण निगम ने टाटा प्रोजेक्ट लिमिटेड को ढाई करोड़ का बजट दिया। लेकिन टाटा ने उस बजट

को बालाजी को नहीं दिया। जिसके चलते वह श्रमिकों को भुगतान नहीं कर सका और सभी ने काम बंद कर दिया। बालाजी का आरोप है कि इसके पूर्व इ सात करोड अतिरिक्त कार्य का बकाया भुगतान नहीं हुआ है । तीन करोड रनिंग बिलिंग में फसा है। और तीन करोड जीएसटी का रिफन्डेबल भुगतान नहीं हुआ । जिसके चलते काम श्रमिकों व सप्लायरो का भुगतान नहीं हुआ ।काम बंद होने पर दोनों कंपनियों की मेडिकल कॉलेज परिसर में नोकझोंक तक की नौबत बन गई ।हालांकि अन्य अधिकारियों ने बीच-बचाव किया ।उधर मेडिकल कॉलेज का काम बंद होने से जिले से लेकर प्रदेश तक चर्चा का विषय बन चुका है।

भुगतान न होने से श्रमिकों ने किया चौथे दिन प्रदर्शन- **जौनपुर।** उमानाथ सिंह स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय सिद्धिकपुर के करीब ढाई सौ श्रमिकों का करोड़ों रुपया प्राश्रमिक भुगतान न होने से श्रमिकों ने चौथे दिन भी धरना-प्रदर्शन किया। काम पूरी तरह से बंद रखा। बता दें कि मेडिकल कॉलेज के निर्माण कार्य में करीब ढाई सौ श्रमिक लगे लगाए गए हैं। जो प्रदेश विभिन्न प्रदेशों से आए हैं और उनका मजदूरों का डेढ करोड रुपए भुगतान नहीं किया गया है । जिसके चलते उन्हें दुकानदारों ने राशन उधार देना भी बंद कर दिया है। उन्हें खाने की समस्याएं हो गई हैं । जिसके चलते 4 दिन पूर्व से ही श्रमिकों ने काम बंद कर प्रदर्शन शुरू कर दिया है ।चौथे दिन भी श्रमिकों का प्रदर्शन जारी रहा और वह परिसर मे घूम घूम कर नारेबाजी करते हुए भुगतान करने के लिए टाटा व बाला जी कार्यालय पर प्रदर्शन किया । भुगतान करने की मांग करते हुए श्रमिकों ने कहा कि अगर भुगतान नहीं हुआ तो मुफ्त में सड़क पर वह चक्का जाम करेंगे । जरूरत पड़ी जिला मुख्यालय तक प्रदर्शन करेंगे। मामले को जिला जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा ने इसे गंभीरता से लेते हुए निर्माण एजेंसियों को नोटिस जारी कर दिया।

बजट दिया गया है, बोले पीएन सिंह, प्रोजेक्ट मैनेजर, राजकीय निर्माण निगम- बजट दिया गया है टाटा व बालाजी की आपसी खींचतान है उन्हें निर्देशित किया गया है कि शीघ्र एक-दो दिन के अंदर निर्माण कार्य चालू हो जाना चाहिए। किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी ।शीघ्र कार्य चालू हो जायेगा ।

भाजपा कार्यकर्ताओं के द्वारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का 106वां जन्म जयंती अजगरा विधान सभा में मनाया गया

प्रखर दानगंज वाराणसी। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का अजगरा विधान सभा के मोहव धुरेश्वरी धाम मे पंडित दीनदयाल जी के स्मारक पर माल्यार्पण व दीप

जलाकर जन्म जयंती मनाया गया जिसमे कार्यक्रम में शामिल हुए मां. विधायक त्रिभून राम जी अजगरा विधान सभा, चंद्र शेखर सिंह जी भाजपा जिला उपाध्यक्ष, गौरव सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष भोला उपाध्याय, सतीश सिंह, विनोद सिंह मंडल अध्यक्ष चोलापुर, गोपाल सिंह पूर्व ब्लाक प्रमुख,अनिल तिवारी महामंत्री चौबेपुर मंडल, देवव्रत रघुवंशी मंडल अध्यक्ष आयर, अखिलेश जायसवाल भाजपा युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष चोलापुर, प्रमोद पांडेय, विपिन राय, विशाल सिंह, रविकांत पांडेय भाजयुमो चोलापुर व समस्त भाजपा पदाधिकारी, अजगरा विधानसभा के चारों मंडल के यशस्वी मंडल अध्यक्ष वरिष्ठ पदाधिकारी, जिला पंचायत सदस्य एवं मंडल के महामंत्री व पदाधिकारी वह भारतीय जनता पार्टी के देव तुल्य कार्यकर्ता बंधु कार्यक्रम में शामिल हुए।

जिले भर में मनायी गयी पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 106वीं जयंती

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर।पं दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के स्थापना काल से अनवरत महामंत्री पद पर रहकर संगठन कार्यों को अपनी सेवाएं देते रहे तथा जीवन के अन्तिम 7 महीने पूर्व वह अध्यक्ष बने। यह बात आज सेवा पखवाड़ा के नवें दिन रविवार को उत्तर प्रदेश सरकार के आयुष राज्य मंत्री दयाशंकर मिश्रा दयालु ने भाजपा कार्यालय टैक्सी स्टैंड पर आयोजित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के "मन की बात" कार्यक्रम को सुनने के बाद कही उन्होंने कहा कि उनका सादा,सरल जीवन अन्तिम समय तक सिर्फ एक झोले में रहा। उन्होंने कहा कि पं दीनदयाल उपाध्याय अत्यन्त कष्टमय जीवन जीते हुए गरीबी को करीब से देखा था और अन्त्योदयका प्रतिपादन किया।उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पं दीनदयाल उपाध्याय की सोच और सपनों को संकल्पित रुप से पुरा कर रहे है।और कहा की आज मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व मे प्रदेश सरकार के लगातार दूसरे कार्यकाल का छः महीना आज पूर्ण हुआ। सभी मंत्री अनवरत बिना विश्राम किये लगातार अन्त्योदय विकास हेतू तत्पर है। जिलो में प्रवास के दौरान किसी दलित के घर ही भोजन करते है।

क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरोज कुशवाहा ने कहा कि आज युवाओं, महिलाओं तथा समाज के हर उम्र वर्ग के अंतर्मन की सोच को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अच्छी तरह समझ रहे है और पं दीनदयाल जी के विचार सिद्धांत एकात्म मानववाद से भारत के भविष्य को मजबुती दे रहे है।

लोक सभा संयोजक कृष्ण बिहारी राय ने कहा कि पं दीनदयाल उपाध्याय जी का मूल सूत्र "एकात्म मानववाद" सिर्फ नारा नही बल्कि भारत के समृद्धि और खुशहाली का मूल मंत्र है जिस सोच और कार्य पद्धति के आधार पर आज भारत विश्व पटल के शीर्ष पर स्थापित होने कि ओर तेज गति से अग्रसर है।

इससे पहले मा मंत्री दयाशंकर मिश्र दयालु मिश्रबाजार स्थित पं दीनदयाल उपाध्याय के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उनके 106 वीं जयन्ति पर श्रद्धांजलि अर्पित किया तथा वहां उपस्थित भाजपा कार्यकताओं ने पं दीनदयाल उपाध्याय के सम्मान मे नारे लगाए।इस अवसर पर प्रवीण सिह, अच्छे लाल गुप्ता, विनोद अग्रवाल,अर्जुन सेठ, सुनील गुप्ता,सुमित तिवारी, संतोष

जायवाल,अमरनाथ दूबे, कुँवर बहादुर सिह, सोमेश राय,अनिल वर्मा,अविनाश सिंह, किरन सिह, साधना राय,समरेंद्र सिंह,निर्गुण दास केशरी, सनी चौरसिया,हर्षित सिंह, निखिल राय,सूर्य प्रकाश यादव,हेमंत तिवारी, सहित सभी सभासद, पदाधिकारी, सोशल मीडिया प्रमुख आदी उपस्थित रहे। संचालन रासबिहारी राय ने किया।

भारतीय जनता पार्टी द्वारा आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जन्मदिन सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत पं दीनदयाल उपाध्याय की 106 वीं जयन्ति बुथ स्तर पर पुरे जिले मे जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह के नेतृत्व मे श्रद्धा सम्मान के साथ उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात को सुनकर मनायी गयी। जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह ने जखनियाँ विधानसभा के बरहट बूथ पर प्रधानमंत्री के मन की बात सुनकर पं दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर माल्यार्पण कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित किया और कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति के लिए सदैव चिंतन शील दीनदयाल जी के विचारों तथा सिद्धांतों के आधार पर मोदी जी कार्य कर रहे है। भाजपा जिलामीडिया प्रभारी शशिकान्त शर्मा ने सदर विधानसभा के सकरताली बूथ पर संकठा प्रसाद मिश्रा ने जंगीपुर बाजार स्थित काली माँ मंदिर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात सुनकर महामनिषी पं दीनदयाल उपाध्याय के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।स्थानीय जखनिया।

इसी प्रकार आज जखनियां मण्डल प्रथम में श्रद्धेय पं. दीनदयाल उपाध्याय जी की जयंती के अवसर पर भाजपा कार्यकताओं द्वारा उनके चित्र पर पुष्पांजली कर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया। और मन की बात पार्टी कार्यकताओं के साथ सुना गया।उक्त अवसर पर भाजपा जिलाउपाध्यक्ष विपिन सिंह ने कहा पं. दीनदयाल जी हम सबके आदर्श है, उनके मार्गदर्शन में पार्टी के कार्यकर्ता कार्य करते हैं, उनके विचार विश्व भर में अनुकरणीय है। भाजपा उनके सिध्दांत को आत्मसात करके समाज के हर व्यक्ति के लिए कार्य कर रही है। व्यापार प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष प्रमोद वर्मा ने कहा पं. दीनदयाल जी ने अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति के लिए सरकार की संवेदना को झकझोरने का कार्य किया था। आज डबल इंजन की भाजपा सरकार उनके 'अंत्योदय' के संकल्प को पूर्ण कर रही है। वर्मा ने कहा अगर भारत की आत्मा को समझना है तो इस देश को राजनीतिक या आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक नजरिए से देखना चाहिए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय स्वदेशी के बहुत बड़े समर्थक थे। उनका कहना था कि भारत के लिए एक स्वदेशी आर्थिक मॉडल विकसित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें व्यक्ति केंद्र में हो। दीनदयाल उपाध्याय को भारत में गरीब-दलितों की आवाज भी कहा जाता था। उनका सपना था कि देश की हर जन कल्याणकारी योजना का लक्ष्य समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है। समाज के अंतिम पायदान पर खड़े लोगों के लिए योजनाएं बननी चाहिए। देश के लिए दिए गए उनके योगदान के उपलक्ष्य में उनकी जयंती को अंत्योदय दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर भाजपा मंडल अध्यक्ष उमाशंकर यादव, महामंत्री द्वय धर्मवीर राजभर, पीयूष सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता इंद्रदेव कुशवाहा, दयाशंकर सिंह, रामअवतार पांडेय, उमाशंकर भारद्वाज, सतीश, प्रशांत सिंह, पारस पांडेय, ओमप्रकाश दूबे, सतेन्द्र पासवान, सूरज खरवार, धर्मेंद्र चौरसिया, मदन पांडेय, अजय विक्रम, सुबाष यादव, भोलू सिंह, भुल्लन यादव, शिवशंकर चौहान सहित प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

विक्रम वेधा का हिंदी अवतार- इस शुक्रवार को बॉलीवुड और टॉलीवुड से एक-एक फिल्म प्रदर्शित हो रही है। बॉलीवुड से, रिलायंस और टीसीरीज की सहकार फिल्म विक्रम विधा सिर्फ हिंदी में रिलीज हो रही है। क्योंकि, यह फिल्म तमिल भाषा की माधवन और विजय सेतुपति अभिनीत फिल्म विक्रम वेधा की रीमेक फिल्म है। इस रीमेक में, ऋतिक रोशन गैंगस्टर वेधा का वेताल की तरह सवाल जवाब करने वाला चरित्र कर रहे है। उनके विरु द्ध पुलिस अधिकारी की विक्रम भूमिका में सैफ अली खान है। तमिल की इस रीमेक फिल्म में दूसरे महत्वपूर्ण चरित्र राधिका आप्टे, रोहित सराफ, योगिता विहानी, शारिब हाशमी और सत्यदीप मिश्रा कर रहे है। मूल फिल्म की निर्देशक जोड़ी पुष्कर-गायत्री ही हिंदी संस्करण का निर्देशन रही है। सुपर 30 और वॉर की सफलता ओढ़े थक की इस फिल्म के भी बड़ी हिट होने की आशा की जा रही है। विक्रम-वेधा का बजट 170 करोड़ बताया जा रहा है। विक्रम वेधा के लिए लाल सिंह चड्डा की तरह स्क्रीन रोकने का काम काफी पहले से शुरू कर रखा है।

अल्पना कांडपाल

बॉलीवुड गैंगस्टर पर भारी
टॉलीवुड की भव्यता

बॉक्स ऑफिस पर, ब्रह्मास्त्र कितना कारगर रहा, इस पर विवाद है। निर्माता और ट्रेड द्वारा जारी आंकड़ों पर भी विवाद है। इन्हे संदिग्ध बताया जा रहा है। वास्तविकता क्या है, इसे अभी नहीं जाना जा सकता। लेकिन, अगर 401 करोड़ की लागत वाली, 9 सालों में पूरी हुई ब्रह्मास्त्र पार्ट 1 शिवा की लागत से तुलना करें तो कारोबार के आकंड़े फिल्म को अभी हिट नहीं बनाते। ऐसा लगता है, ब्रह्मास्त्र को अभी बॉक्स ऑफिस पर मारक साबित होना है। पर इस सप्ताह यानि शुक्रवार 30 सितम्बर को प्रदर्शित होने जा रही दो बड़ी फिल्में करण जौहर के ब्रह्मास्त्र को भोथरा बना सकती है।

विक्रम वेधा पर भारी चोल साम्राज्य- हिंदी बेल्ट में पकड़ के लिहाज से, ऋतिक और सैफ की शीर्षक भूमिका वाली फिल्म की सफलता असंदिग्ध दिखाई देती है। ध्यान रहे कि अब दक्षिण की फिल्में हिंदी पेटी के दर्शकों को आकर्षित कर रही है। कम बजट की तेलुगु फिल्म कार्तिकेय 2 के हिंदी संस्करण को मिली बड़ी सफलता इसका प्रमाण है। बाहुबली सीरीज की सफलता ने हिंदी दर्शकों में दक्षिण के प्राचीन साम्राज्यों के विषय में जानने की उत्सुकता पैदा की है। इस दृष्टि से हिंदी में दक्षिण के प्राचीन चोल साम्राज्य के वैभव और राज महल के षड्यंत्र के ड्रामा को देखने में दिलचस्पी है। जहां, विक्रम वेधा हिंदी बेल्ट में बड़े दर्शक बटोर सकेगी, वही पोनियिन सेल्वन 1 को पूरे देश में दर्शक बटोरने में सफलता मिल सकती है। अगर यह विक्रम वेधा पर भारी पड़ गई तो फिर क्या कहने है।

साबित होगी श्रेष्ठता- बॉलीवुड और तमिल फिल्म इंडस्ट्री के लिए विक्रम वेधा और पोनियिन सेलवन 1 की सफलता अति आवश्यक है। ऋतिक रोशन ने सुपर 30 तथा वॉर जैसी बड़ी सफल फिल्में दी है। विक्रम वेधा की सफलता उन्हें बॉलीवुड का सबसे बड़ा सुपरस्टार बना देगी। इसके सफल होने की कामना बॉलीवुड भी कर रहा होगा। क्योंकि, विक्रम वेधा के सफल होने से बॉलीवुड को उत्साहित होने का अवसर मिलेगा। अगर फिल्म असफल हुई तो यह तय हो जाएगा की लाल सिंह चड्डा जैसी बड़ी असफलता के बाद ब्रह्मास्त्र की सुपर सफलता रियल नहीं फंतासी थी। पोनियिन सेलवन1 के सामने भी यही चुनौती है। मणिरत्नम की इस फिल्म के हिंदी संस्करण को विक्रम वेधा के सामने स्वयं को स्थापित करना होगा। पीएस1 की सफलता से यह स्थापित हो जाएगा कि दक्षिण का सिनेमा केवल तेलुगु और कन्नड़ फिल्मों की सफलता पर निर्भर नहीं। यह तमिल उद्योग को गर्व करने का अवसर देगी ही, यह भी साबित हो जाएगा कि कथानक और भव्यता की दृष्टि से दक्षिण का सिनेमा को बॉलीवुड कोई चुनौती नहीं।

पीएस 1 की भव्यता- विक्रम-वेधा के बजट से कहीं ज्यादा बजट, दक्षिण से आ रही फिल्म पोंनियिन सेलवन1 का है। निर्माता और निर्देशक मणिरत्नम फिल्म पोंनियिन सेलवन 1 को केवल तमिल भाषा में 100 करोड़ की लागत से स्वयं बनाना चाहते थे। बाद में इस फिल्म का विस्तार होता चला गया। दूसरे निर्माता जुड़े, फिल्म को दो हिस्सों में तथा तमिल के अतिरिक्त हिंदी, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम में भी प्रदर्शित किए जाने का निर्णय लिया गया। अब इसका बजट बढ़ कर 500 करोड़ हो गया है। हिंदी पेटी के दर्शकों के पहचाने चेहरों की दृष्टि से फिल्म में ऐश्वर्या राय बच्चन, नंदिनी और मन्दाकिनी की दोहरी भूमिका कर रही है। हिंदी दर्शक शोभिता धूलिपाला को भी पहचानते होंगे। लेकिन, दक्षिण की फिल्मों के कई बड़े चेहरे जयम रवि, कार्ति, तृषा, ऐश्वर्या लक्ष्मी, प्रभु, आर शरदकुमार, विक्रम प्रभु, जयराम, प्रकाश राज, रहमान, आर पर्तिबन, आश्विन काकुमानी, अश्विन राव, आदि को छोटी बड़ी, पर प्रमुख भूमिकाओं में लिया गया है। तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं के दर्शको के बीच अपनी पकड़ रखने वाले यह कलाकार फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निबाह सकते हैं।

बॉलीवुड

दो सौ युवतियों के जवान शाहरु ख

हैरी मेट सेली और जीरो के बुरे बॉक्स ऑफिस परिणाम से तिलमिलाए शाहरु ख खान, पूरे चार साल तक खामोश रहे पर चौंथा साल बीतते बीतते उनकी एक दो नहीं तीन तीन फिल्मों की घोषणा हो गई। स्वयं के स्टारडम को बनाए रखने के लिए शाहरु ख ने दक्षिण के सबसे सफल निर्देशक एटली कुमार के साथ फिल्म जवान करना भी स्वीकार कर लिया। हालांकि, वॉर जैसी सुपरहिट फिल्म बनाने वाले निर्देशक सिद्धार्थ आनंद के साथ पठन पूरी हो चुकी है तथा आगामी वर्ष गणतंत्र दिवस सप्ताहांत पर प्रदर्शित होने जा रही है। पर इस समय समाचारों में बनी हुई है दक्षिण के सफलतम निर्देशकों में से एटली कुमार की फिल्म जवान। इसके लिए खान ने विशेष तौर पर दक्षिण के लोकप्रिय खल अभिनेता विजय सेतुपति को चुना। इसको सफल बनने के हर टोटके प्रयोग में लाए जा रहे है। नवीनतम टोटका है 200 युवा महिलाओं के साथ शाहरु ख खान के दृश्य। यह दृश्य हैदराबाद में सात दिनों में पूरे किए जाएंगे। इस दृश्यों की विशेषता है कि उपरोक्त युवा महिलाओं के साथ शाहरु ख का जवान तगड़े एक्शन करता दिखाई देगा।

कोड नेम तिरंगा की रॉ एजेंट

आजकल बॉलीवुड में रॉ एजेंट काफी लोकप्रिय हो रहा है। लगभग सभी शाहरु ख खान, सलमान खान, अक्षय कुमार और जॉन अब्राहम जैसे बड़े बॉलीवुड सितारे रॉ एजेंट बन चुके हैं। तापसी पन्नू (नाम शबाना), सोनाक्षी सिन्हा (फॉर्स 2), हुमा कुरैशी (डी-डे), आलिया भट्ट (राजी) रॉ अवतार ले चुकी है। इस कड़ी में परिणीति चोपड़ा का नाम भी जुड़ने जा रहा है। वह एक्शन जासूसी फिल्म कोड नेम तिरंगा में रॉ एजेंट की भूमिका कर रही है। जारी पोस्टर में वह बंदूक से माथा टिकाए किसी निर्णयात्मक सोच में डूबी लगती है। हार्डी संधू उनका साथ दे रहे हैं। फिल्म की टैग लाइन से ऐसा लगता है कि परिणीति का चरित्र देश के लिए बलिदान देने वाला है। रिभु दासगुप्ता निर्देशित फिल्म 14 अक्टूबर को आयुष्मान खुराना की फिल्म डॉक्टरजी को चुनौती दे रही होगी।

ऊंचाई में आठ दिग्गज

निर्देशक सूरज बड़जात्या की फिल्म उंचाई 2022 की सबसे बड़ी फिल्म मानी जा रही है। इसमें पहली बार भारतीय सिनेमा के आठ दिग्गज कलाकार साथ नजर आएंगे। फिल्म में अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर, बोमन ईरानी, नीना गुप्ता, सारिका, परिणीति चोपड़ा, डैनी डेंगजोम्पा और नफीसा अली सोढ़ी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 11 नवम्बर 2022 को देशभर में प्रदर्शित होने

वाली है। ऊंचाई के दूसरे नए पोस्टर में अमिताभ बच्चन, अनुपम खेर और बोमन ईरानी चुनौतीपूर्ण ट्रैक से ब्रेक लेते हुए हिमालय में नक्काशीदार चट्टान पर बैठे नजर आ रहे हैं। पोस्टर में बैकग्राउंड में सुन्दर उज्जवल माउंट एवरेस्ट दिखाई दे रहा है। यहां तीनों दोस्तों को घर का खाना खाते हुए देखा जा सकता है, जो इशारा करता है कि राजश्री की फिल्में, दोस्ती, प्यार और पारिवारिक रिश्तों की मजबूती पर आधारित होती हैं, जो फैंस हमेशा राजश्री फिल्मों से उम्मीद करते हैं।

अपारशक्ति और जय को 'गर्मी 2.0'

डीआईडी सुपर मॉम्स समाप्ति के करीब आ पहुंचा है। कंटेस्टेंट वर्षा ने 'गर्मी' गाने पर परफॉर्मेंस दिया।

जज रेमो डिसूजा ने अपारशक्ति खुराना, जय भानुशाली और सभी पतियों से गर्मी का हुक स्टेप करने को कहा। रेमो ने कहा, जय भानुशाली और अपारशक्ति खुराना इस चैलेंज के विजेता है और जब भी मैं इस गाने का रीमेक बनाऊंगा, तो उसमें इन दोनों को कास्ट करूंगा।

100 देशों में फिल्म

ऋतिक रोशन और सैफ अली खान की शीर्षक भूमिका वाली फिल्म विक्रम वेधा भारत की ऐसी पहली फिल्म बनने जा रही है, जो दुनिया के 100 से अधिक देशों में एकसाथ प्रदर्शित की जाएगी। तमिल फिल्म विक्रम वेधा की रीमेक का निर्देशन मूल फिल्म की गायत्री और पुष्कर की जोड़ी ने ही किया है। पिछले दिनों, विक्रम वेधा का गीत भारत के कई शहरों के मल्टीप्लेक्स थिएटरो में प्रदर्शित किया गया। अब इसको 100 से अधिक देशो में प्रदर्शित करने का निर्माण इसी रणनीति का परिणाम लगता है। विक्रम वेधा को भारत के साथ साथ उत्तरी अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, मध्य पूर्व ऐसा के देशों, ऑस्ट्रेलिया और न्यू जीलैण्ड में 30 सितम्बर को प्रदर्शित किया जाएगा। यह यूरोप के 22 देशों में भी प्रदर्शित की जाएगी। इसके अतिरिक्त 27 अफ्रीकी देशो और लैटिन अमेरिकी देशो में भी विक्रम वेधा को जोरशोर के साथ प्रदर्शित करने की तैयारी की जा रही है।

आयुष्मान की ड्रीम गर्ल अनन्या

ऐसा लगता है कि लाइगर की असफलता का प्रभाव फिल्म में विजय देवेराकोंडा की नायिका अनन्या पाण्डेय पर बिलकुल नहीं पड़ा है। जहां एक ओर देवेराकोंडा की एक फिल्म बंद हो गई, वही लाइगर फ्लॉप होने के बाद, अनन्या की फिल्म की घोषणा हो गई। उन्हें और आयुष्मान खुराना को लेकर, निर्माता एकता कपूर ड्रीम गर्ल 2 का निर्माण करने जा रही है। यह 2019 में प्रदर्शित आयुष्मान की फिल्म ड्रीम गर्ल की सीक्वल फिल्म है। ड्रीम गर्ल बॉक्स ऑफिस पर सफल हुई थी। फिल्म में आयुष्मान खुराना की नायिका नुसरत भरु चा को इसके सीक्वल से हाथ धोना पड़ा है। क्योंकि, उनकी जगह अनन्या ने ले ली है। सीक्वल का निर्देशन राज शांडिल्य ही करेंगे। इसको 29 जून 2023 को प्रदर्शित किए जाने की घोषणा भी की गई। सीक्वल में अनु कपूर, परेश रावल, विजय राज, राजपाल यादव, असरानी, मनोज जोशी, सीमा पाहवा, मजोत सिंह और अभिषेक बनर्जी भी सह भूमिकाओं में होंगे।

अतिथि भूतो भवो

देवों के देव महादेव और सिया के राम जैसे धार्मिक शो के निर्देशक हार्दिक गज्जर की दूसरी फिल्म का नाम है अतिथि भूतो भव जैसा की शीर्षक से स्पष्ट है, यह फिल्म भूत की प्रेम कहानी है। श्रीकांत से मक्खन सिंह का भूत मिलता है। वह बताता है कि मक्खन पूर्व जन्म में श्रीकांत का पोता था। वह श्रीकांत से अपनी पूर्व जन्म की प्रेमिका से मिलाने का अनुरोध करता है। भूत की भूमिका में जैकी श्रॉफ और श्रीकांत की भूमिका में प्रतीक गांधी है। 2021 में इसे कनाडा में प्रदर्शित किया जा चुका है। पर भारत में यह सिनेमाघरों का मुह नहीं देख सकी। अब यह फिल्म जी5 पर स्ट्रीम हो रही है।

अ.कां.

सुरों का संग्राम

'रविवार विद स्टार परिवार' फिनाले के सिंगिंग सेंसेशन आ रहे हैं। अनुपमा के सुधांशु पांडे उर्फ वनराज के नीला, लीला और भवानी के संगीत गीतों तक विशेष रूप से अमाल मलिक के पियानो सेट-अप आएगा। नील भट्ट उर्फ विराट, कहते हैं, यह ऐसी यात्रा है, जिसे मैं बहुत दिल से संजो रहा हूं। मेरी यादें बिल्कुल खूबसूरत रही हैं।

टीवी

जीने का तरीका बदलें : भूमि

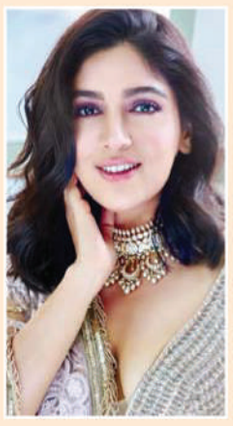

भूमि पेडनेकर सही मायने में क्लाइमेट वॉरियर हैं जो पिछले 3 सालों से पूरी लगन के साथ इस मुहिम से जुड़ी हैं। भूमि कहती हैं, एक्टिंग तो मेरे रोजगार का जरिया है, मैं मानती हूं कि हमें ऑप्टिमिस्ट होना ही चाहिए। हमारे पास लाइफस्टाइल और जीने के तरीके को बदलने के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। हम जिस हवा में सांस लेते हैं, हम जो पानी पीते हैं और हम जिस धरती पर रहते हैं वह नहीं बचेगी। हमारी धरती रहने लायक नहीं रहेगी।

मोहित अबरोल की झलक

सोनी सब का शो 'अलीबाबा दास्तान-ए-काबुल' के मोहित विरोधी किरदार में है। मोहित ने कहा, लंबा ब्रेक लेने के बाद एक्टिंग करना बेहतरीन लग रहा है, खासकर जोरावर के रोल में, यह काफी लेयर्ड किरदार है, इसमें एक्सप्लोर करने के लिए बहुत कुछ है। मुझे हमेशा ऐसे रोल करने में मजा आया है, जिनके पास कोई महत्वपूर्ण मैसेज होता है।

अभिषेक ने फिजिकल ट्रांसफॉर्मेशन किया

अभिषेक बजाज ने टीवी शो से शुरु आत करक फिल्मों में सपोर्टिंग रोल्स करने तक, सब किया। मधुर भंडारकर की वबली बाउंसर के साथ लीडिंग एक्टर के रूप के लिए तैयार हैं। उन्हे तमन्ना भाटिया के साथ पेयर किया गया है। अभिषेक ने फिजिकल ट्रांसफॉर्मेशन भी किया है। बहुत फिट और हेल्थी लाइफ स्टाइल फॉलो करते हैं लेकिन फिल्म के लिए उन्हें ये सब छोड़ना पड़ा। सिक्स पैक एब्स बनाने और बॉडी बिल्डर के लिए मस्कुलर दिखने के लिए बिना शुगर वाली डाइट पर जाना पड़ा, लेकिन फिर चॉकलेट बॉय की तरह दिखने के लिए अपना वजन कम करना पड़ा।

लैंगिक समानता का महत्व : तुषार दलवी

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन का मेरे साईं : श्रद्धा और सबुरी में साईं बाबा (तुषार दलवी) समानता के महत्व के बारे में शिक्षित करते नजर आएंगे। दलवी बताते हैं, पारंपरिक सोच, विश्वास और मानदंड व्यक्ति को कमजोर बनाते हैं और कभी-कभी उसे तोड़ भी देते हैं। सच तो यह है कि स्त्री और पुरु ष में कोई अंतर नहीं है। अगर महिला को पुरु ष के समान ओहदा दिया जाए, तो वो पूरी दुनिया बदल सकती है।

कपिल राधिका व रितेश के साथ

राधिका आप्टे अपनी फिल्म 'विक्रम वेधा' को प्रमोट करने के लिए सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन के शो द कपिल शर्मा शो में पहुंच। उनके साथ सैफ अली खान, योगिता भियानी, रोहित सराफ, सत्यदीप मिश्रा और फिल्म के निर्देशक गायत्री और पुष्कर भी। होस्ट कपिल ने राधिका से जानना चाहा कि क्या यह सच है कि बिल्ली ने उन्हें डेट चुनने में मदद की थी। राधिका बता, दो अलग-अलग लड़के ने मुझसे डेट पर जाने के लिए कहा। उनमें से एक अब मेरा पति है। मेरी रूममेट ने उस बिल्ली की मदद लेने का सुझाव दिया, जो हमेशा आती थी। मैंने तय किया कि यदि बिल्ली ने ट्यूना चुनी तो बेनेडिक्ट (उनके पति) के साथ डेट पर जाएगी। वैसे, उस बात को 12 साल हो चुके हैं। फिल्म 'प्लान ए प्लान बी' के कलाकार रितेश देशमुख, तमन्ना भाटिया, कुशा कपिला और पूनम ढिल्लों हंसी के हंगामे में शामिल होंगे। कपिल ने मजाक में अर्चना से कहा, कुशा कॉमेडी शो में जज रह चुकी हैं। उन्हें कुर्सी पर बैठने का अनुभव है, वो बहुत खूब हंसती हैं और चुटकुले भी सुनाती हैं (अर्चना की ओर इशारा करते हुए) अर्चना ने कटाक्ष किया, रितेश अच्छी कॉमेडी करते हैं, हैंडसम दिखते हैं, हंसते हैं और लोगों को हंसाते हैं, उनका बजट भी मुनासिब है। इस पर कपिल कहते हैं, रितेश के अच्छे संस्कार हैं और वो किसी की कुर्सी नहीं लेते। उन्होंने कड़ी मेहनत से नाम कमाया है। रितेश ने, मैं राजनीतिक परिवार से हूं, इसलिए कुर्सी के बारे में बात मत करो।

निधि उत्तम मां के किरदार में

एण्डटीवी 'दूसरी मां' में नेहा जोशी और आयुष्य भानुशाली हैं। इस शो में कृष्णा की असली मां का किरदार निभाने के लिए निधि उत्तम को लिया है, जो माला का किरदार निभाएंगी। निधि ने कहा, कृष्णा की मां माला सिंगल, अविवाहित महिला है। उसने10 साल पहले अशोक को छेड़ दिया था। अशोक के पिता शादी के लिए तैयार नहीं थे। माला बस इतना चाहती है कि उसकी मौत के बाद उसके बच्चे को किसी तरह का कष्ट नहीं सहना पड़े। ।

बाल मजदूरी पर सामाजिक संदेश

'वागले की दुनिया' सामाजिक मुद्दों को उठाता है और बाल मजदूरी के प्रभाव पर रोशनी डाली। सुमीत राघवन, जो राजेश वागले का किरदार निभा रहे हैं, ने कहा बाल मजदूरी चिंतनीय विषय है, क्योंकि यह बच्चों को मानसिक एवं शारीरिक दोनों रूप से प्रभावित करता है और उन्हें स्वस्थ एवं खुशहाल बचपन से वंचित कर देता है। जिन लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है, वो बाल मजदूरी को अपने बच्चों के लिए रोजगार के बेहतरीन अवसर के रूप में देखते हैं।

फाल्गुनी पाठक ने मचाई धूम

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन पर इंडियन आइडल 13 म्यूजिक फेस्टिवल एपिसोड के साथ गरबा क्वीन फाल्गुनी पाठक नवरात्रि मनाएंगी। यह नेहा कक्कड़, हिमेश रेशमिया और विशाल ददलानी भी मजा लेंगे। कंटेस्टेंट काम्या लिमये ने कहा, मुझे गरबा खेलना बहुत पसंद है और फाल्गुनी पाठक मैम के साथ गरबा की धुन पर डांस करना मेरा सपना था।

रचना ने नवरात्रि को लेकर बताई बातें

रचना मिस्त्री, स्टार भारत के शो 'ना उम्र की सीमा हो' में विधि का किरदार निभा रही हैं। रचना पूरी तरह से गुज्जू हैं और नवरात्रि मनाने को लेकर अपना उत्साह साझा किया। रचना कहती हैं, मुझे नवरात्रि का त्योहार बहुत पसंद है और मुझे गरबा खेलना बहुत पसंद है । मैं बहुत उत्साहित हूं। हमारे यहां मिलापानी देवी का मंदिर है, इसलिए समय निकालकर गरबा खेलने का फैसला किया है। मैं गरबा खेलना पसंद करती हूं। इसलिए, सभी के साथ खेलूंगी।

दबाव के साथ आए : हिमेश

सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन ने इंडियन आइडल के 13वें सीजन का प्रीमियर किया। हिमेश रेशमिया ने को-जजेस और इससे जुड़ी बहुत-सी बातों पर चर्चा की। मैं दावे से कह सकता हूं कि यह शो पिछली बार जैसा ही मनोरंजक होगा, क्योंकि हमें देश भर से बड़ी तादाद में टैलेंट मिले हैं। मैंने महसूस किया कि असली संघर्ष परफॉर्म करने के लिए कड़ी धूप में लंबी लाइनों में खड़े रहने का था, जहां वो दूर-दूर से अपना शत-प्रतिशत प्रदर्शन करने के दबाव के साथ आए थे।

पूरे किए 50 एपिसोड

स्टार भारत के शो 'ना उम्र की सीमा हो' ने 50 एपिसोड पूरे कर लिए। देव के रूप में मुख्य भूमिका निभाने वाले इकबाल खान कहते हैं, मैं बहुत खुश हू, हमने कुल 50 एपिसोड पूरे कर लिए हैं। विधि की भूमिका निभाने वाली रचना मिस्त्री कहती हैं, हम और उम्मीद कर रहे हैं, लेकिन हर छोटी चीज का जश्न मनाना चाहिए।

रसिका दुग्गल नजर आएंगी लिटिल थॉमस में

फिल्म लिटिल थॉमस में अहम भूमिका में नजर आएंगी अभिनेत्री रसिका दुग्गल। रसिका दिल्ली क्राइम सीजन 2 में नीति सिंह की भूमिका है। वह अब ड्रामा कॉमेडी फिल्म 'लिटिल थॉमस' के लिए तैयार हैं। लिटिल थॉमस राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक कौशल ओझा द्वारा निर्देशित फिल्म है। रसिका ने कहा, लटिल थॉमस गोवा के परिवार की कहानी है। मुझे लगता है कि हम कुछ खास बना रहे हैं।

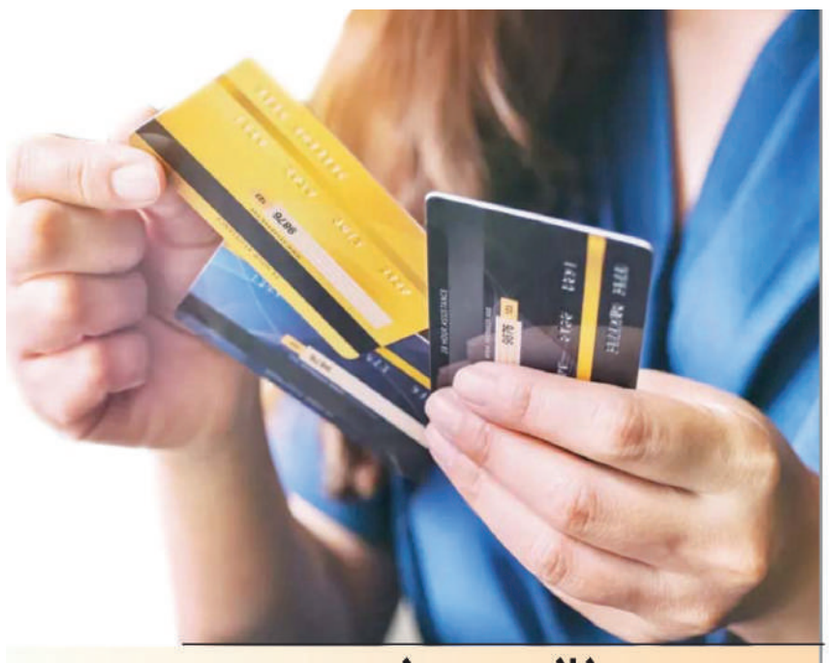

अक्टूबर से लागू होंगे

डेबिट व क्रेडिट कार्ड के नए नियम

कमाल अहमद रूमी

आर्थिक पत्रकार

बीते कुछ वर्षों में डेबिट व क्रेडिट कार्ड से होने वाली धोखाधड़ी की हजारों शिकायतें सामने आई हैं। ऐसी समस्याओं को लेकर देश का केंद्रीय बैंक डेबिट व क्रेडिट कार्ड धारकों के धन की सुरक्षा को लेकर समय-समय पर नियमों में बदलाव करके कार्ड से ट्रांजेक्शन को ज्यादा सुरक्षित बनाने का प्रयास करता रहा है। अपने इन्हीं प्रयासों के तहत भारतीय रिजर्व बैंक ने कार्डधारकों के हितों की रक्षा के खातिर नियमों में एक बार फिर कुछ बदलावों का ऐलान किया है। केंद्रीय बैंक ने एक अक्टूबर से डेबिट व क्रेडिट कार्ड से जुड़े नियमों में कुछ बदलाव का ऐलान किया है। नए नियम लागू हो जाने के बाद एक तरफ जहां कार्ड से ट्रांजेक्शन ज्यादा सुरक्षित हो जाएगा वहीं कार्ड जारी करने वाली वित्तीय संस्था या बैंक बिना ग्राहक की अनुमति के कार्ड में कोई अतिरिक्त सुविधा जोड़ने या किसी सुविधा को वापस लेने का निर्णय नहीं कर सकेंगे।

लागू होगा टोकनाइजेशन सिस्टम

कार्ड टोकनाइजेशन सिस्टम वैसे तो एक जनवरी 2022 को लागू होने वाला था लेकिन बैंकों द्वारा तकनीकी तौर पर तैयारियां पूरी न कर पाने के कारण इस सुविधा को जून 200 तक टाल दिया गया था। जून में भी किन्हीं कारणों से यह सुविधा लागू नहीं हो सकी थी जिसके बाद केंद्रीय बैंक ने इस सुविधा को एक अक्टूबर से हर हाल में लागू करने का फैसला किया है। इस सुविधा के तहत जब भी कोई कार्डधारक आनलाइन, प्वाइंट आफ सेल मशीन या ऐप से कोई खरीदारी अथवा कोई अन्य ट्रांजेक्शन करेगा तो भुगतान संबंधी पूरी प्रक्रिया इन्क्रिपटेड होगी।

अभी तक किसी भी ट्रांजेक्शन के वक्त जब कोई व्यक्ति अपने डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करता था तो उसे 16 अंक वाली कार्ड संख्या, कार्ड की एक्सपायरी डेट, ट्रांजेक्शन पिन आदि जानकारी भरनी पड़ती थी। यह सारी जानकारी ऐप या वेबसाइट चलाने वाली कंपनी के पास सेव हो जाती थी जिसके चलते कार्ड के जरिए धोखाधड़ी की संभावना बनी रहती थी। टोकनाइजेशन सिस्टम के तहत कार्ड से जुड़ी जानकारी जैसे कार्ड संख्या, पिन व एक्सपायरी डेट आदि इन्क्रिप्टेड यानी कोड वर्ड में होगी जिसे टोकन कहा जाएगा। कार्डधारक जब भी किसी ट्रांजेक्शन के लिए टोकन का अनुरोध करेगा तो हर बार उसकी यह टोकन संख्या यूनिक होगी। इससे कार्ड से जुड़ी जानकारी किसी भी वेबसाइट या ऐप पर सेव नहीं हो सकेगी और कार्ड से ट्रांजेक्शन ज्यादा सुरक्षित हो जाएगा। टोकन जारी करने का काम मास्टर कार्ड और वीजा जैसी वित्तीय संस्थाएं करेंगी यानी जिस कंपनी का कार्ड होगा वही इसका टोकना जारी करेगा लेकिन फिलहाल टोकनाइजेशन सिस्टम के लिए किसी तरह का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा।

तीस दिन में रद्द होगा क्रेडिट कार्ड

अक्सर देखा जाता है कि लोग शौक में क्रेडिट कार्ड ले लेते हैं और उसको अपने वालेट में सजा लेते हैं लेकिन उसका इस्तेमाल करने यहां तक कि उसका एक्टिवेट करने की भी जरूरत नहीं समझते। कार्ड जारी करने वाली कुछ वित्तीय संस्थाएं ऐसे लोगों के कार्ड पर सालाना आधार पर विभिन्न शुल्क नवीनीकरण शुल्क, कार्ड पर मिलने वाले इंश्योरेंस प्रीमियम इत्यादि जोड़ती जाती हैं। इससे चार पांच साल में एक बड़ी रकम बन जाती है। जब रकम ज्यादा हो जाती है तो यह कंपनियां कार्डधारक को नोटिस भेजकर इसका भुगतान करने को कहती हैं। ऐसे में कार्डधारक का एक ही जवाब होता है कि जब उसने कार्ड इस्तेमाल ही नहीं किया तो वह शुल्क के रूप में यह भारी भरकम रकम का भुगतान क्यों करे। इसके बाद यह कंपनियां अपनी रकम को लेकर कार्डधारक को मानसिक रूप से प्रताड़ित भी करती हैं। इस तरह के हजारों मामले सामने आने के बाद केंद्रीय बैंक ने इसपर संज्ञान लिया और बैंकों को निर्देश दिया कि क्रेडिट कार्ड लेने वाला व्यक्ति अगर 30 दिन के भीतर कार्ड एक्टिवेट न करे तो कार्ड को स्वतः रद्द समझा जाएगा। हालांकि इसके लिए कंपनियों को कार्ड एक्टिवेट करने के लिए कम से कम एक बार ग्राहक से सहमति लेने की अनुमति दी गई है। अगर उसके बाद भी ग्राहक अपना कार्ड एक्टिवेट नहीं कराना चाहता है तो कार्ड स्वतः रद्द हो जाएगा।

क्रेडिट लिमिट बढ़ाने पर रोक

अक्सर देखा जाता है कि बैंक अपने क्रेडिट कार्ड होल्डर की कार्ड लिमिट में समय-समय पर इजाफा करते रहते हैं। इसके लिए उन्हें किसी मंजूरी की भी जरूरत नहीं होती। लेकिन अब बैंक या वित्तीय संस्थान ऐसा नहीं कर सकेंगे। किसी भी कार्डधारक के कार्ड पर क्रेडिट लिमिट बढ़ाने या घटाने से पहले उन्हें कार्डधारक की अनुमति लेनी होगी। बिना अनुमति के लिमिट में कोई फेरबदल नहीं किया जा सकेगा।

डेबिट और क्रेडिट कार्ड से जुड़े नए नियम एक अक्टूबर से बदलने वाले हैं। नए नियम लागू होने के बाद आपके डेबिट व क्रेडिट कार्ड के जरिए होने वाली धोखाधड़ी पर लगाम लगाई जा सकेगी। नए नियमों के तहत कार्ड से पेमेंट करने पर टोकनाइजेशन सिस्टम लागू हो जाएगा, क्रेडिट कार्ड यूज नहीं किया है तो खुद ब खुद रद्द हो जाएगा और बैंक बिना आपकी अनुमति के क्रेडिट कार्ड लिमिट बढ़ा नहीं सकेंगे। आइए देखते हैं कि नए नियमों का कार्डधारक पर क्या असर होगा

डीमैट खाते के बिना नहीं मिलेगा बीमा

अपूर्व कुमार दत्त

बीमा विशेषज्ञ

बीमा के कागजात संभाल कर रखने की समस्या से जल्द ही छुटकारा मिलने वाला है। बीमा नियामक इरडा ने निर्देश दिया है कि दिसम्बर के बाद किसी भी तरह की बीमा पालिसी की हार्ड कापी यानी कागजी प्रति नहीं मिलेगी बल्कि इसे डिजिटल फार्मेट में उपलब्ध कराया जाएगा। फिलहाल यह व्यवस्था शेयर बाजारों के लिए लागू है लेकिन दिसम्बर के बाद से यह व्यवस्था बीमा क्षेत्र पर भी लागू हो जाएगी। अतः इस व्यवस्था के लागू होने से पहले आपको अपना डीमैट अकाउंट खुलवा लेना चाहिए

नए साल से सभी तरह के बीमा खरीदने वालों के लिए डीमैट अकाउंट रखना अनिवार्य हो जाएगा। इसके लिए बीमा नियामक इरडा ने दिशा निर्देश जारी कर दिये हैं दिसम्बर के बाद से कोई भी बीमा पालिसी कागजी रूप में नहीं मिलेगी। बीमा कंपनियां पालिसी को डिजिटल फार्मेट में पालिसी खरीदने वाले के डीमैट अकाउंट में उपलब्ध कराएंगी। बीमा कंपनियां इस नए नियम पर तेजी से काम कर रही हैं ताकि सभी पालिसीधारकों के डीमैट अकाउंट खुलवाए जा सकें। अगर आपके पास भी किसी तरह की बीमा पालिसी है तो आपको भी अपना डीमैट अकाउंट तुरंत खुलवा लेना चाहिए ताकि पालिसी के नवीनीकरण, मैच्यारिटी अथवा क्लेम किए जाने के वक्त किसी तरह की मुश्किल न हो।

क्या है डीमैट अकाउंट

डीमैट अकाउंट की व्यवस्था फिलहाल शेयर बाजारों में लागू है। अगर कोई व्यक्ति किसी कंपनी के शेयर खरीदता है तो कंपनी द्वारा वह शेयर डिजिटल फार्मेट में खरीदार के डीमैट अकाउंट में ट्रांसफर कर दिये जाते हैं। शेयर बाजार में कागजी दस्तावेज की शक्ल में कोई शेयर ट्रांसफर नहीं किए जाते। ठीक यही व्यवस्था अब बीमा कंपनियों के लिए भी होगी। बीमा कंपनियां भी अब कागजी रूप में किसी भी तरह की बीमा पालिसी नहीं जारी करेंगी बल्कि खरीदार द्वारा खरीदे गए बीमा के पूरे विवरण को उसके डीमैट अकाउंट में ट्रांसफर कर देंगी।

क्यों पड़ी जरूरत

बीमा पालिसी को डिजिटल मोड में मुहैया कराने की योजना का मुख्य उद्देश्य यह है कि एक बार डीमैट अकाउंट में पालिसी आ जाने के बाद इसके नवीनीकरण, मैच्योरिटी के वक्त पालिसीधारक के बैंक खाते में किया जाने वाला भुगतान और क्लेम किए जाने की प्रक्रिया काफी सरल हो जाएगी। खासकर स्वास्थ्य बीमा या दुर्घटना बीमा के मामले में क्लेम दाखिल करना और कंपनियों द्वारा इसका निपटान किया जाना काफी आसान हो जाएगा।

डीमैट अकाउंट को रखें सुरक्षित

तमाम सरकारी व गैर सरकारी प्रक्रियाएं आनलाइन या डिजिटल होने से हैकिंग व आनलाइन धोखाधड़े के खतरे भी बढ़े हैं। डीमैट अकाउंट भी इससे अछूते नहीं हैं चाहे वह शेयर बाजार के लिए हों या बीमा पालिसी रखने के लिए हों। आनलाइन फ्राड का खतरा हमेशा बना रहता है। इसलिए डीमैट खाता खोले जाते वक्त अपना मोबाइल नंबर अवश्य अपडेट करा लें ताकि बीमा कंपनियों द्वारा दी जाने वाली अपडेट का अलर्ट मैसेज आपको समय-समय पर मिलता रहे। इसके अलावा अपने डीमैट खाते का पासवर्ड समय-समय पर बदलते रहें और इसे किसी से भी न शेयर करें।

50 करोड़ हैं मौजूदा पालिसीधारक

एक अनुमान के मुताबिक देश में 50 करोड़ से ज्यादा बीमा पालिसियां पहले से ही मौजूद हैं और इन सभी पालिसीधारकों को डीमैट अकाउंट दिसम्बर से पहले खोले जाने हैं। इन सभी पालिसीधारकों को अपने डीमैट अकाउंट जल्द खुलवा लेने चाहिए क्योंकि अंतिम समय में इसके लिए भारी भीड़ उमड़ सकती है। अगर इस भीड़ में आप अपना डीमैट अकाउंट न खुलवा सके तो आपकी बीमा पालिसी के नवीनीकरण में दिक्कतें आ सकती हैं।

कहां खुलवाएं डीमैट खाता

बीमाधारकों को डीमैट खाता खुलवाने के लिए इधर-उधर भटकना नहीं होगा बल्कि बैंकों और लाइसेंस प्राप्त एजेंसियों आदि में डीमैट खाते खुलवाए जा सकते हैं। वर्तमान में शेयरों में निवेश करने वाले लोग बैंकों और सेबी से मान्यता प्राप्त ब्रोकरों के यहां अपने डीमैट खाते खुलवा रहे हैं। इन खातों का रखरखाव नेशनल सिक्युरिटीज डिपाजिटरी लिमिटेड और सेंट्रल डिपाजिटरी सर्विसेज इंडिया द्वारा किया जाएगा।

किन दस्तावेजों की होगी जरूरत

डीमैट अकाउंट खुलवाने के लिए वही सारी प्रक्रिया पूरी करनी होगी जो एक बैंक खाता खुलवाने के लिए करनी होती है। हालांकि बैंक खाते के मुकाबले डीमैट खाता खुलवाने में कुछ आसानियां होंगी। खाता खुलवाने वाले व्यक्ति को अपना पैन और आधार देना जरूरी होगा।

बीमाधारक कैसे आपरेट करेगा खाता

डीमैट खाता खुल जाने के बाद जब भी बीमाधारक इस खाते में रखी अपनी पालिसी के बारे में कुछ जानकारी चाहेगा तो उसे इस खाते में अपनी आईडी और पासवर्ड डालकर लागइन करना होगा। यह आईडी और पासवर्ड बीमा कंपनी द्वारा मुहैया कराया जाएगा। खाते में लागइन के लिए आधार से जुड़ी बायोमीट्रिक पहचान और ओटीपी का भी इस्तेमाल किया जा सकेगा।

पुराने ग्राहक भी खुलवा लें खाता

नए दिशा निर्देश के अनुसार बीमा कंपनियां पूर्व में जारी कर चुकी बीमा पालिसी को भी डिजिटल रूप में बदलने पर काम कर रही हैं। इसलिए सभी पालिसीहोल्डर जिनके पास पहले से बीमा पालिसी है अपने डीमैट खाते तुरंत खुलवा लें अन्यथा पालिसी के नवीनीकरण अथवा क्लेम में दिक्कतें पैदा हो सकती हैं।

फिलहाल फ्री, बाद में पड़ेगा शुल्क

डीमैट खाते फिलहाल मुफ्त में खोले जा रहे हैं लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि बाद में यह खाते खोले जाने के वक्त 1000 से 1500 रुपए तक का शुल्क भी लग सकता है। अगर आपके पास न तो शेयर हैं और न ही बीमा पालिसी तो भी आपको मुफत में डीमैट खाता खुलवा लेना चाहिए क्योंकि बाद में हो सकता है इसपर शुल्क लगने लगे।

त्योहारी सीजन में उठाएं

'बाई नाऊ, पे लेटर'

सुविधा का फायदा

त्योहारी सीजन बस शुरू होने ही वाला है। नवरात्र की शुरुआत के साथी त्योहारी यानी फेस्टिव सीजन की शुरुआत भी हो जाती है। इसे देखते हुए ई कामर्स कंपनियों ने आनलाइन शापिंग के शौकीन लोगों के लिए आनलाइन सेल या फेस्टिव सीजन सेल का ऐलान भी किया है। फ्लिपकार्ट और अमेजन समेत दर्जनों कंपनियों ने ग्राहकों को रिझाने के लिए जहां आनलाइन सेल का आयोजन किया है वहीं कई आकर्षक आफर्स का ऐलान भी किया है। ई कामर्स कंपनियों के आकर्षक आफर और समय-समय पर आनलाइन सेल का आयोजन किए जाने से डेबिट व क्रेडिट कार्ड के जरिए शापिंग का चलन भी बढ़ा है। विभिन्न पेमेंट ऐप, इंटरनेट बैंकिंग और डेबिट व क्रेडिट कार्ड के जरिए शापिंग करने वालों के लिए तो यह कंपनियां पहले से ही काफी आफर पेश कर चुकी हैं। इन आफर में किसी खास बैंक के क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने पर छूट, किसी बैंक के डेबिट कार्ड के जरिए भुगतान करने पर बोनस प्वाइंट और किसी बैंक की नेट बैंकिंग के जरिए शापिंग का पेमेंट करने पर काफी छूट मिल जाती है। इसके अलावा विभिन्न पेमेंट ऐप के जरिए भुगतान करने पर भी आकर्षक छूट की पेशकश की जा रही है। लेकिन इन सबसे इतर हाल ही में ई कामर्स कंपनियों ने अपने ग्राहकों के लिए नई सुविधा 'बाई नाऊ एंड पे लैटर' शुरू की है। आइए देखते हैं कि ई कामर्स कंपनियों द्वारा आनलाइन शापिंग के लिए शुरू की गई नई सुविधा 'बाई नाऊ एंड पे लेटर' की पेशकश में क्या खास है।

क्या है बाई नाऊ एंड पे लेटर'

'बाई नाऊ एंड पे लेटर' यानी अभी खरीदिये और भुगतान बाद में कीजिए। जी... हां... ई कामर्स कंपनियों द्वारा शुरू की गई इस नई सुविधा में ग्राहक किसी भी ई कामर्स कंपनी से जब चाहे खरीदारी कर सकता है लेकिन कीमत की अदायगी बाद में करने का विकल्प उसको मिलता है। इस सुविधा के तहत ग्राहक को भुगतान करने के लिए 15 दिन से 45 दिन तक का समय मिलता है। भुगतान की तिथि वाले दिन डेबिट, क्रेडिट कार्ड, पेमेंट ऐप या बैंक खाते से स्वतः भुगतान हो जाता है। इस सुविधा के तहत ईएमआई का विकल्प भी मिल रहा है। इस विकल्प में ग्राहक चाहे तो तीन, छह या 12 किस्तों में भी भुगतान कर सकता है। निश्चित तिथि पर ग्राहक के बैंक खाते या पेमेंट ऐप में पैसे नहीं हैं तो भुगतान नहीं हो सकेगा और इसके बदले में ग्राहक को ब्याज या पेनाल्टी भी देनी पड़ सकती है। पेनाल्टी लगने के अलावा भुगतान में देरी से ग्राहक का सिबिल स्कोर भी प्रभावित हो सकता है।

केवाईसी प्रक्रिया जरूरी

आनलाइन शापिंग करने वाले सभी ग्राहकों के लिए यह सुविधा उपलब्ध है लेकिन इसके लिए आपको उस वेबसाइट या ऐप पर केवाईसी की प्रक्रिया पूरी करनी होगी तभी इस सुविधा का लाभ उठाया जा सकता है। केवाईसी की सुविधा के तहत आधार, पैन और वोटर आईडी की डिजिटल कापी का इस्तेमाल किया जा सकता है। ग्राहक शापिंग करने के बाद निर्धारित तिथि से पूर्व बैंक ट्रांसफर, चेक, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड या सीधे बैंक खाते से भुगतान कर सकते हैं। ई कामर्स कंपनियों की इस स्कीम का लाभ गैजेट्स की खरीद, फूड प्रोडक्ट, यात्रा टिकट बुकिंग, गैस बुकिंग, बिलों के भुगतान और ई कामर्स कंपनियों के प्लेटफार्म से राशन की खरीद आदि में भी किया जा सकता है।

ई कामर्स कंपनियां ग्राहकों को रिझाने के लिए नित नए आफर और नई स्कीमें लेकर आती हैं। हाल ही में इन कंपनियों ने अपने ग्राहकों के लिए बाई नाऊ, पे लेटर स्कीम भी शुरू की है। अगर आप भी मौजूदा त्योहारी सीजन में आनलाइन शापिंग की योजना बना रहे हैं तो आप ई कामर्स कंपनियों की इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं

योजना के क्या हैं लाभ

यह योजना वास्तव में झटपट लोन जैसी ही है। इसमें ग्राहक द्वारा की गई खरीदारी का भुगतान वित्तीय सेवा देने वाली कंपनियों द्वारा विक्रेता को तुरंत कर दिया जाता है। इसके लिए ई कामर्स कंपनियों और विक्रेता के बीच एक करार होता है। करार के तहत ग्राहक द्वारा शापिंग किए जाने के बाद ई कामर्स कंपनी के प्लेटफार्म पर अपने उत्पाद बेचने वाले विक्रेता को वित्तीय सेवा कंपनी द्वारा तुरंत भुगतान कर दिया जाता है। बाद में यह भुगतान जब ई कामर्स कंपनी को मिल जाता है तो इसे वह वित्तीय सेवाएं देने वाली कंपनी को ट्रांसफर कर देती हैं। कई मामलों में ग्राहक सीधे तौर पर वित्तीय कंपनी को भुगतान कर सकते हैं।

क्रेडिट कार्ड जैसी है यह सुविधा

यह सुविधा क्रेडिट कार्ड जैसी ही है क्योंकि क्रेडिट कार्ड पर भी कार्ड धारक को 45 दिन तक का समय भुगतान के लिए मिल जाता है। दोनों ही सुविधाओं में निर्धारित तिथि तक ग्राहक से कोई ब्याज नहीं वसूला जाता लेकिन निर्धारित तिथि के बाद जो ब्याज यह कंपनियां वसूलती हैं वह बहुत ज्यादा होता है। क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल किसी भी चीज की खरीदारी या बिल के भुगतान में किया जा सकता है। जबकि इस योजना के तहत सिर्फ उन्हीं आनलाइन दुकानों से सामान खरीदा जा सकता है जिन्होंने बाई नाऊ एंड पे लेटर योजना का विकल्प अपने प्लेटफार्म पर दे रखा है। क्रेडिट कार्ड से शापिंग करने पर कुछ छिपे हुए शुल्क इत्यादि भी कंपनियां वसूलती हैं जबकि बाई नाऊ पे लेटर विकल्प के तहत ऐसे कोई शुल्क नहीं होते जो हिडेन हों। अगर कोई व्यक्ति 'बाई नाऊ' सुविधा अपनाता है तो इसके लिए उसको केवाईसी के अलावा अन्य कोई औपचारिकता पूरी नहीं करनी पड़ेगी जबकि क्रेडिट कार्ड बनवाना बेहद कठिन काम है क्योंकि इसमें कंपनियां कई सारी औपचारिकताएं पूरी करवाती हैं।

पर्सनल लोन से भी बेहतर है स्कीम

बाई नाऊ पे लेटर स्कीम किसी बैंक के पर्सनल लोन से बेहतर लगती है। चूंकि पर्सनल लोन लेने के तुरंत बाद ही उसपर ब्याज लगने लगता है जबकि इस स्कीम में 45 दिन तक कोई ब्याज नहीं लगता। हालांकि पर्सनल लोन लेने के बाद व्यक्ति लोन की रकम जब चाहे, जहां चाहे खर्च कर सकता है जबकि 'बाई नाऊ' सुविधा के तहत सिर्फ निर्धारित प्लेटफार्म पर ही खरीदारी की जा सकती है। ■

रोजर फेडरर के विदाई मैच में रो पड़े नडाल

अंतिम मैच में नडाल के साथ खेलते हारे मैच

लंदन। स्विट्जरलैंड के टेनिस स्टार रोजर फेडरर ने लेवर कप 2022 के युगल मुकाबले में हार के बाद नम आंखों के साथ टेनिस को अलविदा कहा। आखिरी मैच में फेडरर और उनके साथी स्पेन के राफेल नडाल को अमेरिका के फ्रांसेस टियाफो और जैक सॉक की जोड़ी ने 4-6, 7-6 (2), 11-9 शिकस्त दी। इस मुकाबले मे मायने हार और जीत से कुछ अलग थे। यह विश्व टेनिस पर लंबे समय तक राज करने वाले फेडरर को विदाई देने का अवसर था।

रोजर फेडरर ने मैच के बाद दर्शकों का अभिवादन स्वीकार किया। उनके आखिरी मैच के बाद नोवाक जोकोविच सहित कई खिलाड़ियों ने कंधे पर उठाकर घुमाया। फेडरर टेनिस के कई बड़े खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा रहे हैं। हालांकि, आखिरी मैच में हार दर्द उनकी आंखों में झलक रहा था। फेडरर के आखिरी मैच के दौरान उनकी पत्नी मिरका भी बहुत भावुक दिखीं। मिरका ने फेडरर को गले लगाया और उन्हें शांत करने की कोशिश की। अपने आखिरी मैच के दौरान फेडरर काफी भावुक थे। वह लगातार रोते रहे। फेडरर के विरोधी खिलाड़ी भी इस मैच में बेहद भावुक थे और उनके संन्यास से दुखी थे। रोजर फेडरर टेनिस जगत में पिछले दो दशक में सबसे चर्चित नाम थे। उनका टेनिस करियर 24 साल लंबा रहा। क्रिकेट के भगवान कहे जाने वाले सचिन तेंदुलकर का करियर भी इतना ही लंबा रहा था। स्विजरलैंड के इस स्टार खिलाड़ी ने पिछले सप्ताह घोषणा की थी कि वह इस तीन दिवसीय प्रतियोगिता के बाद टेनिस से संन्यास ले लेंगे। फेडरर को पिछले साल विंबलडन के क्वॉर्टर फाइनल में हार के बाद अपने दाहिने घुटने के तीन ऑपरेशन कराने पड़े थे। इसके बाद वह कोर्ट पर नहीं उतर पाए और इस तरह से विंबलडन का वह मैच उनका आखिरी एकल मैच साबित हुआ।

फेडरर ने जीते 103 एकल खिताब

41 वर्षीय फेडरर ने अपने करियर में अपने करियर में 20 ग्रैंड स्लैम खिताब जीते जिनमें विंबलडन में आठ, ऑस्ट्रेलियाई ओपन में छह, अमेरिकी ओपन में पांच और फ्रेंच ओपन में एक खिताब शामिल है। फेडरर ने कुल मिलाकर 103 एकल खिताब जीते और वह 310 सप्ताह तक एटीपी रैंकिंग में नंबर एक पर काबिज रहे। वह सबसे ज्यादा ग्रैंड स्लैम जीतने वाले खिलाड़ियों की सूची में राफेल नडाल 22 खिताब और नोवाक जोकोविच 21 खिताब के बाद तीसरे पायदान पर हैं। रोजर ने अपना आखिरी ग्रैंड स्लैम 2018 में ऑस्ट्रेलिया ओपन के रूप में जीता था।

यह खेल की सबसे खूबसूरत तस्वीर: विराट कोहली

भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली ने नडाल और फेडरर की तस्वीर के साथ ट्वीट करते हुए लिखा, किसी ने सोचा नहीं होगा कि दो प्रतिद्वंदियों के दिल में एक दूसरे के लिए इतना प्यार हो सकता है और वह साथ ही एक-दूसरे के लिए ऐसा महसूस कर सकते है। यही खेल की सबसे बड़ी खूबसूरती है। यह फोटो मेरे लिए अभी तक की सबसे अच्छी फोटो है जब आपके साथी और आपके दोस्त आपके लिए रोते है तो आप जानते है कि भगवान ने जो आपको टैलेंट दिया है उससे आप क्या कर पाए है। इन दोनों खिलाड़ियों के लिए सम्मान के सिवा और कुछ नहीं है।

ऐतिहासिक सीरीज जीत के साथ झूलन ने कहा... अलविदा

भारतीय टीम ने इंग्लैंड को उन्हीं की सरजमीं पर पहली बार क्लीन स्वीप किया

लंदन। भारत ने दीप्ति शर्मा (68 नाबाद) और स्मृति मंधाना (50) के अर्धशतकों के बाद रेणुका सिंह (29/4) की शानदार गेंदबाजी की बदौलत इंग्लैंड को तीसरे महिला एकदिवसीय मैच में शनिवार को 16 रन से हराकर तीन मैचों की सीरीज मे क्लीन स्वीप की। इस जीत के साथ भारतीय महिला टीम ने अपने स्टार खिलाड़ी झूलन गोस्वामी को ऐतिहासिक विदाई दी है। यह पहला मौका है जब भारतीय महिलाओं ने इंग्लैंड की महिला टीम को वनडे सीरीज में उनके घर पर क्लीन स्वीप किया है।

इंग्लैंड को 50 ओवर में 170 रन का लक्ष्य दिया, जिसके जवाब में इंग्लैंड 153 रन पर ऑलआउट हो गयी। भारत ने इंग्लैंड के सात बल्लेबाजों को 65 रन पर पवेलियन भेज दिया था, लेकिन शारलोट डीन (47) और एमी जोन्स (28) ने रोमांचक मैच में इंग्लैंड के संघर्ष का प्रतिनिधित्व किया। डीन-जोन्स ने आठवें विकेट के लिए 38 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी की। इसके बाद डीन (47) ने फ्रेया डेविस के साथ 10वें विकेट के लिये 35 रन भी जोड़े, लेकिन वह दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से रनआउट हो गयीं और भारत ने 16 रन से मैच जीत लिया। इंग्लैंड जब 170 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी तो रेणुका सिंह ने टैमी बॉमोंट (08), एमा लैंब (21) और सोफिया डंकली (07) के रूप में विपक्षी टीम के शीर्ष तीन बल्लेबाजों को पवेलियन लौटा दिया। फ्रेया केंप के रूप में इंग्लैंड का सातवां विकेट 65 रन पर ही गिर गया था, लेकिन कप्तान जोन्स और डीन ने अपनी टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचाया। जब इंग्लैंड को 17 रन की आवश्यकता थी और डेविस (10 नाबाद) विकेट पर थीं। तब नॉन-स्ट्राइकर छोर पर खड़ी डीन क्रीज से बाहर निकल आयीं और गेंदबाजी कर रही दीप्ति ने उन्हें आउट कर दिया।

झूलन का करियर

प्रारूप	मैच	विकेट
टेस्ट	12	44
वनडे	204	255
टी-20	68	56

मंधाना ने अर्धशतकीय पारी खेलकर भारतीय टीम को संभाला

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम की बिखरती हुई पारी को स्मृति और दीप्ति ने सहारा दिया। सलामी बल्लेबाज स्मृति ने 79 गेंदों पर पांच चौकों की सहायता से 50 रन बनाए, जबकि दूसरे छोर से विकेट गिरते रहे। स्मृति के रूप में भारत का पांचवा विकेट गिरने के बाद क्रीज पर आयी दीप्ति ने 106 गेंदे खेलकर सात चौकों के साथ नाबाद 68 रन बनाये। उनका साथ देते हुए पूजा वस्त्राकर ने 22(38) रन की पारी खेली और भारत को 45.2 ओवर में ऑलआउट होने से पहले 169 रन के सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचाया।

झूलन को मिला गार्ड ऑफ ऑनर

इंग्लैंड के खिलाफ करियर के अंतिम मुकाबले में झूलन को मेजबान टीम की खिलाड़ियों ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। मैच के 40वें ओवर में नौवें नंबर पर बल्लेबाजी करने उतरीं महिला क्रिकेट की अब तक की सबसे बड़ी खिलाड़ियों में से एक 39 वर्षीय झूलन को इंग्लैंड की क्रिकेटरों ने प्रतिष्ठित लॉर्ड्स मैदान में दो पंक्तियों में खड़े होकर सम्मान दिया। इंग्लैंड की खिलाड़ियों के सम्मान से भावुक झूलन ने भी मेजबान खिलाड़ियों का सम्मान स्वीकार करने के लिए कृतज्ञता में अपना दाहिना हाथ उठाया। इंग्लैंड की खिलाड़ी इस दौरान ताली बजा रहीं थी। इंग्लैंड क्रिकेट ने भी झूलन के लिए एक संदेश दिया और उन्हें नवोदित क्रिकेटरों के लिए प्रेरणा बताया।

झूलन गोस्वामी की विदाई मैच में रो पड़ीं हरमनप्रीत कौर

इंग्लैंड के खिलाफ भारतीय महिला क्रिकेट टीम की दिग्गज तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी के आखिरी मैच के दौरान कप्तान हरमनप्रीत कौर काफी भावुक हो गई हैं। कप्तान हरमनप्रीत ने ने झूलन के आखिरी मैच में उन्हें टॉस के लिए भेज विदाई सम्मान भी दिया। बीसीसीआई ने तीसरे वनडे की भारतीय महिला टीम कुछ तस्वीरें शेयर की है। इस तस्वीर में भारतीय टीम के खिलाड़ियों को देखा जा सकता है कि वह झूलन को विदाई देते समय काफी भावुक नजर आ रही है।

पश्चिम क्षेत्र दिलीप ट्रॉफी कब्जाने के करीब

जीत के लिए पश्चिम को चार विकेट व दक्षिण को 375 रन की जरूरत

कोयम्बटूर। पश्चिम क्षेत्र ने रोहन कुन्नुमल (93) के जुझारू अर्धशतकशतक के बावजूद दिलीप ट्रॉफी फाइनल के चौथे दिन शनिवार को 154 रन के स्कोर पर दक्षिण क्षेत्र के छह बल्लेबाज को आउट कर दिया और अब वह ट्रॉफी उठाने से सिर्फ चार विकेट दूर है।

पहली पारी में 57 रन से पिछड़ने वाले पश्चिम क्षेत्र ने दूसरी पारी में चार विकेट के नुकसान पर 585 रन का विशाल स्कोर खड़ाकर दक्षिण क्षेत्र को 528 रन का लक्ष्य दिया। पश्चिम के लिए दूसरी पारी में यशस्वी जायसवाल ने सर्वाधिक 265 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 30 चौके और चार छक्के के बदौलत 323 गेंदों में 265 रन बनाए। इसके अलावा सरफराज खान ने 127 रन पर नाबाद रहे। जबकि हेत पटेल ने 51 रन की नाबाद पारी खेली। जायसवाल ने चौथे दिन की शुरुआत में पश्चिम की पारी को 376/3 के स्कोर से आगे बढ़ाते हुए सरफराज के साथ 106 रन और जोड़े। जायसवाल के आउट होने के बाद सरफराज और पटेल ने तेजी से खेलते हुए पांचवें विकेट के लिए 103 रन की साझेदारी की। इस दौरान सरफराज ने प्रथम श्रेणी में अपना आठवां शतक जड़ा। अजिंक्य रहाणे ने 385 रन पर पश्चिम की पारी घोषित कर दी। दक्षिण की संघर्ष से भरी 154 रन की पारी में कुन्नुमल के अलावा कोई भी बल्लेबाज विकेट पर टिक नहीं पाया। सलामी बल्लेबाज मयंक (14) और कप्तान हनुमा विहारी सिर्फ एक रन बनाकर आउट हो गए। बाबा इंद्रजीत ने चार रन जबकि मनीष पांडे ने 14 रन की पारी खेली। कुन्नुमल (93)ने एक छोर से अपना संघर्ष जारी रखा। इससे पहले मुलानी विकेटकीपर रिकी भुई (13) को रहाणे के हाथों कैच आउट करवा चुके थे। दिन का खेल खत्म होने तक रवि श्रीनिवासन साईकिशोर एक रन और तेलुकुपल्ली रवि तेजा आठ रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं। दक्षिण को जीत के लिए 375 रन की दरकार है और बेहद भाग्यशाली होने पर भी ड्रॉ उनकी इकलौती उम्मीद लग रही है।

नडाल ने लेवर कप से नाम वापस लिया

लंदन। स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी राफेल नडाल ने शनिवार को निजी कारणों का हवाला देते हुए लेवर कप के शेष बचे मैचों से नाम वापस ले लिया। टूर्नामेंट के आयोजकों ने शनिवार को कहा कि उनकी जगह टीम यूरोप में कैमरून नॉरी शामिल होंगे। नडाल ने टीम यूरोप के लिए युगल मैच में दोस्त और प्रतिद्वंद्वी रोजर फेडरर के साथ उनके आखिरी मैच में भागीदारी की। यह जोड़ी हालांकि टीम वर्ल्ड के जैक सॉक और फ्रांसिस टियाफो के हाथों 4-6, 6-2, 11-9 से हार गयी। नडाल ने बाद में कहा कि उनका एक महत्वपूर्ण हिस्सा फेडरर के सन्यास के साथ टूर छोड़ रहा था। फेडरर की जगह टीम यूरोप में इटली के मैटियो बेरेटिनी को शामिल किया गया है। नडाल की पत्नी मेरी पेरेलो जल्द ही उनके पहले बच्चे को जन्म देने वाली है, लेकिन वह अपने स्विस प्रतिद्वंदी के अंतिम मैच में उनका साथ देने के लिए लंदन गये थे। 22 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने विंबलडन सेमीफाइनल से पहले हटने के बाद केवल पांच एकल मैच खेले हैं। उन्होंने यूएस ओपन से जल्दी बाहर हो गए।

भारतीय टीम विश्व कप की तैयारी के लिए स्पेन रवाना

नई दिल्ली। भारतीय अंडर-17 महिला फुटबॉल टीम अगले हफ्ते कुछ दोस्ताना मैच खेलने के लिए स्पेन रवाना हुई है। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने शनिवार को इसकी जानकारी देते हुए कहा कि यह मैच आगामी फीफा अंडर-17 महिला फुटबॉल विश्व कप की तैयारी के लिए नियोजित किए गए हैं। अंडर-17 महिला विश्व कप का आयोजन 11 अक्टूबर से भारत में किया जायेगा, जिसके लिये भारतीय युवा महिलायें ओडिशा सरकार के सहयोग से भुवनेश्वर में अभ्यास कर रही है। एआईएफएफ ने बताया कि टीम के 23 सदस्य शुक्रवार रात को भुवनेश्वर से स्पेन के लिए रवाना हुई। भारत के दोस्ताना मैचों की विस्तृत सूचना जल्द ही जारी की जायेगी। स्पेन जाने वाली 23 सदस्यीय **भारतीय टीम: गोलकीपर:** मेलोडी चानू कीशम, मोनालिसा देवी मोइरंगथेम, अंजलि मुंडा, **डिफेंडर:** अस्तम उरांव, ग्लेडिस जोनुनसंगी, काजल, नकेता, पूर्णिमा कुमारी, वार्शिका, शिल्की देवी हेमम, निकिता जूड, **मिडफील्डर:** बबीना देवी लिशम, नीतू लिंडा, शैलजा, शुभांगी सिंह **फॉरवर्ड:** अनीता कुमारी, लिंडा कॉम सर्टो, नेहा, रेजिया देवी लैशराम, शेलिया देवी लोकतोंगबम, काजोल-यूबर्ट डिसूजा, लावण्या उपाध्याय, सुधा अंकिता टिर्की हैं और **टीम के मुख्य कोच:** थॉमस डेनरबी भी टीम में शामिल है।

बांग्लादेश और आयरलैंड महिला टी-20 विश्व कप के लिए क्वॉलीफाई

दुबई। बांग्लादेश और आयरलैंड की महिला क्रिकेट टीमों ने अबुधाबी में क्वॉलीफाइंग प्रतियोगिता में अपने सेमीफाइनल जीतने के साथ ही दक्षिण अफ्रीका में 2023 में होने वाले महिला टी20 विश्व कप के लिए क्वॉलीफाई किया। बांग्लादेश की महिला टीम ने शुक्रवार को थाईलैंड पर 11 रन की जीत हासिल की जबकि आयरलैंड ने जिम्बाब्वे को चार रन से मात दी। इस तरह दोनों टीमें आस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, भारत, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका और वेस्टइंडीज के साथ शामिल हो गयी हैं जिन्होंने पहले ही 10 टीम के टूर्नामेंट के लिये अपनी जगह पक्की कर ली थी।

बालिका वर्ग में मध्य प्रदेश चैंपियन

भोपाल। एलएनसीटी भोपाल में खेली जा रही बीएसएफ आई जूनियर नेशनल बेसबॉल प्रतियोगिता में मध्य प्रदेश की बालिकाओं ने हरियाणा को 5-0 से हराकर खिताब जीत लिया। प्रदेश की ओर से सोनिया, हर्षिता एनैन्सी, आकांक्षा एवं रितिका जाटव ने रन काउंट कर टीम को जिताने में अहम भूमिका निभाई। इससे पहले खेले गए बालिका वर्ग के पहले सेमीफाइनल मुकाबले में मध्य प्रदेश ने तेलंगाना को 6-0 से एवं दूसरे सेमीफाइनल मुकाबले में हरियाणा ने ओडिशा को 6-1 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। हार्ड लाइन मुकाबले में तेलंगाना ने उड़ीसा को 6-0 से हराकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। बालक वर्ग में खेले गए पहले सेमीफाइनल मुकाबले में मध्य प्रदेश के बालक टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बहुत ही रोमांचक मुकाबले में दिल्ली को 2-1 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। मुकाबले में मध्य प्रदेश की ओर से प्रवीण छारी ने होम रन एवं शिव शंकर सिसोदिया ने 1 रन काउंट किया रितेश नागर ने भी शानदार फील्डिंग का प्रदर्शन किया। आखरी इनिंग में जीत के लिए दिल्ली को 3 रनों की जरूरत थी लेकिन दिल्ली की टीम मात्र एक ही रन बना सकी।

बालक वर्ग में भी दिल्ली को हरा मध्य प्रदेश फाइनल में

चोट के कारण राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा नहीं लेंगी पीवी सिंधु

हैदराबाद। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु राष्ट्रीय खेलों में हिस्सा नहीं लेंगी क्योंकि वह टखने की चोट से पूरी तरह उबर नहीं पाई हैं। यह दिग्गज खिलाड़ी हालांकि उद्घाटन समारोह में मौजूद रहेगी। बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान टखने में चोट लगा बैठी सिंधु 29 सितंबर को अन्य स्टार खिलाड़ियों के साथ उद्घाटन समारोह के लिए गुजरात में मौजूद रहेंगी सूरत में दो अक्टूबर से बैडमिंटन की स्पर्धाएं शुरू होंगी सिंधु ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मैं चोट के कारण खेलों में प्रतिस्पर्धा पेश नहीं कर पा रही हूं। अगर मैं फिट होती तो निश्चित रूप से अपने राज्य (तेलंगाना) का प्रतिनिधित्व करती। उन्होंने कहा, राष्ट्रीय खेल सभी खिलाड़ियों के लिए एक शानदार अवसर है और मैंने जिस किसी से भी बात की है वह इसे लेकर उत्साहित है। मुझे यकीन है कि बैडमिंटन मुकाबले बहुत रोमांचक होंगे।

धोनी सोशल मीडिया पर लाइव आकर साझा करेंगे बड़ी खबर

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट के सबसे सफल कप्तानों महेंद्र सिंह धोनी 25 सितंबर को एक बड़ा फैसला लेने वाले हैं। आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी कर रहे धोनी ने सोशल मीडिया पर खुद बताया किरविवार दोपहर दो बजे फेसबुक लाइव पर एक मजेदार खबर देने वाले हैं। धोनी ने अपनी फेसबुक प्रोफाइल पर पोस्ट कर लाइव आने की जानकारी दी है। माना जा रहा है कि माही कोई बड़ा एलान कर सकते हैं। धोनी ने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा, मैं आपके साथ एक खबर साझा करूंगा। मैं 25 सितंबर को दोपहर 2 बजे लाइव आकर ये जानकारी दूंगा। आशा करता हूं कि आप सब वहां होंगे।

भारत-ऑस्ट्रेलिया के बीच सीरीज का निर्णायक मुकाबला आज

तीन मैचों की टी-20 सीरीज में दोनों टीमों के मध्य जोरदार टक्कर की उम्मीद

हैदराबाद। भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ नागपुर में बारिश के बाद 8 ओवर के मुकाबले में जीत दर्ज कर तीन मैचों की सीरीज में 1-1 से बराबरी की अब दोनों टीमों के बीच रविवार को अंतिम टी-20 मुकाबले में काटे की टक्कर होगी।

बतौर कप्तान रोहित शर्मा के पास लगातार नौवीं सीरीज जीतने का मौका होगा जबकि ऑस्ट्रेलिया भारत को घर पर दूसरी बार सीरीज हराने वाली पहली टीम बनने के कगार पर है। दोनों टीमों के पास कुछ कर दिखाने का बढ़िया मौका है पर इसके लिए हैदराबाद के मौसम को उनपर मेहरबान रहना होगा। भारतीय टीम अंतिम मुकाबले में उम्मीद करेगी कि युजवेंद्र चहल, हर्षल पटेल और भुवनेश्वर कुमार अपने पुराने रंग में लौट आयें। तीन मैचों की सीरीज में आते हुए भारत के सामने गेंदबाजी और मध्यक्रम की बल्लेबाजी से जुड़े सवाल थे। सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पटेल ने पहले टी20 मैच में विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए भारत को 208 रन तक पहुंचाया, लेकिन गेंदबाज इस बड़े लक्ष्य की रक्षा नहीं कर सके।

वर्षाबाधित नागपुर टी20 के लिये भुवनेश्वर को टीम में जगह नहीं दी गयी, हालांकि हर्षल और चहल के फॉर्म से जुड़ी समस्याएं साफ झलकीं। टी20 विश्व कप से सिर्फ चार मैच दूर भारत को हैदराबाद में हर्षल और चहल के फॉर्म में लौटने का बेसब्री से इंतजार होगा। डेथ ओवर में गेंदबाजी के विशेषज्ञ हर्षल चोट से वापसी करने के बाद लय हासिल नहीं कर सके हैं। उन्होंने दो मैचों में छह ओवर डालकर 81 रन दिये हैं और वह इस सीरीज के सबसे महंगे गेंदबाज हैं। जसप्रीत बुमराह ने चोट से उभरकर वापसी करते हुए ऐरन फिंच का विकेट लिया, जिससे भारत की चिंताएं कुछ कम हुई होंगी। यदि भुवनेश्वर तीसरा टी20 खेलते हैं तो उनसे उम्मीद होगी कि वह बुमराह के साथ मिलकर एशिया कप से चले आ रहे डेथ ओवर के अपने खराब प्रदर्शन पर पूर्ण विराम लगायें। रोहित शर्मा, लोकेश राहुल, विराट कोहली और सूर्यकुमार यादव का प्रदर्शन अच्छा रहा लेकिन वे निरंतरता के साथ बड़े रन बनाने में असफल रहे हैं। लेग स्पिन गेंदबाजी खासकर चारों बल्लेबाजों के लिये समस्याएं खड़ी करती आयी है। ऐडम ज़ैम्पा ने दूसरे मैच में राहुल, विराट और सूर्यकुमार को आउट करके इस कमजोरी का बखूबी फायदा उठाया था। दूसरी ओर, ऑस्ट्रेलिया को भी उसकी गेंदबाजी से जुड़ी चिंताएं सता रही होंगी।

भारतीय टीम को कोहली से बड़ी पारी की उम्मीद

इस सीरीज के दो मुकाबलों में कम स्कोर बनाने के बावजूद यह साल विराट कोहली के लिए अच्छा रहा है। इस साल टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में कोहली ने तीन अर्धशतक और एक शतक की मदद से 141 के स्ट्राइक रेट से 370 रन बनाए हैं। ऑस्ट्रेलिया के विरुद्ध 20 पारियों में सर्वाधिक 731 रन बनाने वाले कोहली को सीरीज के तीसरे और निर्णायक मुकाबले में रन बनाना बहुत पसंद है।

मुंबई में टैक्सी, ऑटो का किराया बढ़ेगा

मुंबई, (एजेंसी)। महाराष्ट्र राज्य परिवहन विभाग एक अक्टूबर से टैक्सियों के न्यूनतम किराए में तीन रुपए और ऑटो-रिक्शा के किराए में दो रुपए की वृद्धि करने पर सहमत हो गया है। परिवहन विभाग के अधिकारियों ने कहा कि इस फैसले को सोमवार को मुंबई महानगर क्षेत्र परिवहन प्राधिकरण द्वारा मंजूरी दी जाएगी। टैक्सी कैब का मौजूदा न्यूनतम किराया 25 रुपए है, जबकि ऑटो रिक्शा के लिए यह 21 रुपए है। नया न्यूनतम किराया क्रमशः 28 रुपए और 23 रुपए होगा। मुंबई टैक्सीमैन यूनियन के नेता एके क्वाड्रोस ने कहा कि राज्य सरकार एमएमआरटीए से मंजूरी के बाद शुक्रवार को टैक्सियों और ऑटो-रिक्शा के किराए में संशोधन के लिए सहमत हुई।

इंडोनेशिया में भूकंप के तेज झटके, तीव्रता 6.4 रही

जकार्ता, (एजेंसी)। इंडोनेशिया के पश्चिमी प्रांत आचेह में शनिवार सुबह भूकंप के तेज झटके महसूस किये गये। इस घटना में कोई हताहत या नुकसान नहीं हुआ। रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 6.4 मापी गयी। भूकंप को लेकर सुनामी की कोई चेतावनी नहीं जारी की गयी है। प्रांतीय आपदा प्रबंधन के अधिकारी मुसरियादी ए ने यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि भूकंप जकार्ता के समय तड़के 3.52 बजे आया और इसका केंद्र मेउलाबोह शहर से 45 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में और समुद्र तल के नीचे 22 किलोमीटर की गहराई में स्थित था। भूकंप के झटके प्रांत के कई हिस्सों में महसूस किए गए, लेकिन इससे कोई नुकसान या हताहत नहीं हुआ, जिसमें मेलेबोह शहर के सबसे कठिन क्षेत्रों और प्रांत के आचे सेलाटन (दक्षिण आचेह) और नागन राया जिले शामिल हैं।

दीनदयाल के विचार ही दे सकते हैं दुनिया को शांति

प्रयागराज, (ब्यूरो)। उप्र राजर्षि टंडन मुक्त विवि, प्रयागराज में पं. दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ के तत्वावधान में शनिवार को पूर्व संध्या पर पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि अभा राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के उच्च शिक्षा संघ वर्ग प्रमुख महेंद्र कुमार ने कहा कि आज हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं ऐसे में हमें आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने के बाद औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर निकलना होगा। अगर हम औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए तो हम भारत को श्रेष्ठ भारत नहीं बना सकेंगे। मुख्य अतिथि कुमार ने कहा कि आज दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता बढ़ती जा रही है। दुनिया को सुख एवं शांति का विचार एकात्म मानव दर्शन ही दे सकता है। उन्होंने कहा कि भारत ही एक ऐसा देश है जो पूरी दुनिया को वसुधैव कुटुंबकम के भाव से देखता था।

आज का इतिहास

- **1340:** इंग्लैंड और फ्रांस ने निरस्त्रीकरण संधि पर हस्ताक्षर किये।
- **1524:** वास्कोडिगामा आखिरी बार वायसराय बनकर भारत आए।
- **1639:** अमेरिका में पहली प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत।
- **1654:** इंग्लैंड और डेनमार्क ने व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये।
- **1846:** अमेरिकी सेना ने मेक्सिको के मोंटेरी पर कब्जा किया।
- **1897:** ब्रिटेन में पहली बस सेवा की शुरूआत हुई।
- **1911:** फ्रांसीसी युद्धपोत लिब्रीटे में टूलॉन हार्बर पर विस्फोट से 285 लोगों की मौत।
- **1916:** अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री और महान चिंतक पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म।
- **1920:** भारत के प्रसिद्ध रॉकेट वैज्ञानिक सतीश धवन का जन्म।
- **1939:** प्रसिद्ध अभिनेता एवं फिल्म निर्माता-निर्देशक फिरोज खान का जन्म।
- **1977:** जानी-मानी अभिनेत्री दिव्या दत्ता का जन्म।

रूस ने यूक्रेन में किए युद्ध अपराध : संरा

संयुक्त राष्ट्र की तीन स्वतंत्र विशेषज्ञों की टीम ने रिपोर्ट सौंपी

जिनेवा ■ एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र के जांचकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि रूस ने यूक्रेन में युद्ध अपराध किए, जिसमें नागरिक क्षेत्रों पर बमबारी, कई फांसी, यातना और भयानक यौन हिंसा शामिल है।

संयुक्त राष्ट्र की तीन स्वतंत्र विशेषज्ञों की टीम ने शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद को अपना पहला मौखिक अपडेट प्रस्तुत किया। टीम ने कीव, चेर्निहाइव, खार्किव और सूमी क्षेत्रों को देखते हुए प्रारंभिक जांच शुरू की थी। टीम ने कहा कि यह अपनी पूछताछ को व्यापक बनाएगी।

अपने पड़ोसी यूक्रेन पर रूस के आक्रमण की सात महीने पूरा होने से एक दिन पहले जांच दल के प्रमुख एरिक मोसे ने

शुक्रवार को परिषद को बताया कि यूक्रेन पर जांच आयोग द्वारा एकत्र किए गए सबूतों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि यूक्रेन में युद्ध अपराध किए गए हैं। गार्जियन के मुताबिक जांचकर्ताओं की टीम ने 27 कस्बों और बस्तियों के साथ-साथ कब्रों और हिरासत तथा यातना केंद्रों का दौरा किया। करीब 150 से अधिक पीड़ितों और गवाहों का साक्षात्कार लिया।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की धमकी को हल्के में न लें

लंदन, (एजेंसी)। यूरोपियन यूनियन के विदेश नीति प्रमुख जोसेप बोरेल ने कहा है कि यूक्रेन- रूस युद्ध अब एक खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है। इस युद्ध में परमाणु हथियारों के इस्तेमाल को लेकर रूसी राष्ट्रपति बलदिमिर पुतिन की धमकी को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। बीबीसी ने यह जानकारी दी। श्री बोरेल ने कहा कि निश्चित रूप से यह एक खतरनाक क्षण है क्योंकि रूसी सेना को यूक्रेनी सेना ने पीछे धकेल दिया है और ऐसे में रूसी राष्ट्रपति की परमाणु हथियारों के इस्तेमाल को लेकर धमकी दी गयी है, जो बहुत बुरा है ईयू के अधिकारी के हवाले से बीबीसी ने बताया कि युद्धक्षेत्र में पुतिन को जबरदस्त झटका लगा है। देश के नाम एक दुर्लभ संदेश में इसी सप्ताह रूसी राष्ट्रपति ने कहा कि उनके देश के पास विनाश के विभिन्न हथियार हैं और हम सभी उपस्थित विकल्पों का इस्तेमाल करेंगे। मैं मजाक नहीं कर रहा हूं।

रिसेप्शनिस्ट अंकिता का शव बरामद

आरोपी की फैक्टरी को जलाया

ऋषिकेश/देहरादून ■ एजेंसी

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के आदेश पर शुक्रवार आधी रात को रिसेप्शनिस्ट अंकिता भंडारी की हत्या के आरोपी पुलकित के रिजॉर्ट को बुलडोजर चलाकर प्रशासन ने ध्वस्त कर दिया। साथ ही, मुख्यमंत्री ने सभी रिजार्ट की जांच के आदेश दिए हैं। इस बीच शनिवार सुबह अंकिता का शव भी नहर से बरामद कर लिया है।

अंकिता का शव नहर से बरामद किया गया।

रिजॉर्ट भी किया ध्वस्त

श्री धामी के आदेश पर आरोपी पुलकित के ऋषिकेश स्थित रिजॉर्ट को शुक्रवार आधी रात पौड़ी जिला प्रशासन ने ध्वस्त कर दिया। धामी के निर्देश पर राज्य के गेस्ट हाउस और रिसोर्ट के खिलाफ प्रशासन ने कार्रवाई शुरू करते हुए नैनीताल जनपद में पांच रिसोर्ट को सील कर दिया है। ऋषिकेश के अंकिता भंडारी हत्याकांड में आरोपी पुलकित आर्य की फैक्टरी को शनिवार दोपहर आक्रोशित भीड़ ने आग लगा दी।

दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी

आरोपी पुलकित के पिता और भाई को भाजपा से निकाल दिया गया है। विरोध-प्रदर्शन कर रहे लोगों ने पार्टी विधायक रेनू बिष्ट की कार पर हमला किया गया। रिसेप्शनिस्ट हत्याकांड के आरोपी रिजॉर्ट स्वामी पुलकित आर्य की दो साथियों के साथ शुक्रवार को गिरफ्तारी के बावजूद स्थानीय लोगों का गुस्सा शांत नहीं हुआ है। शनिवार दोपहर कुछ लोग इसके पीछे स्थित फ़ैक्टरी में घुस गए और उसमें आग लगा दी। आग से हुई क्षति का आकलन नहीं हो सका है। दूसरी ओर आरोपी के पिता भाजपा नेता विनोद आर्य और भाई अंकित आर्य को पार्टी ने निष्कासित कर दिया है। श्री धामी ने शनिवार सुबह सोशल मीडिया पर जानकारी दी कि शनिवार प्रातः काल अंकिता का पार्थिव शव बरामद कर लिया गया। इस हृदय विदारक घटना से मन अत्यंत व्यथित है। उन्होंने कहा कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाएगी।

शहबाज शरीफ के राग कश्मीर पर भारत का जवाब

अपने कुकर्म छुपाने को पाक पीएम ने किया संयुक्त राष्ट्र मंच का दुरुपयोग

न्यूयार्क ■ एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र संघ में बार-बार कश्मीर मुद्दा उठाने वाले पाकिस्तान को भारत की ओर से करारा जवाब दिया गया है। पाक पीएम शहबाज शरीफ ने संयुक्त राष्ट्र आम सभा में भारत को लेकर अनर्गल बयानबाजी की तो संयुक्त राष्ट्र में भारतीय मिशन के प्रथम सचिव मिजिटो विनिटो ने जोरदार जवाब देते हुए कहा कि अपने कुकर्म छुपाने के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र के मंच का दुरुपयोग किया है।

- संयुक्तराष्ट्र आम सभा में भारत ने पाकिस्तान को दिखाया आईना
- पाक में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार, ध्यान दें दुनिया के देश

संयुक्त राष्ट्र आम सभा की बैठक इन दिनों अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में चल रही है। आम सभा को संबोधित करते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कश्मीर मसला उठाते हुए भारत को ज्ञान दिया था। उन्होंने कहा था कि भारत को इस संदेश को समझना चाहिए कि भारत और पाकिस्तान, दोनों देश एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। युद्ध कोई समाधान नहीं है और केवल शांतिपूर्ण संवाद ही कश्मीर के मुद्दों को हल कर सकता है। उन्होंने दुनिया को और अधिक शांतिपूर्ण बनाने के लिए कश्मीर मुद्दे के समाधान को जरूरी बताते हुए इस विवाद का हल नहीं होने के लिए भारत को जिम्मेदार बताया था। शहबाज शरीफ की इस अनर्गल बयानबाजी का जवाब देते हुए संयुक्त राष्ट्र में भारतीय मिशन के प्रथम सचिव मिजिटो विनिटो ने कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र जैसे मंच की आमसभा में भारत पर झूठे आरोप लगाए। इसे खेदजनक बताते हुए उन्होंने कहा कि अपने देश में चल रहे कुकर्मों को छिपाने के लिए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने इस मंच का खुले रूप से दुरुपयोग किया है। उन्होंने कहा कि अपने पड़ोसियों के साथ शांति चाहने का दावा करने वाले देश कभी भी सीमा पार आतंकवाद को प्रायोजित नहीं करेगा और न ही मुंबई आतंकवादी हमले के साजिशकर्ताओं को आश्रय देगा।

खुद की काली करतूत पहले बतानी चाहिएः विनिटो

संयुक्त राष्ट्र में भारतीय मिशन के प्रथम सचिव मिजिटो विनिटो ने कहा कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पाकिस्तान को भारत के खिलाफ झूठे आरोप लगाने से पहले खुद की काली करतूत के बारे में बताना चाहिए। जम्मू-कश्मीर के संबंध में कोई भी दावा करने के स्थान पर पाकिस्तान को सीमा पार आतंकवाद को रोकना चाहिए। विनिटो ने कहा कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों पर अत्याचार लगातार जारी है। अल्पसंख्यक समुदाय की हजारों युवा महिलाओं का अपहरण किया जा रहा है। पाकिस्तान में हिंदू, सिख और ईसाई परिवारों की लड़कियों का जबरन अपहरण फिर शादी उसके बाद धर्मांतरण किया जा रहा है। दुनिया के अन्य देशों को इसका संज्ञान लेना चाहिए। यह मानवाधिकारों, अल्पसंख्यक अधिकारों और बुनियादी शालीनता के बारे में चिंता का विषय है। भारतीय उपमहाद्वीप में शांति, सुरक्षा और प्रगति तभी संभव है जब सीमा पार आतंकवाद समाप्त हो जाएगा।

गंगा में 4315 लावारिसों की अस्थि विसर्जन

देवोत्तम सेवा समिति के कार्यकर्ताओं ने शनिवार को हरिद्वार के कनखल सती घाट पर पूरे भारत से 4315 लावारिस अस्थियों का विसर्जन किया।

वडक्कुमनाथन मंदिर तक पहुंची भारत जोड़ो यात्रा

राहुल की यात्रा का 17वां दिन

त्रिशूर (केरल) ■ एजेंसी

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं केरल के वायनाड से सांसद राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' एक दिन के ठहराव के बाद शनिवार को यहां पेरम्बरा जंक्शन से शुरू हुई। बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी से शुरू हुई यात्रा का 17वां दिन सुबह 10 बजे अंबल्लूर जंक्शन पर रुका।

यह शाम पांच बजे तालोर बाईपास जंक्शन से फिर से शुरू हुई और शाम सात बजे त्रिशूर वडक्कुमनाथन मंदिर के दक्षिण गेट पर पहुंची। आगामी एक अक्टूबर को कर्नाटक में प्रवेश करने से पहले, केरल में 19 दिनों में यह यात्रा 450 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय करेगी और सात जिलों को कवर करेगी।

भारत जोड़ो यात्रा पांच महीने की है, जो कन्याकुमारी से श्रीनगर तक 3,500 किलोमीटर से अधिक लंबी पैदल यात्रा है। यह सामाजिक ध्रुवीकरण, आर्थिक असमानताओं और राजनीतिक केंद्रीकरण को उजागर करने के उद्देश्य से पार्टी के राष्ट्रीय जन संपर्क कार्यक्रम का हिस्सा है।

प्रयागराज स्मार्ट सिटी में एक घंटे की भारी बारिश से व्यवस्थाएं हुई तार-तार

प्रयागराज, (ब्यूरो)। शुक्रवार को सुबह से हल्की-हल्की वर्षा से शहर का मौसम काफी खुशनुमा था। लेकिन दोपहर बाद लगभग तीन बजे की करीब अचानक तेज हवाओं संग एक घंटे तेज वर्षा शुरू हो गई। गरजते बादल कड़कती बिजली से आम शहरी सहम गए थे। जो जहाँ था वही रुक गया था । परन्तु इस एक घंटे के जोरदार वर्षा ने प्रयागराज स्मार्ट सिटी के अंतर्गत हुए कार्यों पर सवाल अवश्य खड़ा कर दिया। कुंभ 2019 मे उप्र सरकार तथा केंद्र सरकार ने शहर के कायाकल्प करने के लिए भारी भरम बजट स्वीकृत किया था और शहर के विकास का कार्य हुआ था तथा साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बराबर हो रहे कार्यों की समीक्षा करते रहे । प्रयागराज को स्मार्ट सिटी के रूप मे विकसित करने के लिए 1800 करोड़ रुपए दिसम्बर 2022 तक स्वीकृत है साथ ही कुंभ 2025 का कार्य कराने के लिए 100करोड़ स्वीकृत हो चुका है। लेकिन इतने बजट के बाद भी यानि दिसम्बर 2022 स्मार्ट सिटी के बजट को ही देखा जाए तो एक वर्षा ने कार्यों की हकीकत बयान कर दी। शहर के लगभग सभी क्षेत्रों मे घंटों जलभराव बना रहा।

लापरवाही उजागर

अखिलेश को नहीं दिख रहे जनता के ऊपर किए उत्पीड़न : सिद्धार्थनाथ

प्रयागराज, (एजेंसी)। शुक्रवार को पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव अपने 12 विधायकों के प्रतिमंडल के साथ राज्यपाल आनंदीबेन पटेल से मुलाकात कर रामपुर के विधायक आजम खान पर हो रहे उत्पीड़न का मामला उठाया और आरोप लगाया कि भाजपा सरकार आजम खान और उनके परिवार के ऊपर झूठे मुकदमें कर रही है।

प्रयागराज प्रवास के दौरान सवालों का जबाब देते हुए उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री शहर पश्चिमी विधायक श्री सिद्धार्थ नाथ सिंह ने अखिलेश यादव पर कटाछ करते हुए कहा कि अखिलेश यादव को आजम खान का उत्पीड़न दिख रहा है लेकिन जनता के ऊपर किए गए उत्पीड़न नहीं दिख रहा है जबकि 1982 से लेकर अभी तक जो भी तहरीर है।जैसे मौलाना जौहर अली यूनिवर्सिटी के लिए आलियागंज के किसानों की जमीनों पर अवैध कब्जे करने के आरोपों में उनके खिलाफ 28 मुकदमे दर्ज हैं।महिलाओं पर अभद्र टिप्पणी,भैंस चोरी करने का मुकदमा, प?ोसी से रंगदारी मांगने का मुकदमा और शत्रु संपत्ति के मामले में दो मुकदमे दर्ज हैं।किताबों की चोरी, शेर की मूर्ति चुराने, 2700 खैर के पे?ों की चोरी का भी मुकदमा दर्ज है। इसके अलावा बेटे अब्दुल्ला आज़म के दो-दो जन्म प्रमाणपत्र के आरोपों में दो मुकदमे दर्ज हैं।लगभग 80 से ऊपर मुकदमें दर्ज हैं। अखिलेश यादव सदन में और सदन के बाहर राज्यपाल को ज्ञापन देकर साबित किया कि आज भी अराजकता ही उनकी मूल पहचान है। जो जनता के ऊपर कई अत्याचार किए हैं जनता के ऊपर हुए उत्पीन नहीं दिख रहा है।योगी राज में कानून अपना काम कर रहा है।कानून अपना न कर सकें उसके लिए राज्यपाल से मिलकर सरकार पर प्रेशर और पुलिस प्रशासन पर दबाब बनाने का काम कर रहे है।

ग्वाटेमाला में भारतीय हस्तशिल्प की धूम

मेड इन इंडिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। लातीन अमेरिकी देश ग्वाटेमाला में इन दिनों भारतीय हस्तशिल्प की धूम मची हुई है। दरअसल ईपीसीएच ने ग्वाटेमाला स्थित भारतीय राजनयिक मिशन के साथ मिलकर वहां 'मेड इन इंडिया' व्यापार प्रदर्शनी का आयोजन किया है जिसमें भारतीय हस्तशिल्प निर्माताओं तथा निर्यातकों ने अपनी कलाकृतियां और हस्तशिल्प के साथ अन्य उत्पादों को प्रदर्शित किया है। देश के 10 राष्ट्रीय दिग्गज शिल्पकार और निर्यातक इसमें हस्तशिल्प उत्पादों को पेश कर रहे हैं, जिनमें घर के सजावटी सामान, फर्निशिंग, दरी-कालीन, फर्नीचर, लैम्प, फैशन आभूषण व सम्बंधित सामग्रियां, धूप-अगरबत्ती, खुशबूदार तथा आरोग्य उत्पाद शामिल हैं। ग्वाटेमाला के उपराष्ट्रपति तथा कार्यकारी राष्ट्रपति गुईलेरमो कास्टिलो और भारत के राजदूत डॉ. मनोज कुमार महापात्रा ने व्यापार प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

बुंदेली लोकगीत आल्हा गायन का आयोजन

प्रयागराज ■ ब्यूरो

उमरे मुख्यालय में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2022 तक आयोजित राजभाषा पखवाड़ा के उपलक्ष्य में रेलगाँव, सूबेदारगंज स्थित अधिकारी क्लब में महाप्रबंधक प्रमोद कुमार की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि, उमरे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा, पूनम कुमार की गरिमामयी उपस्थिति में बुंदेली लोकगीत आल्हा गायन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नवरस बुंदेली लोक कला समिति, महोबा के कलाकारों द्वारा आल्ह खंड की सजीव एवं जीवंत प्रस्तुति की गई। महाप्रबंधक प्रमोद कुमार ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि

राजभाषा पखवाड़ा

राजभाषा पखवाड़ा में आयोजितविविध कार्यक्रमों के बीच अपनी समृद्ध लोक संस्कृति से जुड़ा यह आयोजन निश्चित तौर पर एक अनूठी पहल है। अपने सहज प्रवाह, बहुआयामी स्वरूप में हिंदी भाषा व हिंदी के साहित्य ने देश के विभिन्न प्रांतों और अंचलों की लोक विधाओं, लोक परंपराओं और संस्कृतियों को बखूबी सहेजा है।

कार्यशाला प्राकृतिक खेती पर कार्यक्रम में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत बोले

बीमारू राज्य से आदर्श राज्य बना उप्र

लखनऊ ■ ब्यूरो

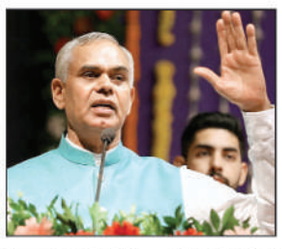

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने शनिवार को उत्तर प्रदेश में शांति एवं कानून व्यवस्था दुरुस्त करने और विकास की गति को तेज करने का श्रेय राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को देते हुए कहा कि योगी सरकार के साढ़े पांच साल के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य से आदर्श राज्य में तब्दील हो गया है।

आचार्य देवव्रत ने गौ आधारित प्राकृतिक खेती पर शनिवार को यहां आयोजित एक कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि विकास और सुरक्षा सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश की तस्वीर बदली है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री योगी, राज्य के कृषि मंत्री सूर्यप्रताप शाही और उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री दिनेश प्रताप सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। राज्यपाल देवव्रत ने कहा कि योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश को अपराध मुक्त बनाने में बड़ी कामयाबी हासिल की है।

उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश से लोग अब बाहर नहीं जाना चाहते हैं, क्योंकि पांच साल में उप्र बीमारू राज्य से आदर्श राज्य के रूप में बदला है। सीएम योगी ने धरती और गौ माता को बचाने का सफल अभियान चलाने के लिए आचार्य देवव्रत का अभिनन्दन करते हुए कहा कि गौआधारित प्राकृतिक खेती को प्रयोग में लाने के अभियान का मकसद इस धरती के वास्तविक स्वरूप को बचाये रखना है। राज्यपाल देवव्रत ने कहा कि भारत, कृषि प्रधान देश है और कृषि का आधार गौवंश रहा है।

औद्योगिक क्रांति लेकिन खेती का पराभावः योगी

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आधुनिक तकनीकी के आने के पहले, खेती किसानी की पुरातन पद्धति को अगर देखें तो जानेंगे कि हमारा कृषक इसी गौवंश पर निर्भर था। औद्योगिक क्रांति के बाद, खेती का पराभव भी शुरू हुआ। इसमें कोई दो राय नहीं कि आज़ादी के बाद हमें खाद्यान्न उत्पादन में बहुत सफलता मिली, लेकिन बहुत दुष्परिणाम भी प्राप्त हुए। ग्लोबल वॉर्मिंग इसका ज्वलंत प्रमाण है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जनता दर्शन कार्यक्रम में उनके पास आने वाले लोगों में तमाम बीमारियों के पीड़ित भी शामिल होते हैं। यह स्थित रहन सहन और खानपान के बारे में सोचने पर मजबूर करती है। उन्होंने कहा कि ये वही बात है कि हमने खाद्यान्न क्षेत्र में क्रांति तो की, लेकिन हजारों बीमारियां भी पा लीं। इसीलिए हमको प्राकृतिक खेती की जरूरत है। इसका गौ-आधारित होना, इसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त करेगा।

आईआरईएफ राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष सम्मानित

प्रयागराज, (ब्यूरो)। विक्रमगंज, (रोहतास) बिहार में शुक्रवार को अभा किसान महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय किसान महापंचायत में इंडियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन सम्बद्ध ऐक्टू राष्ट्रीय अध्यक्ष कामरेड मनोज कुमार पांडेय एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कॉम. डा. कमल उसरी को अभा किसान महासभा के राष्ट्रीय महासचिव व पूर्व विधायक कॉम राजाराम सिंह ने किसान महापंचायत में शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। श्री सिंह ने कहा कि नई दिल्ली में चले ऐतिहासिक किसान आंदोलन में देश भर के रेल मजदूरों की तरफ से इंडियन रेलवे इम्प्लाइज फेडरेशन संबद्ध ऐक्टू ने अभा किसान महासभा सहित संयुक्त किसान मोर्चा के अलग- अलग सभी पर भारी मोर्चे पर बड़ी संख्या बल के साथ कई बार भागीदारी की।

किसानों की तरफ रेल रोको अभियान मे अपनी सरकारी नौकरी को दाँव पर लगाकर, रेमुब ऑफ सर्विस के तमाम नोटिसों को झेलते हुए वैचारिक, नैतिक व आर्थिक सहयोग सतत 13 महीने चले संघर्ष देते रहे।

34 वर्षो से संचालित हों रही खानपुर की प्रसिद्ध रामलीला

अंकित मिश्रा

प्रखर खानपुर गाजीपुर क्षेत्र के खानपुर बाजार में चौतिस वर्षो से होता आ रहा है रामलीला का मंचन,3 अक्टूबर को सूर्य देव व चंद्र देव की झांकी के साथ खानपुर में दहन होगा।खानपुर में अति प्राचीन रामलीला 25 सितंबर से प्रारंभ होगी।कमेटी के अध्यक्ष अमृतेश सिंह (दादा) के तत्वाधान में इसका संचालन किया जाएगा।रामलीला कमेटी के मंत्री मुकुल सिंह, अपूर्व सिंह रिशु ने बताया कि रामलीला मंचन के इस कार्यक्रम का पिछले 32 वर्षों से अधिक का गौरवशाली इतिहास है।ये कभी रुकी नहीं है।अभी 2019 के बाद कोरोना महामारी में भी अपनी संस्कृति और जनता की भावनाओं को ध्यान में रखकर कोरोना प्रोटोकाल के अंतर्गत आवश्यकतानुसार लघु रूप से इस परंपरा का निर्वहन किया गया था। अब वर्तमान वर्ष में पुनः रामलीला मंचन का कार्यक्रम अपने भव्य रूप से 25 सितंबर की सांयकाल 6 बजे से होगा।पूरे विधि विधान से प्रारंभ होगा।

खानपुर स्थित प्राथमिक विद्यालय के बगल में मुकुट पूजन एवं रामायण जी की आरती से पूरे विधि विधान से प्रारंभ होगा। अगले 12 दिनों तक ये कार्यक्रम बहुत ही धूमधाम से चलेगा। आपको बताते चलें कि 5 अक्टूबर को खानपुर में रामलीला मैदान में रावण वध का कार्यक्रम मेले के परंपरागत आयोजन के साथ मनाया जाएगा।

जानिए बारह दिनों में किन-किन कार्यक्रमों का किया जायेगा, संचालन- खानपुर क्षेत्र के खानपुर बाजार स्थित रामलीला मैदान में आदर्श श्री रामलीला समिति द्वारा 25 सितम्बर से मचन कार्यक्रम शुरू किया जा रहा हैं। जिसमें कार्यक्रम बारह दिनों तक हर्षोल्लास के संचालित किया जायेगा। इस कार्यक्रम में पहले दिन रविवार कों मुकुट पूजा व रामायण आरती तो वही सोमवार कों नारद मोह एवं विश्व मोहनी स्वयंम्बर पूजा व मंगलवार कों श्री रामजन्म, श्री शंकर भगवान व पार्वती जी एवं गणेश जी की झांकी ठीक इसी प्रकार लगातार बारह दिनों तक कार्यक्रम की प्रस्तुति चलती रहेगी। वही कार्यक्रम में शुभम सिंह "निक्कू", सचिन सिंह, चक्रवर्ती सिंह (विशाल सिंह), कृष्णा पांडेय, अमृतेश सिंह "दादा", मनोज सिंह, राजन मोदनवाल, अंचल विश्वकर्मा,रविंद्र सिंह, रविशंकर सिंह, नारायण सिंह आदि लोग मुख्य कार्यकर्त्ता के रूप में मौजूद रहेंगे।

कमेटी ने अति प्राचीन रामलीला की शुरूआत को लेकर की चर्चा- कमेटी के अध्यक्ष अमृतेश सिंह ने अति प्राचीन रामलीला की शुरूआत को लेकर की चर्चा। कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक समारोह प्रभु श्री राम के राज्याभिषेक का कार्यक्रम कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक समारोह द्वारा परंपराओं के अनुरूप किया जाएगा। जिसमें गीत संगीत एवं सुंदर झांकियों की प्रस्तुति खानपुर रामलीला मैदान में किया जायेगा।

विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर आर.डी.एस. कॉलेज में भव्य कार्यक्रम का आयोजन

प्रखर जलालपुर जौनपुर। स्थानीय क्षेत्र के कुसॉव, भाऊपुर में स्थित आर.डी.एस. कॉलेज में विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मछलीशहर से सांसद बीपी सरोज रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में फामोकौलॉजी बीएचयू के एसोसिएट अवधेश कुमार यादव ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। मुख्य वक्ता के रूप में डॉक्टर अजय सिंह जिला महामंत्री भाजपा मछलीशहर व असिस्टेंट प्रोफेसर टीडी कॉलेज जौनपुर के कुशल संचालन में कार्यक्रम संचालित हुआ। बता दें कि कुसांव में स्थित आर.डी.एस. कॉलेज ऑफ फामेर्सी में विश्व फार्मासिस्ट दिवस पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, अतिथि व्याख्यान, कवि सम्मेलन व पुरस्कार वितरण के कार्यक्रम का भी आयोजन हुआ। अतिथि व्याख्यान में विश्व फार्मासिस्ट दिवस के अवसर पर फामेर्सी के महत्व पर विस्तृत चर्चा की गई। इसके अलावा पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती उनके चित्र पर माल्यार्पण कर मनाई गई। और पंडित दीनदयाल के जीवन पर अतिथियों ने व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में उपस्थित जनों में जगत नारायण सिंह (उप प्रबंधक), सुजीत सिंह (पूर्व प्रधान एवं सचिव आरडीएस ग्रुप आफ कॉलेजस), संजीव सिंह (अध्यक्षआरडीएस ग्रुप ऑफ कॉलेजस), रंजना सिंह (जिला पंचायत सदस्य), कार्यक्रम के समापन पर आरडीएस कॉलेज के चेयरमैन व भारतीय जनता पार्टी काशी क्षेत्र शिक्षा प्रकोष्ठ संयोजक /पूर्व ब्लाक प्रमुख जलालपुर संदीप सिंह ने कार्यक्रम के समापन पर लोगों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

पुलिस कार्यवाही में एक पशु तश्कर गिरफ्तार एक फरार

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। पुलिस अधीक्षक गाजीपुर के आदेशानुसार अपराध एंव अपराधियो के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक नगर एवं क्षेत्राधिकारी भुडकुडा के मार्गदर्शन में बीते रात पौने दश बजे उप निरीक्षक रमेश कुमार पटेल मय हमराह कांस्टेबल विपिन नायक, कांस्टेबल गणेश कुमार, कांस्टेबल धर्मेन्द्र कुमार, कांस्टेबल दिनेश भारती के देखभाल क्षेत्र, तलाश वांछित व वारण्टी तलाश करते हुए सहेडी हाईवे पर मौजूद थे कि मुखबीर खास जरिये दूरभाष सूचना किया कि दो व्यक्ति गोवंशी पशुओ को पैदल हांकते हुये इस समय ग्राम सभा सौरम स्थित शिवमंदिर से सौरम सबुआ पुल की तरफ जा रहे हैं, यदि जल्दी किया जाय तो पकड़ा जा सकता है। क्योंकि यह सभी गोवंश कसाई को बेचने के लिए ले जा रहे हैं । इस सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए श्री रमेश कुमार पटेल मय हमराह कांस्टेबल विपिन नायक,

कांस्टेबल गणेश कुमार, कांस्टेबल धर्मेन्द्र कुमार, कांस्टेबल दिनेश भारती द्वारा सबुआ पुलिया के 50 कदम पहले वहद ग्राम सौरम एक बारगी दबिस देकर एक व्यक्ति उमेश कुशवाहा पुत्र दुखन्ति कुशवाहा निवासी सौरम नंदगंज को गिरफ्तार कर लिया गया । तथा एक व्यक्ति कमलेश कुशवाहा पुत्र रेखाराम कुशवाहा निवासी सौरम नंदगंज भागने मे सफल रहा ।अभियुक्त के पास से 6 गाय तथा 1 बछिया बरामद हुई। थाना नंन्दगंज पुलिस द्वारा विधिक कार्यवाही की जा रही है ।

परत दर परत खुलने लगा है भ्रष्टाचार का मामला

प्रखर जखनियां (गाजीपुर)। मनिहारी विकास खण्ड में व्यापक भ्रष्टाचार को लेकर निवर्तमान जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह द्वारा पूर्व में गठित टीम ने अभी जांच शुरू भी नहींकी कि परत दर परत खुलने लगा है भ्रष्टाचार का मामला। गौरतलब हो कि खण्ड विकास अधिकारी एवं प्रमुख क्षेत्र पंचायत मुन्नी लाल ने दिनांक 13 जून 2022 से 23 अगस्त 2022 तक मात्र 50 दिन मे पंचम राज्य वित्त के खाता संख्या 426902011019572 से एवं केन्द्रीय पन्द्रहवे वित्त के खाता संख्या 426902011019572 से कुल एक करोड़ तेरह लाख तिरसठ हजार दो सौ तीस रुपए का भुगतान हुआ था। अभी इसका मामला शांत हुआ नहीं कि आरटीआई कार्यकर्ता डा.एम खालिद ने आरटीआई से प्राप्त सूचना मांग कर मनरेगा योजना में किए गए विकास कार्यों की पोल खोल दी है।मजे की बात यह है कि जिस वित्तीय वर्ष में जिस कार्य को ग्राम पंचायत ने कराया है, उसी कार्य को उसी वित्तीय वर्ष में आईडी बदल कर क्षेत्र पंचायत ने 1 करोड़ 67 लाख 337 रुपए का भुगतान करा लिया है।इसका खुलासा होते ही मनिहारी ब्लाक में हड़कंप मच गया है।केन्द्र सरकार मनरेगा एक्ट के माध्यम से भले ही गरीब परिवारों को 100 दिन रोजगार मुहैया कराने का दंभ भरे लेकिन अभी तक इसपर चढ़ी भ्रष्टाचार की परत कोई नहीं उतार पाया। मनरेगा में मिलने वाले धन का जमकर बंदरबांट किया जा रहा है। मजदूरों को दी जाने वाली मजदूरी में बड़ा खेल चल रहा है। मशीनों से काम कराकर इसे मजदूरों के जॉब कार्ड में चढ़ाकर उनसे बड़ा हिस्सा ले लिया जाता है। मजदूर भी इससे सहमत हो जाते हैं, क्योंकि बिना काम के ही उन्हें धन मिल जाता है। काम के समय न तो मस्टररोल मौके पर भरे जाते हैं और न ही वहां पर फर्स्ट एड किट की व्यवस्था होती है।केन्द्र सरकार ग्रामीण अंचल में गरीबों के कल्याण के लिए संकल्पित है और उनका जीवन स्तर सुधारने के लिए मनरेगा के माध्यम से 100 दिन का गारंटी रोजगार मुहैया कराने का दावा किया जा रहा है। इस योजना की विकास खण्ड में सच्चाई यह है कि यह योजना धरातल पर पहुंचते समय भ्रष्टाचार की गिरफ्त में चली गई है। मजदूरों को योजना के बारे में खास जानकारी न होने से प्रधान व सेक्रेटरी उनके जॉब कार्ड अपने कब्जे में रखते हैं। मजदूरों के जॉब कार्ड पर मजदूरी दिखाकर उनके खाते में धन डालने से पहले ही उनसे अपना हिस्सा ले लिया जाता है। मजदूर भी इस बात पर संतोष कर लेते हैं कि बिना काम के ही उन्हें कुछ धन तो मिल ही रहा है तो काम क्यों करें? वे अन्यत्र काम कर धन कमा रहे होते हैं।

नालासोपारा में भाजपा उत्तर भारती मोर्चा ने मनाया प्रधानमंत्री जन्मदिन सेवा पखवाड़ा शिक्षक सत्कार समारोह

प्रखर डेस्क। नालासोपारा बालाजी हॉल में उत्कृष्ट कार्यक्रम रखा गया नागेंद्र तिवारी जी और भानु सिंह जी के नेतृत्व में प्रमुख अतिथि आचार्य श्री पवन त्रिपाठी जी भाजपा मुम्बई उपाध्यक्ष, उदय प्रताप सिंह मुंबई प्रवक्ता आगमन हुआ। कार्यक्रम प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जीवन प्रदर्शनी और सेवानिवृत शिक्षको के उपलक्ष्य में सत्कार सम्मान समारोह आयोजित किया गया। भाजपा नेता अध्यक्ष देवराज सिंह जी माननीय प्रधानमंत्री जी जीवनी वृतान्त सभी कार्यकताओं भाजपा पदाधिकारी को बताया, प्रधानमंत्री योगदान योजनाओं से अवगत कराया, उपाध्यक्ष मुम्बई आचार्य पवन त्रिपाठी ने कहा कि केंद्र की मोदी और प्रदेश की योगी सरकार शैक्षिक गुणवत्ता के सुधार की दिशा में निरन्तर कार्य कर रहीं है। शिक्षा से ही गौरवशाली राष्ट्र का निर्माण संभव है।कहा कि मोदी-योगी के कुशल नेतृत्व में शिक्षकों के सहयोग से भारत एक बार फिर विश्व गुरू बनेगा।

गोरखपुर में तीन एसडीएम के कार्यक्षेत्र बदले, एक एसडीएम गीडा से किए गए अटैच

प्रखर गोरखपुर। गीडा में जमीन का अधिग्रहण तेज करने के लिए जिला प्रशासन की ओर से एक एसडीएम को गीडा से अटैच किया गया है। इसके साथ ही कुछ एसडीएम के कार्यक्षेत्र में बदलाव किया गया है।सहजनवा के एसडीएम न्यायिक अनुपम मिश्र को गीडा से संबद्ध किया गया है। वह जमीन अधिग्रहण से जुड़े मामले देखेंगे और सीईओ द्वारा सौंपे गए अन्य कार्य करेंगे। शुक्रवार को जारी आदेश में तीन एसडीएम के कार्यक्षेत्र बदले गए हैं। सहजनवा में एसडीएम न्यायिक के रूप में कार्यरत दिग्विजय सिंह को कैंपियरगंज में इसी पद पर भेजा गया है। जिले में नए आए डिप्टी कलेक्टर राजू कुमार को अपर नगर मजिस्ट्रेट द्वितीय और प्रदीप कुमार सिंह को एसडीएम न्यायिक बांसगांव बनाया गया है। इसके साथ ही उन्हें जीडीए से संबद्ध किया गया है।वह जीडीए में भूमि व्यवस्था और उपाध्यक्ष द्वारा सौंपे गए कार्य करेंगे।अपर उप जिलाधिकारी सदर के साथ एसडीएम न्यायिक चौरीचौरा व बांसगांव का काम देख रहे पवन कुमार के पास अपर उप जिलाधिकारी सदर के साथ एसडीएम न्यायिक चौरीचौरा की जिम्मेदारी रहेगी।

चंदौली के लौंदा गांव में 26 सितंबर मनाया जाएगा शब-ए-बेदारी, अलीनगर पुलिस ने लिया जायजा

प्रखर चंदौली। अलीनगर थाना क्षेत्र लौंदा गांव में कर्बला के शहीद इमाम हुसैन अ. के पचासे पर शब-ए-बेदारी को लेकर अलीनगर पुलिस ने किया निरीक्षण।अलीनगर पुलिस को अंजुमन जौव्वादीया कमेटी के लोगों ने बताया कि अधिकतर सड़कें ठीक ठाक हैं। जुलूस में भीड़ काफी होती है। इस दौरान उपनिरीक्षक गौतम कुमार ने ताजिया चौक, जुलूस के मार्ग व कर्बला का भी निरीक्षण किया, कई स्थानों पर रुक कर लोगों से बात भी की। अंजुमन जौव्वादीया कमेटी के अध्यक्ष ने बताया कि 26 सितंबर को शाम 4 बजे से अलम के जुलूस से सिलसिला शुरू होगा और रात 9 बजे ताजियां उठेगी, जो इमाम चौक पर बैठेगी। इमाम चौक पर शब-ए-बेदारी रातभर जागकर अलग-अलग जिले के लोग नौहांखानी व मातम और मौला को याद करते हैं। जिसमें अंजुमन मखदूमिया चौकियां गाजीपुर, अंजुमन गुलशने अब्बास शाहगंज, जौनपुर, अंजुमन सदायहक अहलेसुन्नत, कटेसर- रामनगर, चंदौली व अंजुमन गुलजारे पंजतन, ऐलही, चंदौली आ रही है। वही अंजुमन जौव्वादीया के मीडिया प्रभारी फरहान अहमद ने बताया कि जुलूस में बड़े स्तर पर लोगों की भागीदारी होती है। इसलिए, प्रशासन से गुजारिश है कि सुरक्षा के साथ सड़कों को

जिसकी नेजामत हाजी नुरूल हक व जैगम अब्बास जैदी करेगें। रातभर नौहांखानी व सीनाजनी करनें के बाद भोर में अंगारे का मातम होंगा। वहीं 27 सितंबर को दोपहर दो बजे ताजिया का एक बड़ा जुलूस निकलेगा और इमामबाड़े पर समाप्त हो जाएगा।

सत्यदेव कॉलेज ऑफ फामेर्सी में मना विश्व फार्मासिस्ट दिवस

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर।सत्यदेव कॉलेज आफ फामेर्सी बोरशिया, फदनपुर, गाजीपुर में विश्व फार्मासिस्ट दिवस पूरे धूमधाम के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्वलित एवं पुष्पार्चन से हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय के प्रधानाचार्य तेज प्रताप सिंह ने कहा कि फार्मासिस्ट समाज में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की मेडिकल जगत जैसे शिक्षा, ट्रेनिंग फार्मास्यूटिकल रिसर्च, फार्मास्यूटिकल मैन्युफैक्करिंग, हॉस्पिटल, पेशेंट केयर आदि के अति महत्वपूर्ण अंग है।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों द्वारा 150 मेडिसिनल प्लांट का प्रदर्शनी लगाए गए और उसके मेडिसिन उपयोग, ओरिजिन, बोटैनिकल सोर्स आदि की जानकारी पोस्टर प्रजेंटेशन के

माध्यम से किया गया। कॉलेज के सहायक प्रोफेसर धर्मेंद्र मिश्रा, सिंधु गुप्ता तथा अमजद हुसैन द्वारा प्रत्येक छात्र से प्लांट के बारे में प्रश्न पूछे गए तथा उनकी मार्किंग की जिसमें बी फार्मा सेकंड ईयर के छात्रा संजना सैनी तथा तस्नीम कौसर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया द्वितीय स्थान पर बी फार्मा फर्स्ट ईयर के उज्जवल तथा आसिफ रहे तृतीय स्थान पर बी फार्मा फोर्थ ईयर के छात्र अमीर और अर्जुन रहे। रंगोली के कार्यक्रम में बी फार्मा सेकंड ईयर के छात्रों द्वारा बनाई गई रंगोली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा बी फार्म फोर्थ ईयर के छात्रों द्वारा द्वितीय स्थान पर रही। सभी विजेताओं तथा उप विजेताओं को सत्यदेव डिग्री कॉलेज के डायरेक्टर श्री अमित कुमार रघुवंशी तथा सत्यदेव इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के प्रधानाचार्य इंजीनियर अजीत कुमार यादव द्वारा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन बी फार्मा सेकंड ईयर के छात्र आशीष कुमार सिंह द्वारा किया गया। अंत में सत्यदेव कॉलेज ऑफ फामेर्सी के प्रधानाचार्य द्वारा सभी का आभार व्यक्त किए। साथ ही कार्यक्रम में मुख्य रूप से कॉलेज के स्टाफ मोहम्मद अरशद, अभिषेक शर्मा, वेद प्रकाश, अरुण कुमार सिंह, मनोज श्रीवास्तव, अशोक यादव आदि उपस्थित रहे।

अंजुमन मजलूमिया की शब्बेदारी में रातभर हुआ नौहा मातम

प्रखर जौनपुर। नगर के मोहल्ला ख्वाजा दोस्त पोस्तीखाना स्थित मीर सखावत हुसैन के इमामबाड़े में शनिवार की रात अंजुमन मजलूमिया की कदीम शब्बेदारी का 8 वा दौर सम्पन्न हुआ। जिसमे शहर की कई अंजुमनों ने पूरी रात जनाबे सकीना की याद में अपने दर्द भरे कलाम पेश किया। अलविदाई मजलिस के बाद गहवारे अली असगर और अलम, ताबूत निकाला गया जिसकी जियारत के लिए लोग मौजूद रहे। शब्बेदारी का आगाज तिलावते कलाम-ए-पाक से किया गया। पेशखानी फराज जौनपुरी मेंहदी जौनपुरी परवेज जौनपुरी इरफान जौनपुरी रजमी जौनपुरी नेअपने कलाम पेश किये। सोजख्वानी सैयद नजर हसन एडवोकेट मरहूम के उनके हमनवा ने पढ़ा। मजलिस को खेताब किया समर ने इसके बाद नौहा मातम का सिलसिला शुरू हुआ जिसमें अंजुमन शहर की पकई अंजुमन ने अपने दर्द भरे नौहे पढ़ कर जनाबे सकीना को नजराने अकीदत पेश किया। अलविदाई मजलिस बेलाल हसनैन ने पढ़ा इसके बाद शबीहे ताबूत, अलम,

झूला अली असगर निकाला गया। अंजुमन मजलूमिया के नौहेख्वा अनम हसन ने अपने दर्द भरे नौहे पढ़ कर माहौल गमगीन कर दिया। शब्बेदारी का संचालन गौहर अली जैदी व हैदर अली ने किया। आभार अध्यक्ष शजर हसन व महासचिव जुहैब हसन अफरोज ने आभार प्रकट किया। यह जानकारी अंजुमन के मीडिया प्रभारी तामीर हसन शीबू ने दी हैं।

संक्षिप्त खबरें

कार्यशाला का आयोजन

प्रखर वाराणसी। बी.एच.यू यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर ग्रामीण महिला कौशल प्रशिक्षण कार्यशाला और वैष्णवी महिला शक्ति सेवा ट्रस्ट व वैष्णवी आर्ट एंड कल्चर सोसाइटी द्वारा स्थापित 24 सितंबर से 25 सितंबर तक कार्यशीला का पहला चरण आज आयोजित हुआ आदर्श हायर सेकेंडरी स्कूल कक्कमट्टा ,वाराणसीमें दोपहर 3 बजे से कौशल प्रशिक्षण - पर्यावरण के अनुकूल दीया और मूर्ति निर्माण पूरे जोश के साथमहिलाए भाग ली जिसमे मुख्य रूप उपस्थित हुए मन्नू राम, प्रज्ञा द्विवेदी. प्रोफ. निधि शर्मा, रीना जायसवाल, परवीन बानो , सुषमा, श. ऊ वर्मा, देवानंद जायसवाल उपास्थि रहें।

विवादित भूमि से बिना अनुमति काट ले गए शीशम का पेड़

प्रखर खेतासराय, जौनपुर। शाहगंज कोतवाली क्षेत्र के सिधाईं गांव में विवादित जमीन पर लगा शीशम का विशाल वृक्ष मनबढ़ युवक काट ले गए। ग्रामीणों ने प्रधान पति की मिलीभगत का आरोप लगाया। उक्त गांव में एक विवादित जमीन का मामला न्यायालय में विचाराधीन है। जो ग्राम सभा बनाम राम आसरे है जिसपर स्थगन आदेश भी जारी है। उक्त भूमि पर काफी पुराना शीशम का विशाल वृक्ष जिसे बिना वन विभाग की अनुमति के लोग काट ले गए। ग्रामीणों की माने तो अवैध रूप से हुई पेड़ की कटान में प्रधान पति लक्ष्मण बिंद का समर्थन रहा। राम आसरे ने मामले की तहरीर वन विभाग के अधिकारियों समेत उच्चाधिकारियों को देकर न्याय की गुहार लगायी है।

सड़क दुर्घटना में वृद्ध महिला घायल

प्रखर खानपुर गाजीपुर। थानाक्षेत्र के मठकौड़िया निवासी वृद्धा अमराजी देवी (65) को तेज रफ्तार बाइक सवार ने धक्का मार कर घायल कर दिया।अमराजी देवी भुजहुआ बाजार से सामान खरीदकर अपने घर जाने के लिए सड़क पार कर रहीं थी। उसी समय वाराणसी जिले के कोनिया निवासी अच्छेलाल विश्वकर्मा पुत्र हंसराज विश्वकर्मा बिहारीगंज की ओर से आजमगढ़ जाते हुए उन्हें धक्का मार दिया।वही घायल महिला के दोनों पैर और कमर सहित कई जगह चोट लग गयी।जिससे वह बुरी तरह घायल हों गयीं।वही बाइक सवार को बाजारवासी जब तक पकड़कर पुलिस के हवाले करते की वह मौका देख बाइक लेकर फरार हो गया।वही राहगीरों की मदद से महिला कों ईलाज के लिए निजी चिकित्सालय लें जाया गया और घटना की जानकारी परिजनों कों दी गयीं।

नवरात्रि में नौ दिवसीय श्री राम कथा का आयोजन

प्रखर तमकुही, कुशीनगर।शारदीय नवरात्र के अवसर पर गांव पडरी विशुन दयाल में नौ दिवसीय श्री राम कथा का आयोजन किया गया है। उक्त आशय की जानकारी अरविंद सिंह व मुन्ना राय ने संयुक्त रूप से दी है। आयोजक मण्डल पदाधिकारी राजेश सिंह, रामप्रवेश सिंह,मुन्नी सिंह, रामजीत सिंह व राघवेंद्र सिंह ने बताया कि शाम के 7 बजे से 11 बजे रात्रि तक कथावाचिका सत्या मणि त्रिपाठी व कथावाचक पंकज त्रिपाठी के द्वारा श्रोताओं को श्रीराम कथा का रसपान कराया जायेगा। उन्होंने लोगों से समय से पहुचकर कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है।

चोलापुर के विभिन्न मंडलों और गांव में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी जयंती मनाया गया

प्रखर दानगंज वाराणसी। चोलापुर में प्रखर राष्ट्रवादी, उत्कृष्ट संगठनकर्ता एकात्म मानववाद और अंत्योदय के प्रणेता एवं हमारे पथ प्रदर्शक पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की जन्मजयंती मनाई गई भदवा सेक्टर में बीजेपी कार्यकर्ता और गांव के लोगों द्वारा जयंती मनाया गया भारत के य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात को रेडियो पर सुना गया। सेक्टर प्रभारी अरविंद सेठ. मंडल अध्यक्ष विनोद सिंह. कर्मा बूथ अध्यक्ष बबलू चौबे(गायक). मनोज पांडे. विवेक सिंह. रितेश सिंह मौजूद रहे।

अर्पण, तर्पण और समर्पण कृतज्ञता का पक्ष जिन्होंने जन्म दिया स्मरण तेरा तुझको अर्पण प्रणाम

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। श्राद्ध पक्ष में अमावस्या का बड़ा महत्व है हमारे पितरों और पूर्वजों ने हमारे कल्याण के लिए कठोर परिश्रम किया हमारे सपनों व सुख-सुविधाओं को पूरा करने में अपना जीवन बिता दिया ` 'सर्वपितृ अमावस्या' पर हम अपने पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि हमारे पितरों को शांति प्राप्त हो और परिवार में दाताओं, वेदों और संतानों की वृद्धि हो, हमारे राष्ट्र में सदैव खुशियों की बरसात हो और सबके ऊपर आशीर्वाद बना रहे।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट
https://prakharpurvanchal.com
Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं